'हंस-पुस्तक' के अंतर्गत तीसरी किताब

अलैक्ज़ैण्डर कुप्रिन की अमर कृति

"YAMA : THE PIT" का हिन्दी रूपान्तर

गाड़ीवालों का कटरा

भाग पहला

अनुवादक : चंद्रभाल जौहरी

—संपादक—

श्रीपतराय



बनारस

सरस्वती प्रेस

प्रथम संस्करण
२०००
अक्तूबर, १९४०

मूल्य—आठ आना

सरस्वती-प्रेस, बनारस कैण्ट में श्रीपतराय द्वारा मुद्रित

प्रकाशकीय

मैक्सिम गोर्की की अमर कृति 'मा' को हिन्दी-पाठकों को भेंट करते हुए हमने लिखा था कि 'हंस-पुस्तकों' का प्रारम्भ एक निश्चित ध्येय को लेकर किया गया है। हमारी 'हंस-परिवार', 'हंस-पुस्तकें' तथा अन्य योजनाओं का एक मात्र उद्देश्य यही रहा है कि हिन्दी पाठकों को कुछ ऐसा साहित्य मिले जो उनके हृदय में एक नवीन भावना और उनके मस्तिष्क में नव-चेतनता भरे ताकि वे जन-जागरण और चतुर्मुखी विश्व क्रान्ति के इस युग में ठीक तरह से भाग ले सकें और समाज के नव-सृजन में सहयोग दे सकें। हम अपने इस ध्येय पर अटल हैं।

जिन मनीषियों और उद्भट विचारकों ने रूसी साहित्य को ही नहीं अनुप्राणित किया वरन् संसार को क्रान्ति तथा मानवता का ओजस्वी व सजीव सन्देश देकर मरणोन्मुख पीड़ितों व शोषितो को जीवनोन्मुख बनाया है, उनमें टॉल्सटॉय, गोर्की, चेखोव तथा कुप्रिन विश्व-विख्यात हैं। इनमें से हरएक की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, लेकिन कुप्रिन अपने भयानक और मर्मस्पर्शी चित्रों द्वारा हृदय को बेधने तथा सुप्त मस्तिष्क को कठोर सत्य के हथौड़े की चोटों से जाग्रत करने में बेजोड़ है। उसी की अमर कृति 'यामा' का यह हिन्दी अनुवाद है—'गाड़ीवालों का कटरा'

'यामा' का अनुवाद संसार की प्रायः सभी भाषाओं में हो चुका है। अब तक इसकी सवा लाख से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। और बिके भी क्यों नहीं? नारी-निर्यातन तथा नारी के जीवन-सर्वस्व, उसकी सबसे बहुमूल्य निधि—सतीत्व तथा प्रेम—का कैसे अपहरण होता है और उसका कैसे शोषण होता है इन सब का मर्मस्पर्शी चित्र कुप्रिन ने खींचा है। वेश्या-जीवन की करुण गाथा को कई लेखकों ने चित्रित करने का प्रयत्न किया है, लेकिन उनमें केवल छाया मात्र है। कुप्रिन ने जो चित्र खींचा है वह इतना सजीव, भयानक तथा हृदयद्रावक है कि, हम एकाएक कह उठते हैं—"ओह, यह हमने आज जाना कि वेश्या-जीवन के अभिशाप से हमारा समाज इस तरह अभिभूत है!"

हर्ष है कि हमें ही सर्वप्रथम 'यामा' को अनूदित रूप में 'गाड़ीवालों का कटरा' नाम देकर हिन्दी-पाठकों को अर्पण करने का सौभाग्य मिला है। इसको हम तीन भागों में प्रकाशित कर रहे हैं। प्रत्येक भाग का दाम आठ आना रखा गया है। अंगरेज़ी में 'यामा' के दाम ५ शिलिंग यानी करीब चार रुपये हैं। गुजराती में भी इस पुस्तक का अभी अनुवाद हुआ है, लेकिन डेढ़ रुपये में ६०० पृष्ठों के तीन खण्डों को कौन दे सकता है! आप लोगों को ज्ञात होगा कि कागज, स्याही आदि के दाम चौगुने-पंचगुने बढ़ गये हैं, लेकिन हम अपने ध्येय—Mission—पर अटल हैं। हम चाहते हैं कि इस क्रान्तिकारी साहित्य का घर-घर प्रचार हो और इसीलिए हम यह भारी घाटा उठा रहे हैं।

एक और निवेदन है। हम आपका ध्यान अपनी 'हंस-परिवार' योजना की ओर खींचना चाहते हैं। केवल पच्चीस रुपये में हम सौ रुपये मूल्य का स्थायी साहित्य भेंट कर रहे हैं। विश्वास करें, हमें इस योजना में ज़रा भी फायदा नहीं है लेकिन हम चाहते हैं कि हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में हमारे आदर्श की पूर्ति हो। हम अपने ध्येय में सफल होंगे या नहीं, यह आपके ऊपर निर्भर है। यदि कुछ और जानकारी चाहें तो इसके लिए सरस्वती प्रेस, बनारस कैन्ट को एक कार्ड लिखें।

प्रकाशक

समर्पण

उन बन्धुओं को

जो स्वतंत्रता की लड़ाई में पड़कर अपनी काम-वासनाओं को स्वतंत्र कर बैठे हैं;

जो अपने मनमें अपने आपको शायद क्रान्तिकारी समझते हैं परन्तु वे वास्तव मे पुराने घाघपन्थी और लोलुप हैं;

जो 'क्रान्ति क्रान्ति' कह कहकर हमारे कान खाये लेते हैं परन्तु स्वयं स्त्रियों के प्रति अपनी मनोवृत्ति में वैसे ही दक़ियानूस हैं;

जो जायदाद के विरोधी तो हैं परन्तु स्त्रियों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वह उनके इस्तेमाल को फर्नीचर हो;

जो अपने आपको वीर और उदार मानते हैं, परन्तु एक ग़रीब बहिन की बेबसी का फ़ायदा उठाकर कुछ पैसे देकर, उसका सर्वस्व हरने में नहीं झिझकते;

जो उस बौहरे को तो नीच समझते और उसके विरोध में कानून बनाते हैं जो एक ग़रीब किसान को कुछ रुपया देकर सूद में उसका खेत, खलियान या बैल ले लेने का प्रयत्न करता है, परन्तु

जो उस गन्दे व्यापार के विरुद्ध कोई कानून नहीं बनाते जिसमें कुछ रुपये देकर माताओं का मातृत्व, बहिनों का बहिनपन और पत्नियों का सतीत्व ले लिया जाता है; बल्कि,

जो अपने आपको देश-भक्त और क्रान्तिकारी मानते हुए भी स्वयं इस पाप में भाग लेते हैं ;

जो स्त्रियों को देखते ही आँख, मुँह और मनोवृत्ति उस चमार की-सी बनाने लगते हैं जो गाय के चमड़े का ग्राहक होता है, दूध का नहीं ;

जो अपनी हँसी-मज़ाक, व्यवहार और हर बात से उस मातृत्व का दिन रात अपमान करते हैं जिसको भगवान ने स्त्री का सुन्दर रूप दिया है ;

जो भगवान के उस रहस्यपूर्ण सौन्दर्य का, जिसका नाम स्त्रीत्व है, भेद न समझने से उसे तोड़-मरोड़कर और नष्ट करके उसी तरह देखने का प्रयत्न करते हैं जिस तरह अबोध नन्हे बच्चे खिलौनों को तोड़-फोड़कर उनका रहस्य जानने का प्रयत्न करते हैं ;

जो शायद अभी तक अपने पाप को पूरी तरह नहीं समझते ;

जो अपने आपको समाज का स्तम्भ, शिक्षित और सभ्य समझते हैं ;

जो समाज में उथल-पुथल मचाकर मानव समाज की गन्दगियाँ दूर करना चाहते हैं ;

अलैक्जैण्डर क्यूप्रिन की महाकृति का यह हिन्दी स्वरूप समर्पित है।

इस आशा से कि इस उपन्यास के सच्चे और हृदयविदारक चित्र देखकर वेश्यावृत्ति का वास्तविक चित्र उनके और हमारे सभी के हृदय में अङ्कित हो जाए जिससे वह और हम सब मिलकर इस घोर सामाजिक रोग को अपनी पवित्र मातृभूमि से शीघ्र से शीघ्र नेस्तोनाबूद करदें।

मूल लेखक की प्रस्तावना

इस उपन्यास की रूसी, फ्रान्सीसी, जरमन, स्पेनिशि, इटालियन, जापानी, स्वीडिश, फिनिश, नारवीजियन, बोहीमियन, हन्गारियन, अंगरेजी पोलिश, लिथूआनियन और दुनियाँ की लगभग सभी दूसरी भाषाओं में बीस लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

इस पुस्तक की इतनी अधिक सफलता का कारण यह नहीं कहा जा सकता कि लोगों को केवल वेश्याओं का जीवन जानने का अस्वस्थ शौक है। मुझे विश्वास है इस उपन्यास को पढ़कर बहुत से आदमियों ने वेश्यावृत्ति की समस्या पर सहानुभूतिपूर्ण विचार किया है और करेंगे।

परन्तु लेखक को अपने इस उपन्यास पर कभी सन्तोष नहीं हुआ।

सचमुच मनुष्य समाज के सामने बहुत-सी ऐसी कठिन, भयङ्कर और असाध्य दीखनेवाली समस्याएँ हज़ारों वर्षों से हैं, जिनके बोझ से उसकी कमर झुककर टूट रही है, जिनके कारण वह कभी-कभी तो झुककर पशु समाज की तरह नीच दीखने लगता है। युद्ध, वेश्यावृत्ति, फाँसी, अधपेट मज़दूरी के लिए तनतोड़ मेहनत, थोड़े से खाते-पीते लोगों का अधिकतर भुखमरे लोगों पर अधिकार इत्यादि मनुष्य समाज की ऐसी ही भयङ्कर समस्याएँ हैं।

परन्तु इन सब में स्त्री के शरीर का व्यापार, स्त्री के उस प्रेम का व्यापार जो कि भगवान की मनुष्य जाति को सबसे उच्चतम देन है, मुझे सबसे बुरा लगता है। मुझे लगता है कि मनुष्य समाज की इस पुरानी बीमारी का इलाज भी आसानी से किया जा सकता है। मैं सोचता हूँ मनुष्य से कहने की ज़रूरत है कि,

'देखो भाई, तुम्हारे घर में भी एक सफ़ेद बालों की बूढ़ी दादी है जिससे तुमने बचपन में पहिले-पहिल लोरियाँ और कहानियाँ सुनी थीं, और जो अब तुम्हारे घर की छत्र और अभिमान हैं। तुम्हारे घर में भी एक मा है जिसके स्तनों का मीठा-मीठा दूध तुम बचपन में लोभ और आनन्द से अपना सिर उसकी छाती में घुसेड़कर पिया करते थे। तुम्हारे घर में भी एक पत्नी है जो तुम्हारे बच्चों की जननी और तुम्हारे कुल की गृहिणी है। तुम्हारे घर में भी एक छोटी-सी बहिन है जिसका मधुर स्वर कोयल के सङ्गीत की तरह तुम्हारे कानों में गूजता है। इस बात के विचारमात्र से ही कि तुम्हारी प्यारी छोटी बहिन के सामने कोई बुरे शब्द मुँह से निकाले या बुरे हावभाव करे, तुम्हारी आँखों में खून उतर आता है और तुम्हारे जबड़े काँप उठते हैं और कोई ऐसी हरकत आपकी लाड़ली बेटी के सामने करने की कहीं हिम्मत करे तो फिर कहना ही क्या !

'परन्तु फिर भी आप बाज़ार में बैठनेवाली स्त्रियों के पास अपने रुपये ठनकाते हुए उनका प्रेम खरीदने के लिए जाने की हिम्मत करते हैं—उस प्रेम को खरीदने के लिए जिसका परिणाम और एकमात्र उद्देश नवजीवन का संचार है जो कि भगवान की सबसे रहस्यपूर्ण लीला है।

'आप कहेंगे कि आप तो बाज़ार में बैठनेवाली ऐसी स्त्रियों के पास जाते हैं जो पतित हैं, परन्तु आपने कभी यह भी सोचने का कष्ट किया है कि वे क्यों पतित हैं ? क्या यह सच नहीं है कि जिन स्त्रियों को आप पतित कहते हैं यदि उनको बचपन और जवानी में अच्छा लालन-पालन, स्नेह का बर्ताव और उचित शिक्षा मिली होती तो वे भी आज आपके घर में बैठनेवाली माँ, आपकी स्नेहमयी बहिन और आपकी लाड़ली पुत्री की तरह ही ऊँची और पवित्र होतीं ?

'अथवा आप यह सोचते होंगे कि मेरा घर और बात है और दूसरे का घर और बात। दूसरे के घर से आपको क्या मतलब ? अगर आप ऐसा सोचते हैं तो क्या आपने कभी यह भी सोचने का कष्ट किया

है कि आप में और हिंसक पशु में ऐसी अवस्था में क्या फ़र्क रह जाता है? आप यह क्यों भूल जाते हैं कि आप एक समाज में रहते हैं जिसका क़ायम रहना आपके हिंसक विचारों पर असम्भव है! और आप यह कैसे भूलते हैं कि आप अपने आपको शिक्षित, शिष्ट और धार्मिक भी कहते हैं?

'यह भी याद रखिये कि जिस समय आप अपनी पशुवृत्ति को पूरा करके वेश्या के घर से चलने लगते हैं उस समय आपके मन में आत्मग्लानि होती है और आप उस वेश्या से जिसे आप अधम समझते हैं, कहीं अधम होते हैं, क्योंकि आप जीवन में ग़रीबी और अमीरी के अभागे फ़र्क का फ़ायदा उठाकर एक स्त्री का सर्वस्व उसी तरह लूटते हैं जिस तरह कोई अन्धे को लूटता है, अथवा किसी अपाहिज के मुँह पर थप्पड़ मारता है अथवा किसी बालक को छलता है...'

मैंने, जो कुछ मैं जानता था और जो कुछ मैं लिख सकता था, वेश्यावृत्ति के विरुद्ध लिखा है। परन्तु मुझे कोई ऐसा अचूक नुसखा इस रोग के विरुद्ध नहीं मिला है जो मैं आपको बताऊँ। मैं तो सिर्फ़ इतना ही जानता हूँ कि वेश्यावृत्ति स्त्रियाँ खुशी से नहीं करतीं, मजबूरी से करती हैं। ग़रीबी, अज्ञान और प्रलोभन के कारण और रोटी कमाने का और कोई ज़रिया न होने से ही स्त्रियों को यह अधम पेशा करना पड़ता है; अस्तु इन कारणों का ज़िक्र करना और इस अधम व्यवसाय और जीवन का हाल लिखना मैंने व्यर्थ नहीं समझा। मैं समझता हूँ सच्ची बातों और सच्चे दृश्यों का चाहे वह कितने ही भयङ्कर क्यों न हों, मनुष्य पर सच्चा ही असर होता है।

एक बार मैं सैण्टपीटर्सबर्ग से क्रीमिया को जा रहा था। रास्ते में, रेलगाड़ी में कुछ नौजवान इन्जीनियरों ने मुझे पहिचान लिया और मुझसे कुछ वार्तालाप करने की इजाज़त चाही। बातचीत में वे कहने लगे:

'देखिये, आप वेश्यावृत्ति का विरोध तो करते हैं, परन्तु जवानी

में आदमी को कामदेव मतवाला करता है। उस समय की काम-वासना की तृप्ति के लिए आप कौन-मार्ग दिखाते हैं ?'

मैं जो मार्ग जानता था उन्हें दिखाने लगा :

'चौकी या कठोर चारपाई पर सोइये। खुरखुरी चादर बिछाइये, गुदगुदी या चिकनी नहीं। इतने कपड़े न ओढ़िये कि शरीर अधिक गरम हो जाय। सोने का कमरा खुला, हवादार और ठण्ढा होना चाहिये। नींद गहरी लेनी चाहिये, परन्तु अधिक देर तक नहीं। सुबह को जल्द उठना चाहिये, ठण्ढे पानी मे स्नान करना चाहिये। खाना सादा और कम मसाले का हो। हो सके तो बिना मसाले का खाना चाहिये। अच्छा साहित्य, ओजस्वी और वीरतापूर्ण पढ़ना चाहिये। खूब परिश्रम करना चाहिये और खुली हवा में खेलना चाहिये। लड़के और लड़कियों की सहपाठशालायें होनी चाहिये जिनमें उन्हें साथ साथ पढ़ना चाहिये। पचीस वर्ष की उम्र के लगभग विवाह हो जाना चाहिये।'

नौजवानों ने उत्तर में मुझसे कहा :

'यह सब तो हम भी जानते हैं, परन्तु इन उपायों से मुख्य समस्या तो हल नहीं होती। कामवासना की तृप्ति के लिए आप कौन-सा मार्ग बताते हैं ?'

इस पर मुझे क्रोध आ गया और मैंने भी उन्हें वही कठोर उत्तर दिया जो कि एक बार टॉल्सटॉय ने दिया था।

एक बार रूसी पढ़े-लिखे आदमियों की एक बड़ी सभा में टॉल्सटॉय अपने समय की रूसी सरकार की कड़ी आलोचना कर रहा था। एक नौजवान ने उठकर उससे प्रश्न किया :

'अच्छा टॉल्स्टॉय, मान लो कि जैसा तुम कहते हो यह सरकार बिलकुल वैसी ही निकम्मी है और यह नष्ट कर डालने के योग्य है, परन्तु इसको नष्ट करने के बाद इसके स्थान पर तुम हमें क्या दोगे ?'

टॉल्सटॉय ने जलकर कहा :

'मान लो कि आपको, भगवान न करे ऐसा हो, आतशक हो जाती है। आप आकर मुझसे कहते हैं कि मुझे यह बुरी बीमारी हो गई है और मैं आपसे फौरन डाक्टर से जाकर इलाज कराने को कहता हूँ। इस पर आप मुझसे पूछते हैं, 'पर यह तो बताइये कि डाक्टर के यहां जाकर मैं इस बीमारी से तो मुक्त हो जाऊँगा, परन्तु आतशक के स्थान में फिर आप मुझे देंगे क्या ?' मैं मानता हूँ भाई साहब, आपके ऐसे प्रश्न का उत्तर देना मुझे कठिन हो जायगा...'

यही हाल मेरा भी है। मैंने, जैसा सच्चा वर्णन वेश्यावृत्ति का मैं कर सकता था, करने का प्रयत्न किया है। परन्तु मेरी कृति को पूर्ण स्वरूप में निकलने का अवकाश नहीं मिला। पुरानी रूसी सरकार के दकियानूस और छिपाने-लुकाने में विश्वास रखनेवाले अधिकारियों ने मेरी पुस्तक को छपने से पहिले ही इतना काटा-छाँटा कि उसकी शक्ल ही बिलकुल बदल गई। उसी प्रकार सामाजिक बीमारियों को छिपा रखने में विश्वास रखनेवाली रूसी प्रजा पर भी मेरी यह पुस्तक एक बमगोले की तरह गिरी। हज़ारों गालियां से भरे गुमनाम खत मुझे मेरे रूसी भाइयों ने भेजे जिनका अधिकतर आशय यह होता था कि मैंने इस उपन्यास को लिखकर समाज की नींव हिलाने का और घासलेटी साहित्य से नौजवानों की बुद्धि भ्रष्ट करने का प्रयास किया है। बहुत-से आदमियों ने मेरे इस सच्चे प्रयास को समझने का कोई प्रयत्न नहीं किया। सबसे पहिले इस उपन्यास के सम्बन्ध में स्नेहपूर्ण और मुझे उत्साहित करनेवाले पत्र मेरे पास काफ़ी उम्र की समझदार और दुनियादार स्त्रियों के और ऐसे ईमानदार नौजवानों और युवतियों के आये जो अपनी अति-कामवासना पर सचमुच भयभीत और चकित होते थे। कुछ पत्र बाज़ारू वेश्याओं के भी मेरे पास आये जिनकी भाषा तो ग़लत-सलत ज़रूर थी मगर भाव बड़े ऊँचे और गहरे थे। ये पत्र मेरी निधि हैं जिनको सँभालकर मैंने अपने पास रख लिया है। और सबसे विचित्र बात यह हुई कि अपने इस उपन्यास

के सम्बन्ध में मुझे सन्तोष तब मिला जब मैं पेरिस में प्रवासी था और फ्रान्सीसी भाषा में इस उपन्यास का पहिले-पहिल अनुवाद निकला। फ्रान्सीसी अखबारों और प्रजा ने मेरे इस दुखी उपन्यास का बड़ा अच्छा स्वागत किया और इसे अपनाया। आलोचकों ने इस उपन्यास की आलोचनाओं में, फ्रान्सीसी आलोचना के बारीक ढङ्ग पर, इस उपन्यास की त्रुटियाँ भी बतलाईं, परन्तु सबने एक स्वर से यह माना कि इस उपन्यास में कई भोंडी और विचित्र बातें होते हुए भी यह ग्रन्थ पूर्ण रूप से नैतिक है और पाठकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है क्योंकि इसमें मनुष्य-समाज के लिए समवेदना है।

पहिली बार अपने उपन्यास के बारे में ऐसी सम्मति पेरिस में सुनकर मैंने सन्तोष से साँस ली थी और अब मुझे इस बात पर खुशी हो रही है कि आखिरकार मुझे अपने इस उपन्यास 'यामा' को पूर्ण-रूप में प्रकाशित होते देखने का मौक़ा मिल रहा है जो कि आज तक मेरे देश के अधिकारियों की कृपा से कभी अपने पूर्णरूप में प्रकाशित न हो पाया।...मुझे इस बात पर भी बड़ा ही सन्तोष हो रहा है कि इसका अनुवाद एक ऐसे अनुवादक के हाथ से निकल रहा है जो सहानुभूतिपूर्ण और इस काम के सर्वथा योग्य हैं और जिनके इस उपन्यास के सफल अनुवाद पर मुझे पूर्ण विश्वास है।

अलैक्जैण्डर क्यूप्रिन

प्रस्तावना

अलेक्ज़ैण्डर क्यूप्रिन के जगत-प्रख्यात रूसी उपन्यास 'यामा' का, जिसकी रूसी, फ्रान्सीसी, जरमन, स्पेनिश, इटालियन, जापानी, स्वीडिश, फिनिश, नारवीजियन, बोहीमियन, हन्गारियन, अंगरेजी, पोलिश, लिथूआ-नियन और दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में बीस लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं, हिन्दी संस्करण पाठकों की सेवा में उपस्थित है। इस उपन्यास का अमर मूल लेखक अपनी प्रस्तावना में लिखता है कि, 'मनुष्य समाज के सामने बहुत-सी ऐसी कठिन, भयङ्कर और असाध्य दीखने वाली समस्याएँ हज़ारों वर्षों से हैं जिनके बोझ से उसकी कमर झुककर टूट रही है और जिनके कारण वह कभी-कभी तो इतना झुक-जाता है कि बिल्कुल पशु समाज की तरह नीचा दीखने लगता है। युद्ध, वेश्यावृत्ति, फाँसी, अधपेट मज़दूरी के लिए तनतोड़ मेहनत, थोड़े से खाते पीते लोगों का अधिकतर भुख मरे लोगों पर अधिकार इत्यादि मनुष्य समाज की ऐसी ही भयङ्कर समस्याएँ हैं।' इन समस्याओं में दो समस्याएँ मनुष्य की दो मुख्य और मूल समस्याएँ लगती हैं जिनके उचित समाधान पर हमारा सबका बहुत कुछ सुख-दुख निर्भर है। एक तो रोटी की समस्या जिसको हल करने के लिए आज अधिकतर मनुष्यों को अधपेट मज़दूरी के लिए तनतोड़ मेहनत करनी होती है और जो थोड़े से खाते-पीते लोगों का अधिकतर भुखमरे लोगों पर अधिकार हो जाने से इतनी भयङ्कर बन गई है कि मनुष्य समाज में चारों तरफ़ कलह ही कलह दीखता है जिसमें 'युद्ध' और 'फाँसियों' की भी नौबत आती है। दूसरी समस्या कामदेव की है जिसके बारे में कहा जाता है कि पूर्णरूप से भस्मीभूत उसको केवल एक शंकर भगवान ही कर सके हैं जो ताण्डव नृत्य करके अन्त में सृष्टि का सँहार करते हैं।

'हंस पुस्तक माला' में पहिली पुस्तक मैक्सिम गोर्की की महाकृति 'मा'

उपन्यास का मेरा किया हुआ हिन्दी स्वरूप आपके सामने रक्खा गया था जो कि 'रोटी की समस्या', 'अधपेट मजदूरी के लिए तनतोड़ मेहनत' और थोड़े से खाते-पीतों के अधिकतर भुखमरों पर अधिकार और उससे मुक्त होने के प्रयत्नों का एक अद्वितीय चित्र था। उसी 'हंस माला' की तीसरी सँख्या में आपके सामने एक दूसरे रूसी महाकलाकार अलैक्जैण्डर क्यूप्रिन के उपन्यास 'यामा' का हिन्दी स्वरूप जिसमें कि मनुष्य समाज की दूसरी समस्या कामदेव और रोटी की समस्या से उत्पन्न होने-वाले मानव-जाति के एक अत्यन्त अधम और प्राचीन रोग—वेश्यावृत्ति—के अद्वितीय और हृदय-विदारक चित्र हैं, आपके सामने रक्खा जाता है।

उपन्यास के मूल लेखक का विचार है कि वेश्यावृत्ति शरीर बेचने-वाली अभागी स्त्रियों के लिए रोटी की समस्या है और उन अभागिनियों का शरीर खरीदनेवालों के लिए उनकी अति-काम-वासना अर्थात् काम-देव की समस्या है। एक भूख से दुःखी मनुष्य आपके नन्हें बालक को सड़क पर सोने के कड़े पहिने जाता देखता है। वह कई दिन का भूखा है। दोपहर का समय है। सड़क पर आपका बचा अकेला ही जा रहा है। उस भूखे आदमी के सिवाय सड़क पर दूसरा कोई नहीं है। उसे लालच होता है और वह बालक के हाथ से सोने के कड़े उतारने लगता है। बालक चिल्लाकर किसी को बुला न ले इस डर से वह उसके मुँह में कपड़ा ठूँस देता है जिससे बालक मरकर गिर पड़ता है और वह आदमी कड़े लेकर भाग जाता है। पकड़े जाने पर ऐसे आदमी को हमारा समाज फाँसी देता है क्योंकि अपने पेट की आग बुझाने के लिए भी समाज किसी को किसी के बालक के कड़े छीन लेने अथवा उसे मार डालने का अधिकार नहीं मानता। ऐसा अधिकार सबका मान लिया जाय तो समाज का क़ायम रहना ही असम्भव हो जायगा; तो फिर क्या किसी को अपनी अति काम-वासना की भूख बुझाने के लिए किसी बच्ची को पैसे देकर अथवा ऐसे-वैसे मार्ग पर डाल देने का अधिकार है जो उसका जीवन सदा के लिए गन्दा और नारकीय बना दे—ऐसा जीवन

जिससे मृत्यु कहीं अधिक अच्छी हो? लेखक आपको इस अद्वितीय उपन्यास में दिखाता है कि जो आज समाज में अधम और नीच समझी जानेवाली वेश्यायें हैं, वे वेश्यायें कैसे बनती हैं, कौन उन्हें वेश्या बनाता है? कौन उन्हें यह नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर करता है?

हमारे समाज के वे भद्र समझे और कहे जानेवाले पुरुष ही जो अपनी अति काम-वासना को तृप्त करने के लिए मासूम बच्चियों को कुमार्ग पर ले चलते हैं या धन की सहायता से अपनी कामना को तृप्त करना चाहते हैं, वास्तव में वेश्यावृत्ति के लिए जिम्मेदार हैं। निस्सन्देह समाज के उन भद्र पुरुषों की, जो रुपया देकर अपनी कामवासनाओं को तृप्त करने के लिए बाज़ार में प्रेम खरीदना चाहते हैं, माँगें पूरी करने के लिए ही समाज में वेश्यावृत्ति का धन्धा चलता है जो कि कपड़ा बेचने, आटा-दाल या मिठाई बेचने या घोड़े गायें, बकरियाँ बेचने की तरह ही एक धन्धा है। इस धन्धे की पेढ़ियाँ और दूकानें हैं जो चकले कहलाते हैं। चकलों के मालिक और मालकिनें दूसरे दूकानदारों की तरह बैठकर निस्सहाय, मूर्ख और छली हुई छोकरियों के शरीर दिन-दहाड़े हमारे सभ्य कहलानेवाले समाज में खरीदते और बेचते हैं। इस व्यापार के केन्द्र आमतौर पर बड़े शहर होते हैं जहाँ भोली-भाली, नई और पुरानी छोकरियों को भेड़-बकरियों की तरह ला-लाकर दलाल बेचते और अदलते-बदलते हैं और खूब रुपया कमाते हैं।

यह धन्धा बड़ा पुराना है और अभी तक केवल इसीलिए यह समाज में क़ायम है कि समाज के कुछ लोग अपनी अति-काम-वासना को पूरा करने के लिए इसे क़ायम रखना चाहते हैं। समाज की गन्दगी को बहाकर ले जाने के लिए कुछ मोरियों की ज़रूरत है। अतएव कुछ मानव शरीरों से, जिनको पाना दुर्लभ माना गया है, जबरदस्ती इन मोरियों का काम लिया जाता है। आप कहेंगे कि जबरदस्ती कहाँ है? आप धन देते हैं जिसके एवज में वेश्याएँ खुशी से आप को अपना प्रेम देती हैं! आप धन देते हैं यह सच ज़रूर है और आपके धन के लिए,

जिससे वे बेचारी अपना निर्वाह चलाती हैं, वेश्यायें आपको अपना शरीर देती हैं यह भी सच है, परन्तु वे खुशी से आपको अपना शरीर देती हैं या आपसे प्रेम करती हैं यह बिल्कुल ग़लत है। आपके धन में सच्चे प्रेम को खरीदने की शक्ति नहीं है। दिखावे के लिए, अपने ग्राहकों को खुश रखने के लिए जिससे उनका धन्धा चलता रहे वेश्याएँ प्रेम का बहाना करती हैं, परन्तु वास्तव में वे धन लेकर भी आप से घृणा ही करती हैं। यह सत्य आप नहीं जानते तो इस उपन्यास को पढ़कर जान जायँगे।

वेश्यावृत्ति का सबसे बुरा पहलू, जैसा कि मूल लेखक लिखता है, यह है कि हमारा सबका कुछ ऐसा विश्वास-सा हो गया है कि वेश्यावृत्ति हमेशा से संसार में रही है और रहेगी; अतएव हम इस भयङ्कर संस्था, इस अधम सामाजिक रोग की तरफ़ उतना ध्यान नहीं देते जितना हमें देना चाहिये। एक विद्वान और बड़े भारतीय आदमी की विदुषी और समझदार पत्नी से कुछ रोज हुए एक भारतीय विद्वान् और लेखक मिलने गये थे। बात ही बात में वेश्यावृत्ति की चर्चा चल पड़ी। विदुषी ने, जैसा हमारा सबका विचार है, कहा कि वेश्यावृत्ति समाज का एक ज़रूरी अङ्ग है जिसका समाज की रक्षा के लिए रहना ज़रूरी है। इस पर वे विद्वान् वहाँ से तुरन्त उठकर चल दिये क्योंकि एक भारतीय महिला के मुँह से उन्हें ऐसे शब्द सुनना गवारा नहीं हुए, परन्तु उस बेचारी ने ऐसी नई बात कौन-सी कही थी। हम और आप रोज़ यही कहते हैं। उसका ध्यान भी उसी तरह केवल अपने घर की रक्षा पर था जैसा कि हमारा आपका रहता है। यह ध्यान उन विदुषी को भी उसी तरह नहीं आया जैसा कि हमको आपको भी नहीं आता कि वह अपने घर की और समाज की रक्षा, मानव जाति के एक अङ्ग को सूली पर चढ़ाकर करना चाहती हैं। जिस प्रकार की दलीलें आज समाज में वेश्यावृत्ति को क़ायम रखने के लिए दी जाती हैं, उसी प्रकार की दलीलें किसी ज़माने में गुलामी की प्रथा क़ायम रखने के लिए, बुर्दाफरोशी के हक़ में, और सती की प्रथा क़ायम रखने के लिए भी दी जाती थीं। मैं तो एक

बार काशी में अखिल भारतीय सनातनधर्म सम्मेलन के मंच से, कई वर्ष हुए, एक विद्वान शास्त्री के मुख से यह सुनकर दङ्ग रह गया था कि शास्त्रों के अनुसार अछूतों का रहना भी समाज के लिए ज़रूरी है। उन्होंने यह भी कहा था कि इन अछूतों को बस्ती से बाहर रहना चाहिये और उनके कपड़ों पर मल लगा रहना चाहिये। भगवान् की दया से, गान्धीजी के प्रयत्नों से हम लोग अब बहुत कुछ अछूतों को अछूत बनाये रखने के विरुद्ध हो गये हैं। इसी प्रकार वेश्यावृत्ति के सम्बन्ध में भी समाज की मनोवृत्ति बदली जा सकती है। ज़रूरत केवल इस बात की है कि हम यह अच्छी तरह समझ लें कि वेश्यावृत्ति का यह पुराना सामाजिक रोग भी उतना ही भयङ्कर है जितना कि गुलामी की प्रथा और बुर्दाफरोशी थी, या अछूत समस्या है। सच तो यह है कि यह सामाजिक बीमारी उनसे भी कहीं अधिक क्रूर और अधमतर है। यही बात अलेकज़ैण्डर क्यूप्रिन ने अपना यह अद्वितीय उपन्यास लिखकर समझाने का प्रयत्न किया है। जिनका दिल और दिमाग़ बिल्कुल ही सड़ और गल नहीं गया है उनकी समझ में यह बात क्यूप्रिन के इस अद्वितीय उपन्यास के हृदय विदारक और सच्चे चित्र देखकर—हम समझते हैं—आसानी से आ जायगी।

क्यूप्रिन ने अपने इस उपन्यास में वेश्यावृत्ति के सम्बन्ध में जो कुछ भी लिखा है वह भारतवर्ष के लिए भी वैसा ही सत्य है जैसा कि रूस अथवा किसी और देश के लिए! रूसी नाम और रूसी ज़मीन इस उपन्यास में से हटाकर भारतीय नाम और भारतीय ज़मीन रख दी जाय तो यह उपन्यास बिल्कुल एक भारतीय उपन्यास हो सकता है। हाँ, मुझे एक स्थान पर शक अवश्य हुआ था—जहाँ पर क्यूप्रिन एक वेश्या के मुख से यह कहलवाता है कि पिता अपनी पुत्रियों और भाई अपनी बहिनों तक को काम-वासना से पागल होकर खराब करते हैं। मैं सोचने लगा कि, 'मुमकिन है यूरोप में ऐसा होता हो, परन्तु हमारे धर्म-प्रधान भारतवर्ष में ऐसा होना असम्भव है!' लेकिन फिर खोज करने पर शीघ्र ही

धर्म प्रधान भारतवर्ष का कच्चा चिट्ठा जानकर मैं दङ्ग रह गया। पता चला कि मेरे ही शहर के अनाथालय में कई स्त्रियाँ ऐसी थीं जिनके पिता और भाई उन्हें खराब करके, गर्भ रह जाने पर, छोड़ गये थे! अतएव में समझता हूँ कि क्यूप्रिन ने जो कुछ भी इस उपन्यास में लिखा वह एक सार्वभौम सामाजिक रोग का प्रामाणिक और सच्चा चित्र है जिसे देखकर हमारा हृदय द्रवित हो उठता है।

एक बात जानकर बड़ी खुशी और अभिमान भी हुआ। क्यूप्रिन जैसा एक विदेशी विद्वान भी अति काम-वासना के इलाज के लिए वही उपाय बता सका जो कि हमारे देश के विद्वानों ने ब्रह्मचर्य-व्रत पालन के लिए बताये हैं। पाश्चात्य यान्त्रिक-सभ्यता हर समस्या का हल यान्त्रिक ढङ्ग पर करने का प्रयत्न करती है; परन्तु क्यूप्रिन ने जो कि एक रूसी लेखक था और जिसने शायद 'यामा' लिखने के पहिले न जाने कितने दिनों तक स्वयं चकलों की खाक छानी होगी, अति काम-वासना का इलाज कोई कृत्रिम या यान्त्रिक ढङ्ग का नहीं बताया। उसने कहा कि इसका इलाज यही है कि, 'कठोर बिस्तर पर हवादार स्थान में सोओ, प्रातःकाल उठो, शीतल जल से स्नान करो, सादा भोजन खाओ, अच्छे विचार रक्खो और खूब परिश्रम करो इत्यादि' जो कि हमारे यहाँ ब्रह्मचर्य-पूर्ण जीवन बिताने के लिए ज़रूरी बताये गये हैं।

अति काम-वासना की तृप्ति के लिए क्यूप्रिन कोई मार्ग नहीं बताता। वह तो इसे अति भोजन की तरह एक बुरी आदत ही समझता है जिसका इलाज इसके सिवा और कुछ नहीं कि जिनकी आदत बिगड़ गई है वह उसे सँभालें और ठीक करें। उसका इलाज यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि मनुष्य समाज के एक अङ्ग को कुछ लोगों की इस बुरी आदत को सन्तुष्ट करने के लिए एक घोर नर्क में रक्खा जाय। ऐसा करना महा अन्याय है। यही क्यूप्रिन अपने इस उपन्यास में दिखाने का प्रयत्न करता है। और यह अन्याय किसके साथ? अबोध बच्चियों के साथ—जो कि आम तौर पर, जैसा कि आप इस उपन्यास में देखेंगे, वेश्याएँ

बनाई जाती है ! अन्याय किसके साथ ! उस स्त्रीत्व के साथ जिसका सृष्टि में महान उद्देश मातृत्व है ! क्या हम सचमुच सभ्य और शिष्ट हैं ! अलैकज़ैण्डर क्यूप्रिन अपने इस उपन्यास के द्वारा हमारे सामने यह प्रश्न रखता है। पाठक वृन्द इस उपन्यास को पढ़िये, सोचिये और उत्तर दीजिये।

अलैक्जैण्डर क्यूप्रिन का यह उपन्यास सचमुच एक अद्वितीय पुस्तक है क्योंकि इस विषय पर आज तक ऐसी महान् पुस्तक दुनियाँ में दूसरी कोई नहीं निकली। क्यूप्रिन की कला का तो कहना ही क्या ! उसका मुक़ाबला कुछ लोग रूस के दूसरे संसार प्रसिद्ध कहानी लेखक चेखोव से करते हैं जो कि शायद दुनियाँ का सबसे अच्छा कहानी लेखक था। खैर, क्यूप्रिन चेखोव के बराबरी का हो या कम, परन्तु इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है कि वह एक दिग्गज कलाकार है जिसके चित्र गोर्की के तरह ही सादे, सच्चे, हृदय को मसोस डालनेवाले और भयङ्कर हैं। ऐसे चित्र शायद रूसी कलाकार ही खींच सकते हैं और ऐसा उपन्यास लिखना भी एक रूसी कलाकार का ही काम था। मेरा तो मत है कि जिसकी आत्मा इस उपन्यास को पढ़कर काँप नहीं उठती उसको परमात्मा से आत्मा मिली ही नहीं—वह बिना आत्मा का मनुष्य है। वह इस मशीन युग की कृति भले ही हो उस परमात्मा की कृति नहीं है जिसकी हर कृति में उसका थोड़ा-बहुत अंश अवश्य रहता है।

मैंने 'मा' के अनुवाद की प्रस्तावना में कहा था कि इस अनुवाद में जितना मेरा समय गया और उससे जो आर्थिक हानि हुई उससे अब मेरा हृदय ऐसा कोई दूसरा काम हाथ में लेने को नहीं होता, परन्तु मेरा वह विचार उस शराबी का-सा ही रहा जो बोतल को सामने देखकर 'एक जाम और' पीने लगता है। अस्तु, भाई श्रीपतरायजी ने जब क्यूप्रिन के 'यामा' के अनुवाद का प्रस्ताव मेरे सामने रक्खा तो मुझसे इनकार न हो सका। मैंने सोचा, 'अच्छा एक जाम और सही।' परन्तु ईश्वर से प्रार्थना है कि मुझे इस दौर का आदी न करे।

अनुवाद के सम्बन्ध में मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि मैंने इस अनुवाद को भी उसी ढङ्ग पर किया है जिस ढङ्ग पर 'मा' का अनुवाद किया था। कई स्थानों पर अनुवाद में तुकबन्दियाँ भी की गई हैं जो कि मूल उपन्यास में जो तुकबन्दियाँ है उन्हीं का निकट से निकट अनुवाद हैं। आशा है उन तुकबन्दियों को पाठक कविता की दृष्टि से देखने का प्रयत्न न करेंगे क्योंकि वह मूल में भी ऐसी ही तुकबन्दियाँ हैं जो कि ऐसे स्थानों और ऐसे पात्रों के द्वारा कही जाती हैं जहाँ ऊँची कविता के लिए जगह नहीं होती। मूल उपन्यास का नाम 'यामा' हिन्दी में क़ायम रखने से कुछ भ्रम का डर था और भी कई दिक्कतें थीं जिससे उसका एक प्रकार से अनुदित नाम 'गाड़ीवालो का कटरा' ही उचित जँचा, अतएव अलैकज़ैण्डर क्यूप्रिन का महान् उपन्यास 'यामा' हिन्दी पाठकों की भेंट 'गाड़ीवालों के कटरे' के नाम से किया जाता है। इसका हिन्दी में नाम चकला भी हो सकता था, परन्तु उससे डर था कि बहुत से 'भले' आदमी शायद नाम देखते ही इस उपन्यास को छूने तक की हिम्मत न करते जिनके लिए वास्तव में यह उपन्यास है और यह उपन्यास हिन्दी में केवल ऐसे थोथले पाठक ही पढ़ते जिनके लिए यह उपन्यास नहीं है। इस उपन्यास के चित्र बड़े भयङ्कर हैं क्योंकि वे एक भयङ्कर सामाजिक रोग के सच्चे चित्र हैं। आशा है उन पर 'भले आदमी' नाक-भौं न सिकोड़ेंगे क्योंकि भयङ्करता के चित्र भयङ्कर और गन्दगी के चित्र गन्दे ही हो सकते हैं। भयङ्करता के चित्र हृदय-ग्राही और गन्दगी के चित्र पवित्र बनाना जीवन के प्रति झूठ है जिसके प्रख्यात रूसी कलाकार आदी नहीं है। अतएव उनको, जो गणिका को स्वर्ग भेजने का प्रयत्न करते हैं और वेश्यायों से भी पतिव्रत धर्म की आशा रखते हैं, यह उपन्यास दिल थामकर पढ़ना पड़ेगा; परन्तु अगर उनके दिल सचमुच में है तो हम विश्वास दिलाते हैं उसमें इस उपन्यास को पढ़कर उथल-पुथल मच जायगी।

—चन्द्रभाल जौहरी

पहला अध्याय

बहुत दिन हुए, रेलें निकलने से पहले, व्यापारी और सरकारी शिकरमें हाँकनेवाले गाड़ीवान रूस देश के एक दक्षिणी नगर के छोर पर रहा करते थे। पीढ़ियों दर पीढ़ियों से वह वहीं रहते चले आये थे। इसलिए इस भाग का नाम ही गाड़ीवानों का कटरा अथवा कटरा पड़ गया था। धीरे-धीरे शिकरमों के स्थान में सवारियाँ और माल जब रेलों पर जाने लगा तो इन गाड़ीवानों का व्यापार ठंढा पड़ गया और गाड़ीवानों की यह झगड़ालू जाति अपनी झगड़ालू आदतें छोड़कर दूसरे धन्धों में लग गई और इधर-उधर बिखर गई। फिर भी गाड़ीवानों के कटरे का नाम तो क़ायम ही रहा और वहाँ की हवा से नाचोरङ्ग, ख़ुमारी और झगड़े-टण्टों की बू आती रही, जिससे रात को इस कटरे की तरफ़ जाना भी ख़तरनाक समझा जाता था।

बाद में न जाने कैसे इस पुराने स्थान पर, जहाँ कि सिपाहियों की चंचल स्त्रियाँ और तगड़ी विधवायें शराब, ताड़ी और लुक-छिपकर कभी-कभी प्रेम की तिजारत भी किया करती थीं, धीरे-धीरे खुले चकले ही बनने लगे जो कि सरकारी नियमों के अनुसार सरकारी अफसरों की देख-रेख में चलने लगे। कटरे के बीच की सड़क के दोनों ओर के सभी घरों में वेश्यायें रहने लगीं। केवल चार-पाँच घर बीच में बच गये थे जो ताड़ीख़ाने, शराबख़ाने अथवा वेश्यावृत्ति, सम्बन्धी दूसरी वस्तुओं की बिक्री के केन्द्र बन गये। कटरे में कुल मिलाकर करीब तीस घर होंगे। इन तीसों घरों का रहन-सहन और रङ्ग-ढङ्ग एक-सा ही

था। फ़र्क़ सिर्फ इतना था कि क्षणिक प्रेम के प्यासे जो इन घरों मे आते थे, उनसे किसी घर मे कम और किसी मे अधिक दाम लिये जाते थे। अस्तु बाहरी दिखावे और ठाट-बाट मे इन घरों मे फ़र्क़ था। किसी घर में देखने मे अधिक सुन्दर स्त्रियां थीं और उनकी पोशाकें और उनके कमरों की चमक-दमक भी दूसरों से अधिक आकर्षक होती थी।

कटरे में घुसते ही बाईं तरफ के पहले मकान मे ट्रेपेल नाम के व्यापारी का चकला था, जो कटरे के दूसरे चकलो से बढ़िया था। यह पुरानी पेढ़ी थी। आजकल इस पेढ़ी का मालिक ट्रेपेल के स्थान पर एक दूसरा आदमी था जो कि शहर की चुङ्गी का सदस्य भी था। यह मकान दुमंजिला था, जिसकी एक मंजिल का रङ्ग सफेद था और दूसरी का हरा था। यह मकान रूसी गृह-कलाकार रोपेट की ईज़ाद की हुई कला के अनुसार बना था, जिससे इसमें दरवाजो पर लकड़ी के घोड़े, मूर्तियां इत्यादि बने थे। द्वार से ऊपर जाती हुई सीढ़ियो पर सफेद किनारे की एक दरी बिछी थी, जिसके किनारे ऊपर की ड्योढ़ी में एक भुस भरा मृत रीछ खड़ा था। उसके हाथ मे मेहमानो के कार्ड लेने के लिए एक लकड़ी की रकाबी थी। नाच और महफिलवाले कमरे मे लकड़ी का रङ्ग-बिरङ्गा फर्श था और उसके दर्वाजों और खिडकियों पर भारी-भारी रेशमी पर्दे और जालियाँ लटकती थीं, और दीवारों के सहारे-सहारे सफेद और सुनहरी रङ्ग की बहुत-सी कुर्सियाँ लगी थीं। दीवारों पर आईने भी लगे थे जिनके चौखटों पर भेंट देनेवाले प्रेमियो के नाम खुदे थे। महफिल के ही कमरे से सटे हुए बैठने के दो और कमरे थे, जिनमें गलीचे और गुदगुदे गद्दीदार दीवान बिछे थे। सोने के कमरों में नीले और गुलाबी रङ्ग के कंदील लटकते थे और रेशमी रजाइयाँ और साफ तकिये पलङ्गों पर रक्खे थे। इस मकान मे रहनेवाली स्त्रियाँ नाचनेवाली ऊँची-ऊँची पोशाकें, जिसमें क़ीमती बेलें और किनारे लगे होते थे, या मछुवाहों या स्कूली लड़कियों की-सी पोशाकें पहनती थीं। पर यह स्त्रियां अधिकतर बाल्टिक सागर के किनारे के प्रदेशो की जर्मन स्त्रियाँ होती थीं, जिनके शरीर सुगठित, सुन्दर और गौर-वर्ण के थे और जिनके भारी-भारी स्तन थे। ट्रेपेल की पेढ़ी में एक वक़्त के लिए तीन रुपये और रात भर के लिए दस रुपए लिए जाते थे।

तीन पेढ़ियाँ—एक सोफिया वेसीलीवना की, दूसरी पुरानी कीव नाम की और तीसरी अन्ना मार्कोवना की—दो-दो रुपये वाली थी जो ट्रेपेल से कुछ घटिया और दिखाव में ग़रीब थी। कटरे की बाकी सारी पेढ़ियाँ एक-एक रुपये वाली थी जो

इनसे भी दिखने मे खराब थी। सड़क के दूसरी ओर के मकान छोटा कटरा कहलाते थे जिनमे अधिकतर सिपाही, गिरहकट उठाईगीरे, कारीगर और छोटे दर्जे के आम लोग आते-जाते थे; क्योंकि वहां सिर्फ एक बार के आठ आना ही या उससे भी कम देने होते थे। इस तरफ के सभी मकान बड़े ग़रीब और गन्दे थे जिनके कमरों के फर्श टूटे-फूटे थे और खिड़कियों पर फटी टूल के पुराने पर्दे लटकते थे। इन मकानों मे सोने के कमरे, हल्के कपड़ों के ऐसे पर्दों से एक दूसरे से अलग किये हुये थे जो छत तक भी नहीं पहुँचते थे और इन कमरों मे पड़ी हुई खाटों पर पुआल के ऊँचे-नीचे गद्दों पर फटी और फलालेन की चादरें, पुराने कम्बल पड़े रहते थे, जिनमे से शराब और पसीने की गन्ध निकल-निकलकर हवा को बदबूदार बनाती थी। इन मकानो मे रहने वाली स्त्रियां रङ्गीन छींट की मलवाहों की फटी पोशाके पहनती थीं और उनके गले आम तौर पर बैठे होते थे, नाकें दबी होती थीं और उनके चेहरों पर पिछली रात की चोटों और खुरचों के निशान दीखते थे जिनको छिपाने के प्रयत्न मे वे बेचारी बड़ी होशियारी से सिगरेट के डिब्बों के ऊपर लगे हुये लाल रङ्ग को अपने थूक से भिगो-भिगोकर छुड़ाती और अपने चेहरों पर लगाती थीं।

साल भर तक बराबर हर शाम को सिर्फ ईसाइयों के पवित्र सप्ताह के तीन-चार दिन छोड़ कर, जिनमे ईसाई धर्म के अनुसार चिड़ियां तक अपने घोंसले नहीं रखतीं—अँधेरा होते ही कटरे के हर घर के सामने वाले रङ्गीन और चित्रकारी से सुसज्जित गली के द्वारों पर लाल-लाल रङ्ग की लालटेन जलाकर लटका दी जाती थीं, जिनसे गली मे दिवाली हो उठती थी। मकानो की खिडकियों से चमचमाती हुई रोशनी और पियानो की ताने बहती हुई बाहर आती थीं और बाहर गली मे गाड़ियों पर गाड़ियाँ आदमियों से भरी हुई आती-जाती थीं। सभी मकानों के गली वाले द्वार चौड़े खुल जाते थे। जिनमे एक तङ्ग और ढालू जीना ऊपर को जाता हुआ दीखता था जो ऊपर की एक तङ्ग ड्योढ़ी मे जाकर ख़त्म हो जाता था। वहाँ पर एक बहुत तेज लैम्प जलता रहता था, जिसके इधर-उधर स्वीटज़रलैण्ड के पहाड़ी दृश्यों के चित्र लटकते थे। न मालूम स्वीटज़रलैण्ड के इन पहाड़ी दृश्यों का मकानो से क्या संबंध था। सुबह तक सैकड़ों, बल्कि हजारों आदमी, इन तङ्ग जीनो पर चढ़ते और उतरते थे। सभी तरह के आदमी यहाँ आते थे। अधेड़, परिश्रम से थके हुये, बूढ़े जो कृत्रिम उपायों से जीवन की ज्योति ढूँढ़ने का प्रयत्न करते थे और कालिजों के विद्यार्थी जो निरे अनुभव-हीन बालक होते थे और दाढ़ी वाले बच्चों के बाप और सुनहरी चश्मे लगाने वाले समाज के स्तम्भ और नवविवाहित प्रेम से लहलहाते हुये दूल्हे

और प्रख्यात विद्वान, प्रोफेसर, चोर, कातिल और उच्च विचारों के लेखक, नेता या वकील जो समाज की नैतिक दशा सुधारने के लिये और स्त्रियों के समान अधिकारों के लिये बड़े बड़े सुन्दर लेख लिखते और व्याख्यान देते थे। सरकारी नौकर, जासूस, जेलों से भागे हुये क़ैदी, विद्यार्थी, समाजवादी, किराये के टट्टू राजनीतिज्ञ, शर्मीले और बेशर्म, बीमार और चङ्गे, ऐसे जिनका स्त्री से पहली ही बार संसर्ग होता था और ऐसे कुमार्गी जो इस राह की हर तरह से ख़ाक छाने होते थे, स्वच्छ नेत्रों के सुन्दर जवान और राक्षसी आकृति के मनुष्य, जिनको प्रकृति ने क्रुद्ध होकर अष्टावक्र, बहिरा, गूँगा, अन्धा या नकटा कर दिया होता था और जिनके शरीर और पेट लटके होते थे और जो हिलहिलकर बनमानसों की तरह अपने मुँहों से गन्ध उड़ाते हुये चलते थे। इस प्रकार के सभी तरह के लोग बड़ी आज़ादी से आते थे, मानो वे उपहार-गृहों अथवा क्लबों में आते हों; और यहाँ बैठकर वे सिगरेट और शराब पीते और उछल-उछल और कूद-कूद कर खुश होने का दिखावा करते थे। वे नाचते और भयङ्कर प्रकार से अपने कूल्हे मटका-मटका कर संभोग के विभिन्न दृश्य इशारों से बताते थे। कभी ध्यान-पूर्वक देर तक देख कर और कभी फौरन ही जानवर की तरह झपट कर यह लोग अपनी पसन्द की किसी औरत को पकड़ लेते थे जो वह अच्छी तरह जानते थे, उनको 'न' नहीं कह सकती थी। बड़ी बेसब्री से दाम पहिले ही अदा करके वे उसी सार्वजनिक खाट पर जो कि पहिले मनुष्य के शरीर की गर्मी से अभी तक गर्म ही होती थी, ईश्वर की उस महान और सौन्दर्यपूर्ण लीला को निरर्थक करने मे संलग्न हो जाते थे, जिस ईश्वर की महान लीला से संसार में नवीन जीवन का संचार होता है। इन घरों में रहने वाली स्त्रियाँ बेबसी की लापरवाही से एकसे शब्दो और बाहुनर इशारो और मुस्कानों से इन आदमियो की लिप्सायें पूरी करने का प्रयत्न करती थी और एक-एक रात में तीन-चार और यहाँ तक कि दस-दस तक ऐसे ही आदमियों का जो अक्सर बाहरी कमरे में बैठे-हुए अपनी बारी की फ़िक्र मे होते थे, बेचारी स्वागत करती थीं। इस प्रकार रात बीतती थी और सुबह होते-होते कटरे मे चारों ओर शान्ति छाने लगती थी। सूर्य निकलते-निकलते कटरा बिल्कुल ही ख़ाली हो जाता था और वहाँ के तमाम घरों के द्वार और खिड़कियाँ बन्द हो जाते थे और उनके निवासी सो जाते थे। शाम को स्त्रियाँ सोकर उठती थीं और फिर दूसरी रात के लिये तैयार होने लगती थीं।

अब इस प्रकार लगातार, रोज ब रोज़, महीनो और वर्षों तक ये बेचारी

स्त्रियाँ इसी प्रकार का विचित्र और अविश्वसनीय जीवन इस कटरे के इन सार्वजनिक हरमों में बिताती थीं। समाज से बहिष्कृत, कुटुम्ब से वंचित, समाज की मनोवृत्ति का शिकार, शहर की अति संभोग की बीमारी का अस्पताल, कुटुम्ब की मान और मर्यादा की रक्षक बनी हुई चार सौ मूर्ख, आलसी और बाँझ स्त्रियाँ उस कटरे में रहती थीं।

दूसरा अध्याय

आइये, आपको अब हम इन मकानों के अन्दर ले चलें। दोपहर के दो बजे हैं। अन्ना मार्कोवना की पेढ़ी में सभी सो रहे हैं। नाचने का कमरा, उसमें लटकते हुये बड़े-बड़े सुनहरी चौखटों के आईने और दीवारों के किनारे रक्खी हुई कुर्सियाँ, दावत और स्नान के दृश्यों के दीवार पर लटके हुये चित्र सभी सो-से रहे हैं। कमरे की ख़ामोशी और अर्ध अन्धकार मे वे बड़े गंभीर, चुप और किसी एक विचित्र रंज से ग़मगीन दीखते हैं। कल रात को इस कमरे में, हररोज की तरह कन्दील और बत्तियाँ जल रही थीं, संगीत की ऊँची-ऊँची तानें उठ रही थी, सिगरेटों का श्याम धूम्र मँडरा रहा था और स्त्री-मर्द जोड़ो मे अपने-अपने कूल्हे मटकाते हुये और टाँगें ऊपर को उछालते हुये नाच रहे थे। बाहर की गली इन घरों की खिड़कियों में से आनेवाले प्रकाश से और गली के द्वारों पर लटकने वाली लाल लालटेनों की रोशनी से जगमगाती थी और सुबह होते-तक गाड़ियाँ और आदमियों से ठसाठस भरी थी।

परन्तु इस समय गली बिल्कुल खाली थी। वह ग्रीष्म ऋतु के सूर्य्य भगवान के प्रकाश में आनन्द से उन्मत्त-सी चमक रही थी। बन्द खिड़कियों पर पर्दे खिंचे हुए थे, जिससे अन्दर के कमरों में अन्धकार और ठण्डक थी और वहाँ का वातावरण ऐसा आकर्षक था जैसा कि नाटक ख़त्म हो जाने पर नाट्य-गृहों का या अदालत उठ जाने पर कचहरियों का होता है।

कमरे के भीतर रक्खे हुए पियानो के काले-काले चमकदार तख़्ते मन्द प्रकाश

में धीमे-धीमे चमक रहे थे, और पियानो के पीले, पुराने, जगह ब जगह टूटे हुए परदे भी टिमटिमा रहे थे। बन्द, स्थिर वायु में कल की बदबू अभी तक भर रही थी। कमरे की वायु से इत्र, तम्बाकू और एक ऐसे बड़े कमरे की जिसमें कोई नहीं रहता, सड़ी हुई सील की, और अस्वस्थ और अस्वच्छ स्त्रियों के शरीर से निकलने वाले पसीने की, चेहरे पर लगाने के पाउडर की, बोरिक थेरमल साबुन की और लकड़ी के फर्श पर लगी हुई पालिश की गन्ध आ रही थी। इस गन्ध मे दलदलों में सड़नेवाली घास की गन्ध भी आकर मिल रही थी जो मन को एक विचित्र आनन्द देती थी। आज ईसाइयों का त्रिदेव का त्योहार है। अस्तु पुराने रिवाज के अनुसार इस पेढ़ी की नौकरानियों ने अपनी मालकिनों के जगने से पहले ही एक गाड़ी कुश घास ख़रीदकर उसके मोटे-मोटे डन्ठल जो पैरों के नीचे पड़ते ही चर-चराकर कुचल जायँ, सारे कमरों और मकान के रास्तों में बिछा दिये थे। उन्होंने घर मे रक्खी हुई देवी-देवताओं की मूर्तियों के आगे रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के रिवाज के अनुसार बत्तियाँ भी जलाकर रख दी थीं। उनकी मालकिनें यह 'पवित्र काम स्वयं नहीं कर सकती थीं, क्योंकि उनके हाथ पिछली रात के अपवित्र कामों से गन्दे थे।

मकान के चौकीदार ने भी घर के नक्काशीदार द्वार पर सनौवर की दो टहनियाँ उसे सुसज्जित करने के लिए लाकर रख दी थीं। दूसरे घरों के द्वारों पर भी सीढ़ियों के नीचे, लकड़ी के खम्भों के पास इस प्रकार सनौवर की पतली-पतली टहनियाँ रक्खीं थीं, जिनसे धीमी-धीमी धूप की सी गन्ध निकलकर हवा में फैल रही थी।

अन्ना का घर बिल्कुल ख़ामोश था, खाली था और ऊँघ रहा है। सिर्फ़ रसोई-घर मे से कुछ खट-खट की आवाज आ रही है, जिससे मालूम होता था कि दोपहर के खाने की तैयारी हो रही है। ल्यूब्का नाम की इस घर की एक चेचकरूह लड़की जो सुन्दर तो नहीं, परन्तु शरीर से सुदृढ़ और ताजी है, नंगे पाँव, सिर्फ अपनी कुर्ती पहिने हुए और बाहों तक अपने हाथ उघाड़े हुए बाहर के सहन मे बैठी थी। कल रात उसे छः मेहमानों की ख़ातिर करनी पड़ी थी। परन्तु उनमें से एक भी रातभर नहीं टिका था, जिससे वह आराम से फैलकर सो सकी थी, अपनी चौड़ी खाट पर अकेली ही मजे से वह लोट-पोट कर सोई थी। अस्तु आज वह सुबह दस बजे ही उठ बैठी थी। उसने बड़ी प्रसन्नता से नौकरानी को रसोई का फर्श और मेजें इत्यादि मल-मलकर साफ करने में पहिले तो सहायता की थी, अब वह सहन में बैठकर अपने कुत्ते को जो जंजीर से बँधा था, गोश्त की बची-खुची कतरन फैंक-फेंककर खिला रही थी। चमकदार

बालोंवाला काले मुँह का बड़ा कुत्ता कूद-कूदकर, गर्दन में बँधी हुई जंजीर के सहारे पिछले पैरों पर खड़ा हो-होकर, पीठ और दुम मोड़-मोड़कर लकड़ी की तरफ दाँत निकालता, भौंकता और झुक-झुककर बेसब्री से बार-बार जमीन सूँघता था। लड़की उसको गोश्त के टुकड़े दिखा-दिखाकर चिढ़ा रही थी और बनावटी क्रोध से उस पर चिल्ला-चिल्लाकर कह रही थी—

'अरे मूर्ख ! अरे बेवकूफ ! मैं दे तो रही हूँ। इतना बेसब्र क्यों हो रहा है ?'

परन्तु वह हृदय से उस कुत्ते की बेसब्री, और शोर-गुल और उस पर अपना क्षणिक प्रभाव देखकर बड़ी खुश हो रही थी। उसकी खुशी का कारण यह भी था कि आज वह अच्छी तरह सोई थी और रात को कोई आदमी उसके पास नहीं सोया था और आज त्रिदेव का त्यौहार था, जिसे वह अपने बचपन से खुशी लानेवाला समझती आई थी और आज धूप भी खूब निकल रही थी। जिसमें इस प्रकार बैठने का उसे सौभाग्य बिरले ही मिला था।

रात के मेहमान सब अपने-अपने रास्ते चले गये थे। दिन भर में सबसे शान्त काम और व्यापार का समय आ रहा था। सब लोग मालकिन के कमरे मे बैठे काफी पी रहे थे। सब मिलाकर पाँच जीव वहाँ इस समय थे। एक तो मालकिन अन्ना-मारकोवना स्वर्य, जिसके नाम मे यह पेढ़ी सरकारी काग़ज़ों में दर्ज है और जो लगभग साठ वर्ष की होगी। वह क़द को बहुत नाटी, परन्तु मोटी औरत है। उसका शरीर तीन मांस के गोलार्धों का बना हुआ लगता था, जिसमें सबसे बड़ा गोलार्ध सबसे नीचे, उसके ऊपर उससे छोटा और सबसे ऊपर सबसे छोटा रक्खा हुआ लगता था। यह तीन गोलार्ध एक तो उसका लहँगा, दूसरा उसका पेट और तीसरा उसका सिर थे। विचित्र बात यह थी कि उसकी मुर्झाई हुई नीली-नीली आँखों में लड़कपन अथवा बचपन की-सी झलक है गो कि उसका मुँह बूढ़ा है, जिसका निचला होंठ भीगा और रसभरी के रङ्ग का, जीवन-हीन लटकता है। दूसरा उसका पति इसाय जो कि एक नाटा, भूरा, शान्त स्वभाव का छोटा-सा आदमी है और बेचारा अपनी पत्नी की उङ्गलियों पर नाचा करता है। जब अन्ना इस मकान में घर-गृहस्थी का काम चलाने के लिए नौकर थी तब वह इसी घर में चौकीदार था। बाद में उपयोगी होने के विचार से उसने अपने आप ही बेला बजाना सीख लिया था। अस्तु अब वह रात को, नाच के समय, बेला बजाया करता था और शराब के नशे में चूर हो जाने वाले दूकानदारों को, जो रोने के लिए आतुर हो जाते थे, वह कुछ सोग की तानें भी बजाकर सुनाया करता था।

इन दो के अतिरिक्त दो घर-गृहस्थी का काम देखने वाली स्त्रियाँ हैं, जिनमें एक बड़ी है और दूसरी छोटी। बड़ी का नाम ऐम्मा ऐडवार्डोवना है। वह क़द की लम्बी छियालीस वर्ष की उम्र की पूरी औरत है जिसके बाल भूरे हैं और मोटापे के कारण तीन ठुड्डियाँ हैं। उसकी आँखों के चारो ओर काले-काले दायरे बन गये हैं जो उसकी पुरानी बीमारी के सूचक हैं। उसका चेहरा माथे से नीचे की तरफ नाशपाती की तरह चौड़ा है और उसका रङ्ग मटियार, आँखें छोटी और काली, नाक गूदेदार और होठ सख्ती से मुड़े हुए हैं, जिससे उसके चेहरे पर हुक्मरानी आ गई है। इस घर में यह बात किसी से छिपी नहीं है कि एक दो वर्ष में अन्ना अपना यह काम छोड़ देगी और अपनी पेढ़ी ऐम्मा को कुछ नकद और कुछ वायदे के दामों पर बेच देगी। अस्तु इस घर की लड़कियाँ ऐम्मा का भी उतना ही सम्मान करती हैं जितना कि मालकिन का और उससे कुछ-कुछ डरती भी हैं। जो कोई इस घर में कोई ग़लती करता है, ऐम्मा उसको ठोंकती है—बेरहमी से, ठण्डे दिल से, अपने ही हाथों, बिना चेहरे पर बल लाये ठोंकती है। लड़कियों में हमेशा एक से वह ख़ास तौर पर स्नेह करती है, जिसको वह अपने कठोर स्नेह और ईर्षा से बड़ा सताती है। उसका यह स्नेह उसकी मार से बड़ा कठोर होता है।

घर-गृहस्थी का काम देखने वाली दूसरी स्त्री का नाम ज़ोसिया है। वह कुछ रोज़ पहिले तक इसी घर की एक लड़की थी। अस्तु इस घर की लड़कियाँ अभी तक उसे खुशामद और दोस्ती में भाववाचक शब्द 'छोटी चची' के नाम से पुकारती हैं। वह पतली, हँसोड़, आँखों से कुछ-कुछ ऐंचाताना, गुलाबी रङ्ग की है और उसके बाल घूँघरवाले हैं। उसे ऐक्टर बहुत पसन्द हैं—ख़ासकर तगड़े मज़ाकिया ऐक्टर। ऐम्मा एडवार्डोवना के प्रति वह नाशुक्रगुज़ारी का रुख रखती है। पाँचवाँ शख्स जो इन लोगों के साथ बैठा काफी पी रहा है, इस जिले का सरकारी इन्सपेक्टर बर्कोश है। वह खिलाड़ी आदमी है, जिसका सिर कुछ-कुछ गन्जा, दाढ़ी लाल और पंखे की तरह फैली हुई, स्वच्छ नीली ऊँघती हुई आँखें और पतली प्रिय और कुछ-कुछ भर्राई हुई आवाज़ है। यह बात सभी को विदित है कि पहिले वह सरकारी खुफिया-विभाग में काम करता था और उसके नाम से जरायमपेशा काँपते थे, क्योंकि वह शरीर से बड़ा मजबूत और प्रश्न पूछने में निरा बेरहम था। उसके सिर पर कई पापों का बोझ है। शहर भर जानता है कि दो वर्ष हुए उसने एक अमीर सत्तर वर्ष की बुढ़िया से शादी की थी और पिछले साल उसे गला घोंट कर मार डाला था। परन्तु इस मामले को किसी तरह उसने दबा

दिया था। दूसरे चारों ने भी, जो इस समय बर्कैश के साथ बैठे चाय पीते थे, इसी तरह के थोड़े बहुत पाप अपनी रङ्गीन ज़िन्दगियों मे किये थे। परन्तु उन छोटे-मोटे पापों के ध्यान पर उनके हृदय में कोई चोट नही होती थी, क्योंकि वे उन्हें अपने पेशों के अनिवार्य बुरे काम मानते थे।

यह लोग मालकिन के कमरे मे बढ़िया मोटी मलाई काफी में मिलाकर पी रहे थे। इन्सपेक्टर दूसरों को धन्यवाद देता हुआ काफ़ी पी रहा था। सच तो यह है कि इन्सपेक्टर वास्तव में काफ़ी पी नहीं रहा था, बल्कि उनको अपने व्यवहार से ऐसा ज़ाहिर कर रहा था कि वह उनको खुश करने और आभारी करने के लिये उनके साथ काफ़ी पीने बैठ गया है।

'अच्छा, तो अब क्या करना चाहिये, इन्सपेक्टर साहब? इस व्यापार मे अब कुछ मिलता नहीं। आपका जो हुक्म हो......'

बर्केश ने आधा ग्लास शराब को मुँह में उड़ेल कर ज़बान से तेज़ अर्गवानी शराब को तालू में ले जाते हुए धीरे-धीरे हलक़ मे उतार लिया और पीछे से वह एक प्याला काफ़ी का चढ़ाकर बायें हाथ की बीचवाली उँगली से जिसमें एक जड़ी हुई अँगूठी थी, अपनी मूछों पर दायें-बायें ताव देने लगा।

'तुम्ही सोचो श्रीमती अन्ना!' उसने मेज़ पर नीचे की तरफ़ देखते हुए और हाथ फैलाकर आँखें घुमाते हुए कहा, 'सोचो तो मैं कितने ख़तरे में हूँ। उस लड़की को धोखे से चकले में लाया गया है। उसके माँ-बाप उसे पुलिस के द्वारा ढूँढ़ रहे हैं। जगह-जगह रहने के बाद उसका पता यहाँ मिलता है। तुम्हारे घर में जो कि मेरे हल्के में है! देखो न मैं किस मुसीबत में हूँ! मैं क्या करूँ?'

'मगर इन्सपेक्टर साहब, वह बालिग़ है।' मालकिन बोली।

'हाँ, यहाँ की सभी लड़कियाँ बालिग़ हैं' इसाय ने ज़ोर देते हुए कहा, 'उन सबने लिखकर दिया हुआ है कि वे अपनी मरज़ी से यह काम करती है।'

ऐम्मा मोटी आवाज़ में विश्वास दिलाती हुई बोली, 'ईश्वर की क़सम, हम लोग उसे यहाँ अपनी लड़की की तरह रखते हैं।'

'मगर मैं तो दूसरी ही बात कर रहा हूँ। इस सबका उससे क्या मतलब है?' इन्सपेक्टर ने चिढ़ते हुये कहा, 'मेरी स्थिति का विचार करो...मैं क्या करूँ? मेरा फ़र्ज़ है! मैं अपना फर्ज़ किये बिना कैसे रह सकता हूँ?'

मालकिन जल्दी से उठी और अपने स्लीपर पहिन कर द्वार की तरफ़ झपटती

हुई इन्सपेक्टर की तरफ़ आँख मारती हुई बोली, 'इन्सपेक्टर साहब, इस कमरे को तो ज़रा देखिये ! हम लोग चकले को ज़रा बढ़ा रहे हैं !'

'हाँ ! अच्छा, अच्छा...।'

दस मिनट के बाद दोनों उस कमरे में से, एक दूसरे की तरफ़ न देखते हुए लौट आये। इन्सपेक्टर का हाथ जेब में घुसा हुआ एक नये सौ रुपये के नोट को तह कर रहा था। फिर उस भगाई हुई लड़की का कोई ज़िक्र न हुआ। इन्सपेक्टर अपनी बची हुई शराब को खत्म करता हुआ आजकल के लड़कों के अशिष्ट व्यवहार का ज़िक्र करने लगा :

'मेरा लड़का पॉल स्कूल में पढ़ता है। वह बदमाश मुझसे आकर कहा करता है, 'पिताजी, लड़के मुझे स्कूल में चिढ़ाते हैं कि तुम्हारे बाप पुलिस में हैं और कटरे में काम करते हैं जहाँ वह चकलों से रिश्वतें लेते हैं ! देखो तो कैसी गुस्ताख़ी की बातें हैं, श्रीमती अन्ना ?'

'ऐं ! भला हमारे यहाँ से आपको क्या रिश्वत मिल सकती है ?'

'मैं उससे कहता हूँ कि जा अपने हैडमास्टर से कह देना कि फिर मैंने ऐसी शिकायत सुनी तो सरकार में उन सब की रिपोर्ट कर दूँगा। इस पर वह आकर मुझसे कहता है कि मैं तुम्हारा लड़का ही नहीं हूँ। जाओ, तुम अपने लिए कोई दूसरा लड़का ढूँढ़ लो। सुनती हो। कैसी गुस्ताख़ी की बातें हैं ! मैंने भी इस पर उसे ऐसा ठोका कि एक महीने तक याद रहे ! अब वह मुझसे बोलना भी पसन्द नहीं करता ! अभी मुझे उसे और सिखाना है !'

'हाँ, हाँ, मैं सब कुछ जानती हूँ—' अन्ना ने आह भर कर कहा और उसका निचला होंठ लटक आया और उसकी मुर्झाई आँखों में पानी आ गया, 'हम भी अपनी चिड़िया को स्कूल में पढ़ाते हैं। यहाँ उसको रखना उचित नहीं। इसलिये हम उसे शहर में एक मान-मर्यादा वाले परिवार में रखते हैं। मगर स्कूल से वह ऐसी ऐसी बातें सीखकर आती है कि उन्हें सुनकर मेरा चेहरा लाल हो जाता है।'

'ईश्वर की क़सम उसकी बातें सुनकर अन्ना का चेहरा तमतमा उठता है !' इसाय ने अन्ना की ताईद करते हुए कहा।

'अवश्य लाल हो जाता होगा !' इन्सपेक्टर ने हाँ में हाँ मिलाते हुये कहा, 'हाँ, हाँ, हाँ ! मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ ! हे ईश्वर ! हम लोग किधर जा रहे हैं ! दुनिया किधर जा रही है ! न जाने यह सब क्रान्ति, क्रान्ति पुकारने वाले, यह सब विद्यार्थी इत्यादि और दूसरे लोग क्या करना चाहते हैं ? किधर सब को ले जाना

चाहते हैं ? उन्हें अपने आप को ही सारा दोष देना चाहिये ! जिधर देखो उधर ही बेईमानी है, अनीति का ज़ोर बढ़ रहा है, लड़के माँ-बाप की इज़्ज़त नहीं करते ! इन लोगों को गोली से मार देना चाहिये !'

'हाँ, हाँ, देखो न ! परसों ही क्या हुआ !' ज़ोसिया बीच मे बोल उठी, 'एक मेहमान आया...बड़ा तगड़ा आदमी था...'

'चुप रह...चुप !' ऐम्मा जो इन्सपेक्टर की बातें सुन रही थी, बड़ी-बूढ़ी की तरह सिर हिलाती हुई एक तरफ को झुककर उसकी बात काटकर कहने लगी, 'जाओ, छोकरियों के नाश्ते का इन्तज़ाम करो ।'

'किसी पर आजकल विश्वास करना मुश्किल हो गया है । मालकिन ने शिकायत करते हुये कहा, 'हर नौकर धोखा देने की कोशिश करता है । छोकरियां को हमेशा सिर्फ अपने प्रेमियों की ही चिन्ता रहती है । मज़ा वे चाहे जितना करें उसकी शिकायत नहीं है । परन्तु फिर उन्हें अपने काम का भी तो ध्यान रखना चाहिये ! उसका उन्हें कभी ख्याल नहीं रहता !'

इसके बाद कुछ देर तक एक विचित्र ख़ामोशी छाई रही । फिर एक पतली स्त्री की आवाज़ द्वार के उस ओर से आई, 'चची, प्यारी चची, यह लो रुपया और महरबानी करके मुझे स्टाम्प दे दो । पीटे चला गया ।'

इन्सपेक्टर खड़ा हो गया और अपनी किरच ठीक करता हुआ कहने लगा, 'मुझे यहाँ बहुत देर हो गई । बड़ा काम करना है । अच्छा अन्ना, सलाम ! बन्दगी मिस्टर इसाय !'

'इन्सपेक्टर साहब, एक ग्लास और पी लीजिये । इससे काम में आपको थकान नहीं होगी ।' इसाय ने मेज की तरफ अपना शरीर घुसेड़ते हुये कहा, 'नहीं ! नहीं ! धन्यवाद ! मैंने हलक तक भर ली है । अब ज़रा भी जगह नहीं है ! तुम्हारी महरबानी के लिये धन्यवाद !'

'आपके यहाँ आने के लिये आपको धन्यवाद, इन्सपेक्टर साहब ! कृपया फिर भी आइयेगा !'

'आपके यहाँ आने से मुझे बड़ी खुशी होती है ! अच्छा फिर मिलूँगा ! बन्दगी !' यह कहकर वह चल दिया । परन्तु चलते हुये द्वार में एक मिनट रुका और मित्र की तरह सलाह देता हुआ बोला, 'मगर देखो इस लड़की को फ़िर भी तुम वक्त रहते अपने यहाँ से कहीं और भेज दो तो अच्छा ही है ! वैसे तुम्हारी मरजी ! मगर मित्र की हैसियत से मेरी तुम्हें यही सलाह है !'

यह कह कर वह चला गया। ज़ीने पर से उसके उतरने की जब आहट खत्म हो गई और बाहर का द्वार उसको निकालकर बन्द हो गया तो अन्ना ने अपने नथनों से ज़ोर की एक साँस लेते हुये घृणा से कहा, 'मक्कार! फरेबी कहीं का! अपनी मुट्ठी गरम करने के लिये आता है! आते भी मुट्ठी गरम और जाते भी...'

तीसरा अध्याय

धीरे-धीरे वे सब एक-एक करके कमरे मे से उठ गये। घर मे अँधेरा छा रहा है। मुर्झाती हुई कुश की भीनी-भीनी सुगन्ध फैल रही है। चारो तरफ़ शान्ति है।

शाम को छः बजे सब लोग खाना खाते हैं। तब तक वक्त धीरे-धीरे और बड़ी मुश्किल से गुज़रता है। यह दोपहर की छुट्टी का वक्त घर भर को बड़ा भारी और खाली लगता है—कुछ-कुछ यह वक्त उन स्कूलों की लम्बी छुट्टियों की तरह अथवा स्त्रियों के आश्रमों और उन स्त्रियो की संस्थाओं की तरह गुज़रता है जहाँ अधिक काम करने को न होने से आलस से मन उकता उठता है। सिर्फ़ पेटीकोट और एक-एक सफ़ेद कुर्ता पहिने हुए, नङ्गे हाथों और कभी-कभी नंगे पाँवों भी स्त्रियाँ इधर-उधर, इस कमरे से उस कमरे और उस कमरे से इस कमरे में घूम रही थीं। न तो किसी ने मुँह हाथ ही धोये थे और न किसी ने अपने बाल ही काढ़े थे। कोई आलस्य से पियानो के तारों पर उङ्गलियाँ रख रही थी; कोई ताश के पत्तों से अपनी क़िस्मत आज़मा रही थीं और सभी आलस्य से एक दूसरे को कोसती हुई बड़ी बेसब्री से अपना समय गुज़ारती हुई आनेवाली शाम की बाट देख रही थीं।

ल्यूब्का नाश्ता ख़त्म करके बचन-खुचन उठा कर कुत्ते को देने गई थी। परन्तु अधिक देर तक कुत्ते के पास ठहरने को उसका जी नहीं चाहा। उसने और नियूरा ने कुछ खाँड के खिलौने और सूरजमुखी के बीज ख़रीद लिये थे, जिन्हे वे दोनों इस समय गले के पास वाले मकान की चहारदीवारी के निकट खड़ी-खड़ी खा रही

थीं। सूरजमुखी के बीजों को चबा-चबा कर वे पोला करके गूदा खा लेती थीं और उनके छिलके उनके मुँह से निकल-निकल कर उनकी ठोड़ियों और सीने पर आ गिरते थे। दोनों गली में जानेवालों के विषय में एक दूसरे से तरह-तरह की बातें करने में संलग्न थीं—बत्ती जलाने वाले के बारे में, जो गली की बत्तियों में मिट्टी का तेल भर रहा था, पुलिस के सिपाही के बारे में, जो अपना रोज़नामचा बगल में दबाये हुये चला जा रहा था, और किसी दूसरी पेढ़ी की चर्चा के बारे में जो गली में दौड़ती हुई उसपार की दूकान से कुछ खरीदने झपटी जा रही थी।

नियूरा कम उम्र की लड़की है। उसकी आँखें नीली-नीली और निकली हुई हैं और उसके बाल भूरे और रेशमी हैं और उसकी कनपटियों पर नीली-नीली नसें दीखती हैं। उसके चेहरे में कोई चीज़ ऐसी मासूम और हठीली है कि उसे देखते ही खाँड़ के बने उस सफेद मेमने की याद आ जाती है जो कि ईस्टर के त्योहार में मिठाइयों पर बनाया जाता है। वह सजीव, चंचल, और उत्सुक है। हर बात में वह अपनी नाक घुसेड़ती है। हरएक से उसकी राय मिल जाती है, हर ख़बर उसके पास सबसे पहिले पहुँचती और जब वह बोलने लग जाती है तो इतना और ऐसी जल्दी-जल्दी बोलती है कि उसके मुँह से बच्चों की तरह फेन निकलने लगता है।

सामने की छोटी दूकान में से एक नौकर निकला जिसके बाल घूँघरवाले, परन्तु गुथे हुए थे और जिसकी आँख में भी थोड़ा-सा ऐब था। उसने गली में ज़रा ठिठक कर इधर-उधर देखा और फिर पास के शराबख़ाने की तरफ लपका।

'प्रोखोर आइवानोविश, ओ प्रोखोर आइवानोविश !' नीरा ने चिल्लाकर पुकारा : 'बीज खाओगे ! आओ तुम्हें सूरजमुखी के बीज खिलावें।'

'हाँ आओ, आओ ! हमारे घर आओ।' ल्यूब्का सुरीली आवाज़ में बोली।

नियूरा नाक से ज़ोर से खरांटा भर कर खिलखिलाती हुई कहने लगी, 'हाँ जी, आओ। तुम भी हमारे यहाँ आकर अपने पैर ज़रा गरमा लो।'

मगर इतने में ही सामने का द्वार खुला और उसमें बड़ी चची की वृहत और कठोर मूर्ति दिखाई दी।

'हाय ! यह क्या नङ्ग नाच हो रहा है !' उसने उन्हें फटकारते हुये कहा, कितनी बार तुम्हें समझाया गया है कि दिन में गली की तरफ़ मत जाओ और वह भी, हाय, सिर्फ़ पेटीकोट और कुर्ती पहिनकर ! मेरी समझ में नहीं आता कि तुम लोगों को अपनी इज्ज़त का ज़रा भी ख्याल क्यों नहीं है ! भली लड़कियाँ, जिन्हें

अपनी इज़्ज़त का ख़याल होता है, इस तरह बाहर नहीं निकलतीं। तुम यह भूल जाती हो कि ईश्वर की कृपा से तुम उस टकयारे चकले मे नही हो, जिसमें सिपाही और गिरहकट भरे रहते हैं। बीबी, यह छोटा कटरा नही है, बड़ा कटरा है बड़ा !'

लड़कियाँ यह फटकार सुनकर घर में चली गई और रसोई मे जाकर मूढ़ों पर बैठ गई और पैर हिलाती हुई और बीज चबाती हुई रसोई बनाने वाली प्रास्कोविया नाम की स्त्री का क्रोधित चेहरा घूरने लगी। बड़ी देर तक वे इसी प्रकार बैठी घूरती रही।

छोटी मनका के कमरे में जिसे मनका गज़ट और सफेद ननकी मनका के नाम से भी पुकारा जाता है, ख़ासी भीड़ लग रही थी। चारपाई की पट्टी पर बैठी हुई वह एक दूसरी ज़ो नाम की लड़की के साथ जो कि एक लम्बी सुन्दर टेढ़ी भौंओं, भूरी और कुछ-कुछ निकली हुई आंखो, और ठीक रूसी वेश्याओं के से सफेद चेहरे-वाली स्त्री है, ताश खेल रही थी। शाहकट का खेल हो रहा था। ननकी मनका की दिली दोस्त जेनी उन दोनों की पीठ के पीछे चित्त लेटी हुई डूमा का एक फटा उपन्यास 'रानी का हार' पढ़ रही थी और सिगरेट पी रही थी। इस घर भर मे सिर्फ एक जेनी को ही पढ़ने का शौक है। सच तो यह है कि उसे पढ़ने का व्यसन-सा है। जो कोई भी किताब उसे पढ़ने को मिल जाती है, उसी को वह पढ़ने लगती है। परन्तु इस प्रकार बहुत से अण्ड-बण्ड उपन्यास पढ़ने पर भी उनका उसके दिलो-दिमाग़ पर। जैसी कि ऐसी दशा मे आशा की जानी चाहिये थी, कोई असर नहीं हुआ है। उसे खासकर चन्द्रकान्ता की तरह रहस्य-पूर्ण उपन्यास अधिक प्रिय हैं जिनमें बड़ी होशियारी से धीरे-धीरे रहस्यों को ग्रन्थियाँ खोली जाती है। मारपीट की कहानियाँ जिनमें बहादुर अपनी आन से नहीं हटते अथवा उदारता के किस्से, जिनमें मुख्य अभिनेता सोने की मुहरो से ठसाठस भरी हुई थैलियाँ, अपने दायें-बायें बिखराते हुये चले जाते है अथवा राजा-महाराजाओं के स्त्रियो से प्रेम के किस्से उसे बहुत ही प्रिय थे। परन्तु अपने रोजमर्रह की ज़िन्दगी में वह ऐसे किस्से पढ़ते रहने के बाद भी संजीदा और ऐसी बातों का मज़ाक उड़ानेवाली, अमली और भयङ्कर निराशावादी ही थी। इस घर की दूसरी लड़कियाँ उसके साथ वैसा ही व्यवहार करती थीं जैसा कि स्कूल में सबसे मजबूत लडके अथवा उसी दर्जे मे फिर रहनेवाले लड़के अथवा सबसे सुन्दर लड़की का होता है जो कि सब पर हुक्म चलाती और ज़ुल्म करती है, परन्तु फिर भी पुजती ही रहती है। वह लम्बी, पतली, सुनहरी बालों और सुन्दर कन्जी आँखों की है और उसका मुँह छोटा

और घमण्डी है और उसके ऊपरी होंठ पर थोड़ी-सी रेख है और गालों पर गहरी अस्वस्थ लाली है।

मुँह मे सिगरेट दबाये, धुयें से बचाने के लिये आँखे घुमाती हुई, उँगली गीली करके वह पड़ी-पड़ी पृष्ठ पर पृष्ठ उलटती चली जा रही है। उसकी टाँगें टखनों तक खुली हुई है और टखने बहुत बड़े और देखने में भद्दे लगते हैं। पैर के अंगूठों के नीचे भी बुरे ढङ्ग के मास के गट्ठे हैं।

इन सबके साथ टमारा नाम की एक और लड़की भी पल्थी मारे, कमर झुकाये बैठी-बैठी कुछ सी रही थी। वह एक शान्त-स्वभाव की, आराम पसन्द, सुन्दर लड़की है, जिसका रंग थोड़ा लाल है और उसमें वह गहरी चमक है जो कि जाड़ों में लोमड़ियो की पीठ के बालों पर आ जाती है। उसका असल में नाम ग्लीसेरा या लुकेरिया है जैसा साधारण लोग पुकारते हैं। चकलों का पुराना रिवाज है कि वहां आने वाली लड़कियों के साधारण गवांर नाम बदल कर उनके आकर्षक और प्रिय नाम रख दिये जाते है। अस्तु लुकेरिया या ग्लीसेरा के स्थान में इस लड़की का नाम भी टमारा रख दिया गया था। टमारा पहिले एक ईसाई महिलाश्रम की निवासिनी थी, जहाँ धार्मिक काम करने के लिये पादरी स्त्रियाँ तैयार की जाती हैं। वह शायद वहाँ कुछ दिन तक एक शिष्या की तरह ही रही थी; क्योंकि उसके चेहरे पर अभी तक उस झिझक और चतुर लज्जा की झलक क़ायम थी जो कि ऐसे आश्रमों की नवीन निवासिनियों के चेहरो पर प्रायः होती है। टमारा इस घर में दूसरों से कटी-कटी रहती है, न तो किसी से वह अधिक बातें ही करती है और न किसी को अपने पिछले जीवन के भेद ही बताती है। आश्रम में जाने के पहले उसके जीवन में अवश्य बहुत-सी घटनायें हुई होगी; क्योकि उसके धीरे-धीरे बातें करने के ढङ्ग मे, उसके निगाहें बचा-बचा कर अपनी लम्बी और झुकी हुई भृकुटियों के नीचे से गहरी और सुनहरी आँखों से देखने के तरीक़े में, उसके रङ्ग-ढङ्ग में और उसकी एक नई बननेवाली साधुनी की लज्जापूर्ण, परन्तु ढीठ चालाकी से भरी मुस्कानो और बातों में कोई बात बड़ी रहस्यपूर्ण, गुप्त और अपराधपूर्ण थी। एक बार इस घर की तमाम दूसरी लड़कियों ने भौंचक होकर सुना कि टमारा फ्रेञ्च और जरमन भाषा दोनों ही धाराप्रवाह बोल सकती है। उसके अन्दर एक प्रकार की गुप्त और दबी हुई शक्ति थी। वह अपने व्यवहार में ऊपर से नम्र है और किसी से कुछ नहीं कहती। फिर भी सब उससे सँभल कर बात करते हैं और दूर ही दूर रहते हैं—मालकिन, उसकी सहायक दोनों स्त्रियाँ और द्वारपाल जो कि चकलों

का पूरा सुल्तान हो होता है और जिससे सभी डरते हैं, सबका टमारा के प्रति ऐसा ही व्यवहार है।

'यह लो मैंने काट लिया तुम्हारा शाह' यह कहते हुए ज़ो ने अपने पत्तों मे से इक्का निकाल कर उसके शाह पर लगा दिया। मनका ने खिसिया कर कहा, 'अच्छा ! अच्छा ! काट लो शाह ! तुम सब दाँव-पेंच अच्छी तरह जानती हो न ! अच्छा टमारा, अब तुम मेरी तरफ़ से पत्ते चलना। मैं चुपचाप देखूँगी।'

ज़ो ने पुराने, काले, चिकने पत्ते फेंटकर मनका से पत्ते कटाये और फिर अपनी उँगलियाँ मुँह से गीली करके उन्हें बाँटने लगी।

टमारा सीती-सीती इधर मनका को अपना हाल सुना रही थी, हम वेदी पर बिछाने के कपड़ों पर और देवताओं और गुरु जी के कपड़ों पर सुनहरी धागों से बेल, बूटे और क्रास के चिन्ह काढ़ा करती थी। जाड़ों के दिनों मे खिड़कियों के पास बैठे-बैठे हम सब काढ़ती थीं। खिड़कियों के शीशे छोटे-छोटे होते थे और उनमे से बहुत कम रोशनी आती थी। कमरे के अन्दर लैम्प के तेल, धूप और सनौवर की महक भरी होती थी। बातें करने की हम लोगों को इज़ाजत नहीं होती थी, क्योंकि हमारी गुरूआनी, हमारी धर्म-माता बड़ी सख्त थी। हममें से कोई-कोई ऊबकर बाइबिल की एक दो आयतें गाने लगती थीं ; हे ईश्वर तुम्हारे स्वर्ग में...हम लोग बहुत अच्छी तरह, बड़े सुन्दर राग गाते थे और चारो ओर ऐसी अच्छी सुगन्ध होती थी। खिड़कियों के बाहर गिरती हुई बर्फ के फाहेले दिखाई देते थे। बड़ा अच्छा लगता था ! परन्तु अब तो वह सब एक स्वप्न...'

जेनी ने अपना फटा हुआ उपन्यास पेट पर रख कर ज़ो के सिर के ऊपर से अपना सिगरेट फेंककर, चिढ़ाते हुये कहा, 'हाँ, आप लोगों के वहाँ के शान्त और सुखमय जीवन का हाल हम सभी को मालूम है। गुसलखानों में वहाँ भ्रूण हत्यायें की जाती हैं। तुम्हारे इन पवित्र आश्रमों में खूब राक्षसी काण्ड होते हैं।'

'लो मैंने भी तुरुप लगाया ! काट लिया तुम्हारा शाह ! लाओ अब मैं पत्ते बाँटूगी।' नन्ही मनका ज़ोश से ताली बजाकर चिल्लाई।

जेनी के शब्द सुनकर टमारा मनही मन ही मन मुस्कराई जिससे उसके होठों के किनारों पर ज़रा-ज़रा ऐसे बल पड़ गये जैसे कि प्रख्यात चित्रकार ल्योनार्डो डा विन्सी के प्रख्यात मोनालिज़ा के चित्र में सुन्दरी के मुख पर दीखते हैं

'लोग इन आश्रमों के बहुत से किस्से सुनाते हैं। कभी एक-आध बार कोई ऐसी बात हो भी गई...'

'पाप न होगा तो फिर पछतावा करने के लिये क्या रह जायगा' ज़ो ने गम्भीरता से कहा और फिर अपनी उङ्गली मुँह में गीली की।

बैठकर सीने में आँखों पर ही ज़ोर पड़ता था, परन्तु सवेरे खड़े-खड़े प्रार्थना करने से पीठ दुखने लगती थी और टांगों में दर्द होने लगता था। और शाम को फिर वैसी ही प्रार्थना में भाग लेना होता था। धर्म-माता के द्वार पर हम लोग जाकर खटखटाते थे और पुकार कर कहते थे, 'हे ईश्वर, हमारे मालिक और बाप, सन्तों की प्रार्थना सुन और हम पर रहम खा।' और अन्दर से धर्म-माता उत्तर में कहती थी, 'आमीन।'

जेनी ने टमारा की तरफ़ टकटकी लगाकर कुछ देर तक ध्यान से देखा और फिर सिर हिलाती हुई कहने लगी :

"तुम भी बड़ी विचित्र औरत हो, टमारा! मुझे तुमको देखकर आश्चर्य होता है। खैर, मैं उन मूर्खों की, सोन्का की तरह मूर्खों की, प्रेम-क्रीड़ा तो समझ सकती हूँ; परन्तु तुम तो हर तरह की भूभल में झुलस चुकी हो, तुम तो हर तरह के पापड़ बेल चुकी हो, तुम इस मूर्खता में कैसे फँसती हो?'

टमारा धीरे-धीरे अपना सिलाई का काम अपने घुटने पर रखकर ठीक करती हुई, उसकी बखिया सुई से दबाकर सुधारती हुई, अपना सिर एक तरफ थोड़ा झुका कर, आँखें नीची किये-किये बोली :

'कुछ तो करना ही चाहिये। बैठे-बैठे जी ऊबने लगता है। ताश खेलना मुझे पसन्द नहीं है।'

जेनी सिर हिलाती रही और बोली :

'सचमुच तुम बड़ी विचित्र हो! मेहमानों से भी तुम हम सबसे अधिक रुपया पाती हो। मगर तुम मूर्ख हो। रुपया बचाकर तो नहीं रखती, उससे व्यर्थ चीज़ें ख़रीद-ख़रीदकर उसे बर्बाद कर डालती हो। सात रुपये की एक शीशी इत्र की ख़रीद लेती हो। भला बताओ उसको किसे ज़रूरत है? यह पन्द्रह रुपये का तुमने रेशम ले लिया है। यह तुमने अपने सेनका के लिए ही लिया है न?'

'हाँ! सेनका ही के लिए, अवश्य!'

'कैसा अच्छा रत्न तुमने ढूँढ़ा है! सेनका! अभागा चोट्टा! कैसा घोड़े पर चढ़ कर योद्धाओं की भाँति यहाँ आता है! तुझे पीटता वह क्यों नहीं? चोरों को पीटना बहुत पसन्द होता है। वह तुझे खूब लूटता है, समझती है?'

'मैं, जो उसे देना चाहती हूँ, उससे अधिक वह मुझसे नहीं ले सकता।' टमारा ने

एक रेशम के धागे को दाँत से चीर कर दो भाग करते हुए नम्रता-पूर्वक कहा :

'इसी पर तो मुझे आश्चर्य होता है। तुम्हारी जैसी बुद्धि और सुन्दरता मेरे पास होती तो मैं ऐसे मेहमान के चारो ओर ऐसा जाल बिछाती कि वह मुझे लेकर घर-गृहस्थी बनाकर बैठ जाता और फिर मेरे पास अपने घोड़े होते जिन पर मैं रोज़ चढ़ती और हीरे और जवाहरात होते, जिन्हे मैं पहिना करती।'

'हर एक को अपनी-अपनी पसन्द होती है, जेनेका ! तुम भी बड़ी सुन्दर और प्यारी छोकरी हो। तुम बड़ी बहादुर और स्वतन्त्र चरित्र की भी हो और फिर भी तुम और मैं दोनो ही इस अन्ना के घर में आ पड़े हैं !'

जेनी क्रोधित होकर चिढ़कर कहने लगी, "हाँ ! क्यों नही ! तुम्हें किस चीज़ की कमी है ?...अच्छे-अच्छे मेहमान सब तुम्हारे पास ही आते हैं। तुम्हारी जो इच्छा होती है, उनके साथ करती हो। मगर मेरे पास तो निरे बूढ़े खूसट या दुधमुहें बालक ही आते है। मेरा भाग्य ही बुरा है ! मेरे पास तो ऐसे ही आते है जो जीवन खो चुके होते हैं अथवा जिनमें अभी तक जीवन आया भी नहीं होता। मुझे छोटे-छोटे लड़कों से जो मेरे यहाँ आते हैं, बड़ी घृणा होती है। वे आते है और जल्दी-जल्दी कायर की तरह, काँपते हुये काम पूरा कर डालते है और फिर लज्जा के मारे आँखें भी ऊपर को नहीं उठाते। वे आत्म-ग्लानि से ही मरे जाते हैं। जी में तो आता है कि उनके मुँह पर तान-तान कर तमाचे लगाऊँ। रुपया भी देने से पहले ऐसा दबाकर जेब में पकड़े रखते हैं कि हाथ मे लेने पर वह बिल्कुल गर्म और पसीने से भरा होता है ! दुधमुँहें कहीं के। उनकी मा स्कूल में मिठाई खाने को दाम देती है जिसमें से बचा-बचाकर वे वेश्याओं के लिए रखते हैं। कुछ रोज़ हुए मेरे पास एक ऐसा ही सैनिक विद्यार्थी आया था। मैंने जान-बूझ कर चिढ़ाने के लिए उसे कुछ मिठाई देकर कहा—मेरे प्यारे ! मैंने तुम्हारे लिए यह थोड़ी-सी मिठाई मँगाकर रक्खी है। इसीलिए जाओ ! रास्ते में इसे खाना।' पहिले तो उसने बुरा माना ! मगर फिर उसने वह मिठाई मुझसे लेली। जब वह घर से निकला तो मैं ज़ीने पर से झुककर देखने लगी कि क्या करता है। गली में पहुँचते ही उसने इधर-उधर देखा और गप्प से मिठाई मुँह में ! सूअर कहीं का !'

'लेकिन बूढ़ों से तो पाला पड़ने पर और भी बुरा हाल होता है,' नन्ही मनका ने कनखियों से ज़ो की तरफ़ देखते हुए धीमी आवाज़ में कहा : 'क्यों न ज़ो ?'

ज़ो ताश खेलना खत्म कर चुकी थी और जँभाई लेने की तैयारी कर रही थी। उसको अब अपनी जँभाई रोकना कठिन हो गया ! उसे कुछ पता नहीं चल

रहा था कि वह गुस्सा करना चाहती थी अथवा हँसना चाहती थी। उसके पास रोज़ एक बूढ़ा बराबर आया करता है जो कि बड़ी अच्छी हैसियत का आदमी है और जो बहुत से बच्चों का बाप है। परन्तु उसको अस्वाभाविक विषय-भोग की लत है। इस चकले के सभी निवासी उस बूढ़े के ज़ो के पास रोज़ आने का खूब मज़ाक उड़ाते हैं।

ज़ो आखिरकार जँभाई लेकर भर्राई आवाज़ से बोली: "भाड़ में जाओ तुम सब! और तुम्हारे साथ वह बूढ़ा भी। मेरी समझ में उस बूढ़े की पहेली नहीं आती!'

मगर जेनी ने फिर भी अपनी बातचीत जारी ही रक्खी। वह कहने लगी, "मगर सबसे ख़राब तो ज़ो, तुम्हारे बूढ़े से भी ख़राब और मेरे छोकरे से भी ख़राब यह प्रेमी बनने वाले होते हैं! बताओ तो इससे क्या खुशी किसी को मिल सकती है कि वह शराब पीकर आये, ढोंग करे, अपनी क्रीड़ाओं का तुम्हें शिकार बनावे और ऐसा बने मानो उसमें सचमुच कुछ है; परन्तु तत्व उसमें कुछ नहीं होता। कैसा बना हुआ लौंडा है! निरा गन्दा, मैला, बदबूदार और शरीर भर पर काले-काले दाग़ लिये हुए! उसकी शान बस एक ही बात की है कि टमारा रेशम की कमीज़ उसके लिये काढ़ रही है, उसे पहिनकर वह निकलेगा। वह कुत्ते का बच्चा सबको मा की गाली देता है और हर एक से लड़ाई मोल लेने को उसका हाथ खुजलाता रहता है! छीः छीः छीः!' कहकर वह यकायक मज़ाकिया आवाज़ में बोल उठी, 'मेरी मनका! मेरी प्यारी दूध की तरह सफ़ेद नन्ही मनका! मैं तुझे जी-जान से प्यार करती हूँ! और सदा ऐसा ही प्यार करती रहूँगी! मेरी छोटी मनका! मेरी हँसोड़ी गपोड़ी मनका!'

यह कहकर उसने मनका को अपने सीने से चिपटा लिया और उसे अपनी तरफ़ घसीटकर, खाट पर लिटा दिया और ज़ोर-ज़ोर से उसके बाल, उसकी आँखों और उसके होठों को चूमने लगी। मनका ने बड़ी मुशकिल से अपने आपको उससे छुड़ाया और अपने बिखरे हुये चमकीले बाल और खींचा-तानी से लाल हो जाने वाले चेहरे को लिये हुये शर्म और हँसी के मारे आँखें नीची करलीं।

'छोड़ो जेनी! छोड़ दो मुझे! हाय, मैं क्या करूँ! जाने दो मुझे!'

'नन्ही मनका इस चकले भर में सबसे नम्र और शान्त छोकरी है। वह सबसे स्नेहपूर्ण व्यवहार करती है, सबकी बात मान लेती है, और किसी की कोई प्रार्थना अस्वीकार नहीं कर सकती जिससे दूसरे सब भी उससे बड़ा स्नेह का व्यवहार करते

हैं। वह ज़रा-ज़रा-सी बात पर लजाती है और लजाते हुए विशेष सुन्दर लगती है। लेकिन जब वह तीन-चार ग्लास अपनी प्रिय शराब के चढ़ा जाती है तब उसकी शक्ल ही बिलकुल बदल जाती है और वह मरने मारने पर उतारू हो जाती है और इतना ऊधम मचाती है कि अक्सर चकले की चची या ख़ाला को या द्वारपाल को यहाँ तक कि पुलिस तक को उसको क़ाबू में रखने के लिए आना पड़ता है। नशे में हो जाने पर मेहमान के मुँह पर तमाचा जड़ देना, उसके मुँह पर शराब का गिलास मार देना या लैम्प उलट देना अथवा मालकिन को गालियाँ सुनाना उसके लिए बड़ी साधारण बातें होती है। जेनी को उससे एक विचित्र-सा स्नेह है यहाँ तक कि वह उस पर फ़िदा-सी है।

'खाना तैयार है! खाना तैयार है!' जोशिया रास्ते में से चिल्लाती हुई निकल गई। दौड़ते-दौड़ते उसने मनका का द्वार खोला और उसमें जल्दी से घुसकर बोली, 'खाना तैयार है, श्रीमती!'

सबकी सब छोकरियाँ उसी प्रकार पेटीकोट और कुर्तियाँ पहिने, बिना हाथ-मुँह धोये, स्लीपर पहिने अथवा नङ्गे पाँवों ही, रसोईघर में इकट्ठी हो गईं। अच्छा-अच्छा खाना सबके सामने रख दिया गया, परन्तु किसी को भूख नहीं मालूम देती क्योंकि सब लगभग दिन-भर बैठी रहती है और रात को ठीक-ठीक सो भी नहीं पातीं। दूसरी बात यह भी थी कि जिस प्रकार स्कूल की लड़कियाँ छुट्टी में मिठाइयों से पेट भर लेती हैं, इन छोकरियों ने भी बाज़ार से हलवा और मिठाइयाँ मँगाकर काफ़ी पेट भर लिये थे जिससे इस समय किसी को भूख नहीं लग रही थी। सिर्फ़ नीना नाम की एक छोटी, गद्धर नाक वाली, ख़ुर्राटे भरनेवाली गँवारू लड़की, जिसको एक व्यापारी भगाकर दो ही महीने हुए चकले में बेच गया था, चार के हिस्से का खाना खा रही थी। उसकी भूख—गाँव की साधारण औरत की भूख—अभी तक मरी नहीं थी।

जेनी जो खाना चख-चख कर खाने का बहाना कर रही थी, दिखावटी स्नेह दिखाती हुई नीना से बोली :

'नीना प्यारी, मेरा खाना भी तुम्ही खालो। खालो मेरी प्यारी। शर्माओ मत। तुम्हें अपनी तन्दुरुस्ती का ख़्याल रखना चाहिये। मगर बहिनों देखो, मुझे तो इसके पेट में केंचुए लगते हैं। केंचुए जिसके पेट में भी होते हैं, उसे दुगना खाना खाना पड़ता है—आधा अपने लिए और आधा केंचुओं के लिए।'

नीना क्रोधित होकर ख़ुर्राटे भरती हुई ऐसी मोटी आवाज़ में नाक से बोलती

है कि उसका छोटा क़द देखते हुए उसके मुँह से इतनी मोटी आवाज़ का निकलना आश्चर्यजनक लगता है।

'मेरे पेट में तो केंचुए नहीं हैं। तुम्हारे पेट में लगते हैं। इसी से तुम इतनी सूखी-साखी हो!'

यह कह कर वह फिर निश्चिन्त होकर खाने लगती है। खा चुकने पर उसे ऊँघ लगती है और वह एक अजगर साँप की तरह ज़ोर से साँसें भरने लगती है। बार-बार पानी पीती है, हिचकियाँ लेती है, और दूसरों की नज़रों से छिपाकर अपने मुँह के सामने उङ्गलियों से क्रास का चिन्ह बनाती है जो कि उसकी एक पुरानी आदत है।

इतने में जोशिया की आवाज़ टनटनाती हुई आती है—'पोशाकें पहनिए श्रीमती! पोशाकें पहनिए! अब बैठने का समय नहीं रहा। काम का समय हो गया है!'

और कुछ ही मिनिटों में चकले के सभी कमरों से बालों के झुलसने की और बोरिक थायमल साबुन की और सस्ते क़िस्म के यू-डी-कोलोन की गन्ध आने लगती है। छोकरियाँ अपने-अपने कमरों में तैयारी करने लगती हैं।

चौथा अध्याय

संध्याकाल की लालिमा आकाश मे छा रही थी और अँधियारी और गरम रात अपने पंख फैलाती हुई आ रही थी। रात हो जाने पर भी, लगभग आधी रात तक, लालिमा आकाश में छाई रही। चकले के द्वारपाल सिमियन ने बैठक की सारी बत्तियाँ और कन्दील जला दिये थे और ज़ीने के द्वार पर लटकने वाली लाल लालटेन भी जला दी थी। सिमियन पतले, परन्तु सुगठित शरीर का, गम्भीर, कठोर, सीधे और चौड़े-चौड़े कन्धों और काले-काले बालों का, चेचकरूह आदमी था। उसकी भौंएँ और मूछें चेचक से जगह-जगह कुतरी हुई थीं और उसकी आँखें काली-काली सुस्त और गुस्ताख़ थीं। दिन भर वह ख़ाली रहता था और सोया करता था, परन्तु रात को वह द्वार पर बत्ती के नीचे बराबर बैठा रहता था जिससे कि आनेवाले मेहमानों को फौरन कोट इत्यादि उतारने मे सहायता करे, उन्हें खातिर से ले जाकर बैठक में बैठाये, और कोई झगड़ा-बखेड़ा हो तो मुस्तैद रहे।

रात होते ही पियानो बजाने वाला उस्ताद भी आ जाता था। वह एक लम्बे कद का शानदार नौजवान था. जिसकी भौएँ और पलकों के बाल सफेद थे और एक आँख में फुली थी। जब तक मेहमान नहीं होते थे, वह और इसाय मिलकर एक प्रचलित नाच की धुन की गतें अपने साज़ पर बजाते थे। परन्तु मेहमान जब उन्हें बजाने का हुक्म देते थे तो हर गत के लिए मेहमानों को इन्हें आठ आने या उससे कम, जैसी गत हो उसके अनुसार, देने होते थे। इसमें से आधे दाम मालकिन अन्ना के हो जाते थे और बाक़ी आधे इन दोनो उस्तादों में बराबर-बराबर बँट जाते थे।

इस प्रकार पियानो बजाने वाले को जो कि वास्तव में उस्ताद था, इस कमाई का सिर्फ़ एक चौथाई भाग ही मिलता था जो कि सरासर अन्याय था, क्योंकि इसाय उस्ताद तो क्या, निरा ढोंगी था और जहाँ तक सङ्गीत का सम्बन्ध था, बिल्कुल कुन्दये नातराश था—उसके कान सङ्गीत की धुनें उतनी ही समझते थे जितनी कि एक लकड़ी का टुकड़ा समझता है। बेचारे पियानो बजाने वालों को बार-बार उसे इशारे कर-करके स्वर में लाना होता था और जब ऐसा करने पर भी वह स्वर में नहीं बजा पाता था तो बेचारा पियानो बजानेवाला मजबूरन ज़ोर-ज़ोर से पियानो की टंकारें निकालने लगता था और इन ज़ोर-ज़ोर की टङ्कारों में उसके ऊट-पटाग स्वरों को डुबो देता था। इस चकले की छोकरियाँ मेहमानों मे अपने पियानो के उस्ताद का ज़िक्र अभिमान से करती हुई कहती थीं कि हमारे उस्ताद ने सङ्गीत विद्यालय में बाकायदा शिक्षा पाई थी और वे हमेशा अपने दर्जे में अव्वल रहते थे। चूँकि वे यहूदी थे और उनकी आँखें भी ख़राब रहने लगी थीं इससे वे वहाँ से अपनी शिक्षा पूरी करके उपाधि नहीं ले सके। पियानो के उस्ताद का सभी छोकरियाँ ख्याल रखती थीं और उससे सँभल कर कुछ-कुछ तरस खाने का-सा, ज़रा नागवार मालूम होने वाला-सा, स्नेह का व्यवहार करतीं थीं जो कि चकलों के शिष्टाचार के अनुसार भी होता था; क्योंकि चकलों में भी तो आख़िर ऊपरी बेहूदगियों और गाली-गलौज के नीचे वही ज़नाना और मीठा स्नेह रहता है जो कि स्त्रियों के आश्रमों में और जैसा कि सुना जाता है कि स्त्रियों की जेलों में भी रहता है।

अन्ना के चकले की सारी लड़कियाँ पोशाकें पहिन कर मेहमानों के स्वागत के लिये तैयार हो चुकी थीं और बेकाम बैठी-बैठी इन्तज़ारी से ऊब रही थीं। यद्यपि यहाँ की स्त्रियों की सभी आदमियों के प्रति, सिर्फ़ अपनी पसन्द के कुछ चाहने वालों को छोड़ कर—बिल्कुल उदासीनता, यहाँ तक कि नाक भौंएँ सिकोड़ने वाली उदासीनता-सी रहती थी ; फिर भी शाम होते ही उनके मन में तरह-तरह की धुँधली आशाएँ उठने लगती थीं। जिससे उनमें एक नया जीवन-सा आ जाता था। यह किसी को मालूम नहीं रहता था कि आज रात को उसका किस से पाला पड़ेगा। अस्तु हर शाम को आशायें होने लगती थीं कि मुमकिन है आज रात को कोई ख़ास बात हो जावे। कोई असाधारण आनन्ददायक, आकर्षक घटना हो जाय, शायद कोई मेहमान अपनी उदारता से आश्चर्य-चकित कर दे अथवा कोई ऐसा अनहोना करिश्मा हो जावे कि जिससे बिल्कुल शायद जीवन ही एकदम बदल जाय। इन आशाओं और कल्पनाओं के पीछे भी वही भावना होती थी जो कि एक अनुभवी

जुआरी के हृदय मे जुआ खेलने के लिये चलने से पहिले रुपये गिन-गिन कर अपनी थैली मे भरने के समय होती है। यद्यपि विषय-भोग इन अभागी स्त्रियों का पेशा ही हो गया था फिर भी उनमें स्त्रीजाति की मनुष्य को प्रसन्न करने की परम भावना अभी तक मरी नहीं थी।

और वास्तव में रोज़, तरह-तरह के विचित्र, हास्यास्पद लोग आते थे और तरह-तरह की घटनायें घटा करती थी। यकायक जासूसों के साथ पुलिस आ धमकती थी और आकर रईस और शरीफ़ दीखने वाले मेहमानों को गिरफ्तार कर लेती थी और उन्हें धकियाती हुई बाहर निकाल ले जाती थी। कभी-कभी चकलों के द्वारपालों और शराबी मेहमानों की आपस में फौजदारियाँ होती थी। किसी एक द्वारपाल से झगड़ा शुरू होता था और दूसरे द्वारपाल उसकी मदद को दौड़ते थे और गली में भारी जमाव हो जाता था, जिसमे सिर फुटव्वल होने के साथ खिड़कियों के शीशे टूट जाते थे। पियानो के तख्ते और कुर्सियों के पाये हवा में उड़ते दिखाई देते थे और बैठकों के लकड़ी के फर्श खून से लाल हो जाते थे और फटे हुये सिरों और टूटी हुई पसलियों के लोग, द्वार के बाहर गली की धूल मे लोटते हुये नज़र आते थे। यह नज़ारे जेनी को बहुत पसन्द थे और इस प्रकार के झगड़े शुरू होते ही वह खुशी से कूद उठती थी और उछलती हुई और अपने कूले पीटती हुई बिल्कुल भीड़ में जा घुसती थी और वहाँ खड़ी होकर सबको खूब गालियाँ सुनाती थी। जब कि उसकी सङ्गिनियाँ डर से चीखती और चिल्लाती हुई चारपाइयों के नीचे छिप जाने का प्रयत्न करती थीं।

कभी-कभी ऐसा भी होता था कि किसी मज़दूर-संस्था का कोई सदस्य अपने पिट्ठुओं की टोली लिये आ धमकता था या कहीं से रुपया ग़बन करके व्यभिचार और जुये में उड़ा देनेवाला, भागा हुआ मुनीम आ पहुँचता था जो कि जेल में जाने अथवा खुदकुशी करने से पहिले, शराब के नशे में धुत्त आखिरी रुपयों को बर्बाद कर देने के लिए उतावला होता था। ऐसे मौकों पर चकले के द्वार और खिड़कियाँ कस कर बन्द कर दिये जाते थे और लगातार दो-दो रात और दिन तक रूसी वीभत्सता का ताण्डवनृत्य होता था, जिसमें एक भयङ्कर स्वप्न की तरह, उबा देनेवाली क्रूर चीत्कारों और रुदन के साथ स्त्रियों के अंगों से क्रीड़ायें होती थीं। यह स्वर्गीय रातें कहलाती थीं जिनमें नंगे, नशे से चूर, कमान के से पैरोंवाले, बालोंदार, बड़ी बड़ी तोंदवाले आदमी और लटके हुये शरीरों की, सूखी और पीली स्त्रियाँ साज़ पर वीभत्स नाच रचते थे। वे शराब पी-पीकर चारपाइयों और फर्शों

पर सुअरों की तरह लुढ़कते फिरते थे और कमरों की हवा शराब और गन्दे शरीरों से निकलनेवाले पसीने की बदबू से सड़ उठती थी।

कभी-कभी सरकस या अखाड़ों के पहलवान भी आते थे जिनके आने पर यहाँ के निवासियों पर वैसा ही असर होता था जैसा कि एक घोड़े को कमरे के भीतर लाकर खड़ा कर देने पर होता है। कभी-कभी नीली पतलून और सफेद मोज़े चढ़ाये हुए कोई चीनी आ जाता था जिसकी लम्बी चोटी पीछे लटकती होती थी। कभी किसी होटल का हब्शी नौकर चारख़ाने की पतलून पहिने और अपनी जाकेट के बटन के एक छेद में फूल घुसेड़े आ जाता था। उसके सीने पर लगा हुआ कालर बड़ा सख्त और चमकता हुआ सफेद होता था। छोकरियों को आश्चर्य होता था कि उसका यह चमकदार सफ़ेद कालर उसके काजल की तरह काले चमड़े से लगकर काला तो नहीं होता था, बल्कि उलटा और अधिक सफेद चमकता था।

ऐसे विचित्र आदमी आकर इन संभोग-लिप्त वेश्याओं को फिर से उकसाते थे और उनकी थकी हुई इच्छाओं को और उनकी पेशेवर उत्कण्ठाओं को उत्तेजित कर देते थे। सभी छोकरियाँ उनके पीछे-पीछे एक दूसरे को धकियाती हुई दौड़ती थी।

एक बार सिमियन एक काफ़ी उम्र के, अच्छी हैसियत के आदमी को लेकर बैठक में दाख़िल हुआ। उस आदमी में कोई ख़ास बात नहीं थी—उसका चेहरा पतला, कठोर और मनहूस लगता था, जिसमे गालों की हड्डियां बड़ी-बड़ी और बाहर को फोड़ों की तरह निकली हुई थी; उसका माथा छोटा, दाढ़ी नुकल, भृकुटियाँ भारी और एक आँख दूसरी से कुछ ऊपर उठी हुई थी। कमरे में घुसते ही उसने हाथ उठाकर क्रॉस का चिन्ह बनाने की चेष्टा की और कनखियों से कमरे के कोनों की तरफ़ देखा, परन्तु वहाँ किसी की मूर्ति नहीं थी। मूर्ति न होने से वह परेशान नहीं हुआ। उसने अपना हाथ नीचे गिरा लिया और फौरन व्यावहारिक ढङ्ग पर सबसे मोटी छोकरी किटी की तरफ़ बढ़ा और एक कमरे के द्वार की तरफ़ इशारा करके रूखी आवाज़ से हुक्म देता हुआ बोला, 'चलो अन्दर!'

उसके अन्दर चले जाने पर सिमियन ने, जिसके बारे में समझा जाता था कि दुनिया भर का ज्ञान उसे है, निमूरा को, जो इस समय उसकी मालकिन थी, फ़ख्र और रहस्य के साथ बतलाया कि आज का मेहमान वह मशहूर नागरिक है, जिसने पिछले वर्ष सरकारी जल्लाद की गैरहाज़िरी में उसका काम अंजाम देने के लिये स्वयंसेवक होने की सरकार को अर्ज़ी दी थी और ग्यारह बलवाइयों को दो दिन में

सवेरे ही अपने हाथों से फाँसियों पर लटका दिया था। नियूरा ने भय से आँखें घुमाते हुये यह ख़बर अपनी सभी सङ्गिनियों के कानों में कह दी। वीभत्स बात तो अवश्य थी परन्तु यह ख़बर सुनते ही सब छोकरियाँ मोटी किटी के प्रति ईर्षा करने लगीं और उन सब का मन एक सिर फिरा देने वाली उत्कण्ठा से दुख उठा।

आध घण्टे बाद जब जल्लाद कमरे से निकला और गम्भीरता-पूर्वक जाने लगा तो सब छोकरियाँ भौचक्कीं-सी द्वार तक आप से आप उसके पीछे गईं और जब वह गली में चला गया तो खिड़कियों में से उसे, जब तक वह आँखों सेओझल नहीं हो गया, देखती रहीं। फिर वे दौड़ती हुई किटी के कमरे में घुस गईं जहाँ वह अभी तक अपने कपड़े पहिन रही थी और उस पर तरह-तरह के प्रश्नों की बौछार करदी। वे एक नये भाव से, लगभग आश्चर्य से, किटी के मोटे, लाल, नङ्गे हाथों, सिमटे हुये बिस्तर और पुराने चिकने नोट को देखने लगी जो किटी उन्हें अपने मोज़े में से निकालकर दिखा रही थी। किटी कोई खास बात उन्हें उनके प्रश्नों के उत्तर में नही बता सकी। उसने उनके प्रश्नों का कारण न समझते हुये इतना ही कहा कि 'जैसे और आते हैं वैसा ही यह भी था।' मगर जब उसे मालूम हुआ कि उसके पास आने वाला मेहमान कौन था तो वह न जाने क्यों फूट-फूट कर रोने लगी।

यह मनुष्य जो कि अछूतों में भी अछूत था, इतना गिरा हुआ जितना कि मनुष्य कल्पना कर सकता है, यह मनुष्यों को फाँसी लगाने के लिये स्वयंसेवक बनने वाला मनुष्य उसके पास आता है और उससे गुस्ताखी का व्यवहार तो नहीं करता, परन्तु ऐसा रूखा, हिकारत और काठ की-सी लापरवाही का व्यवहार करता है जैसा कि कोई किसी मनुष्य से कभी न करेगा। मनुष्य तो दूर, किसी कुत्ते, घोड़े, छाते, ओवरकोट या टोप के साथ भी ऐसा लापरवाही का व्यवहार नहीं किया जाता। 'उसने उसके साथ एक गन्दे चीथड़े या ऐसे अपवित्र पदार्थ की तरह बर्त्ताव किया है, जिसका अनिवार्य होने पर इस्तेमाल तो कर लिया जाता है, परन्तु इस्तेमाल के बाद ज़रूरत निकल जाने पर, बेकार और गन्दी वस्तु समझ कर उसे दूर फेंक दिया जाता है। इस विचार ने मोटी केट को भी, जिसका दिमाग़ एक मोटी मुर्गी का-सा था, रुला दिया। यद्यपि उसकी समझ में बिल्कुल न आया कि वह व्यर्थ में क्यों रो रही है!

इसी प्रकार की और भी घटनाएँ इस चकले में होती थी जो यहाँ की अभागी, मूर्ख बीमार निवासिनियों के गन्दे नाले की तरह बहने वाले जीवन में खलबली पैदा करती थीं। कभी क्रूर ईर्षा के कारण पिस्तौलें चल उठतीं थीं और कभी किसी को

ज़हर खिलाकर मार डाला जाता था। कभी-कभी परन्तु बहुत कम, इस कूड़े के ढेर पर सच्चे प्रेम का भी फूल खिल उठता था और कभी-कभी कोई छोकरी अपने किसी प्रेमी के साथ भाग जाती थी। परन्तु आमतौर पर कुछ रोज़ बाद ही वह फिर वहाँ लौट आती थी। दो-तीन बार ऐसा भी हुआ कि कुछ स्त्रियों के हमल रह गये जो कि चकलों में बड़ी शर्म की बात समझी जाती है, परन्तु साथ ही गम्भीर भी।

ख़ैर कुछ भी हो, रोज़ शाम को तो चकले में ऐसा उत्तेजित, नमकीन और वसन्ती जीवन होता था कि उसके मुकाबले में यहाँ की आलसी स्त्रियों को, जिन्होंने अपना चरित्र और बुद्धि नष्ट कर डाली थी, दुनिया के और सारे जीवन फीके लगते थे।

पाँचवाँ अध्याय

अन्ना मारकोवना के घर में एक ऐसी घटना घटी, जिसका प्रारम्भ तो साधारण तौर पर हर रोज़ का-सा था, परन्तु जिसका अन्त एक ऐसी विचित्र पहेली में हुआ जो इस कटरे के निवासियों की समझ में न आ सकी।

जाड़े के दिनो मे एक दिन शाम को, कोई छः बजे होंगे, किसी ने ज़ोर से अन्ना के द्वार की घण्टी बजाई।

द्वारपाल सिमियन ने दर्वाज़े के छेद में से देखा कि एक स्त्री द्वार पर खड़ी थी। अस्तु, उसने द्वार खोलकर पूछा :

'किसको चाहती हो?'

'इस घर की मालकिन को।'

'क्या काम है?'

'उन्हीं से काम है। मैं भी इस घर में शामिल होना चाहती हूँ।'

'ज़रा ठहरो—मैं अभी मालकिन से कहता हूँ।'

उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया और दौड़ा हुआ ऐम्मा ऐडवार्डोवना के पास गया। ऐम्मा ने उससे विस्तार से पूछा कि औरत किस तरह की लगती है, कैसा उसका चेहरा है; कैसी उसकी पोशाक है; कहीं कोई सरकारी जासूस तो नहीं है? आखिरकार वह बोली :

'अच्छा, उसे यहाँ ले आओ। मगर तुम भी पास में ही मुस्तैद रहना, जिससे ज़रूरत पड़ते ही फौरन आ जाओ। मुझे ज़रूरत पड़ी तो मैं चिल्ला कर तुम्हें बुला लूँगी।'

औरत अन्दर आई। ख़ाला की तेज़, सब कुछ देख लेने वाली दृष्टि क्षण भर में उसके सारे शरीर पर घूम गई। ज़ाहिर था कि आनेवाली औरत पेशेवर नहीं थी। वह काले रेशमी कपड़े पहिने थी। उसके चेहरे पर किसी क़िस्म के बनावटी शृङ्गार के चिन्ह भी नहीं थे। उसका क़द ऊँचा नहीं था, परन्तु उसके अङ्गों का गठन सुन्दर था और उसमे नज़ाकत थी। उसका चेहरा भी चतुर और सुन्दर था, जिस पर पीले रङ्ग की सुन्दर झलक थी। आंखें चमकदार नीले रङ्ग की हिरनी की तरह चौकन्नी थीं।

'लगभग बीस वर्ष की होगी शायद', ऐम्मा ने अपने मन मे सोचा और फिर पूछा :

'आपकी क्या उम्र है, श्रीमती?'

'छब्बीस साल की।'

'सच? परन्तु इतनी उम्र तुम्हारी लगती तो नहीं है! क्या तुम्हें अपने कपड़े उतार देने में कुछ कठिनाई होगी?'

'सारे कपड़े उतार दूँ?'

'हां, सारे ही उतार दो—चोली भी। कमरा काफी गरम है। ठण्ड नहीं लगेगी!'

'बहुत अच्छा।'

औरत सारे कपड़े उतारकर बिल्कुल नङ्गी खड़ी हो गई और अपने नङ्गपन पर ज़रा भी न शर्माई।

'बड़े अच्छे स्वभाव की हो!' ख़ाला ने उसकी तारीफ़ करते हुये कहा, 'ऐसे मौक़ों पर स्त्रियाँ मर्दों से अधिक स्त्रियों के आगे शर्म दिखाया करती हैं!'

ऐम्मा ने औरत के अङ्ग-अङ्ग का अच्छी तरह शान्ति पूर्वक उसी प्रकार मुआयना किया जैसे पशुओं के व्यापारी बैलों को ख़रीदने से पहिले उनकी अच्छी तरह देख-भाल करते हैं।

'शरीर ताज़ा है।' ऐम्मा कहने लगी, 'छातियां भी कड़ी हैं। जाँघें और पिण्डलियां बहुत सख्त हैं। किसी ख़राब बीमारी के भी कोई चिन्ह नहीं दीखते गो कि इसका ठीक पता तो डाक्टरी मुआयना हो जाने के बाद ही लग सकेगा। ज़रा अपने दाँत तो दिखाओ। अच्छा, सिर्फ़ एक ही बना हुआ दाँत है। बस, अब अपने कपड़े पहिन लो!' उसने डाक्टर की तरह अपना मुआयना ख़त्म करते हुये कहा।

'तो फिर आप मुझे अपने यहाँ रक्खेंगी?' औरत ने पूछा।

ऐम्मा मुस्कराती हुई बोली :

'हाँ ! मगर बड़ी मुसीबत यह है कि हम उन औरतों को अपने यहाँ लेने से बहुत ही डरते हैं जो कि आज़ादी की ज़िन्दगी बसर कर चुकी होती हैं। हम उनसे बहुत घबराते रहते हैं !'

'घबराने की क्या बात है ? मैं तो अपनी मरज़ी से तुम्हारे यहाँ आई हूँ, कोई मुझे जबरदस्ती तो यहाँ लाया नहीं है।'

'मान लो कि ऐसा ही है, परन्तु पीछे से ऐसे रिश्तेदार हमेशा निकल सकते हैं जो तुम्हें ढूँढ़ते हुये यहाँ आ पहुँचेंगे या तुम्हारे दोस्त जिनसे तुम ख़त-किताबत करोगी, तुम्हें लेने आजावेंगे या कोई तुम्हारी जान-पहिचान का ही यहाँ आया तो वह तुम्हें पहिचान लेगा और जाकर सबको तुम्हारे यहाँ होने की ख़बर कर देगा।'

'नहीं, इसका भी डर नहीं है क्योंकि मैं तो सेण्टपीटर्सबर्ग की रहनेवाली हूँ और इस शहर में पहिली ही बार आई हूँ।'

'मुमकिन है ऐसा ही हो।' अविश्वास से अन्ना ने उसकी बात मानते हुये कहा : 'मगर एक और भी सन्देह की बात है। देखने से तुम किसी भले घर की लगती हो। तुम्हारे घर-गृहस्थी वाले होंगे...शायद तुम्हारे बाल-बच्चे भी होंगे।'

'नहीं, मैं अकेली हूँ,' औरत ने बहादुरी से कहा, 'मैं बिल्कुल आज़ाद हूँ। न मेरे घर-गृहस्थी है और न बाल-बच्चे और न कोई दोस्त। बहुत दिन हुए तभी मैंने अपने पति से तलाक़ लेली थी। अधिक बातों की क्या ज़रूरत है। मैं तुम्हारी सारी शर्तें मंजूर करती हूँ। बिल्कुल तुम्हारे रिवाज और नियमों के अनुसार ही रहूँगी। तुम मुझे काम में बड़ी उत्साही, बहुत आज्ञाकारी और सबसे नम्र पाओगी।'

'तुम्हारे इन वायदों को सुनकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है' मालकिन ने कहा, 'और इससे भी अधिक खुशी मुझे तब होगी जब तुम्हारे यह सारे वायदे पूरे होंगे ; क्योंकि अभी तक तुमने आज़ादी की ज़िन्दगी ही बिताई है और यहाँ जिस तरह तुम्हें रहना होगा, उसका तुम्हें अभी तक पूरा ज्ञान नहीं है।'

'मसलन !'

'मसलन तुम्हारा पासपोर्ट तुमसे ले लिया जायगा और पुलिस मे भेज दिया जायगा। पासपोर्ट तुम्हारे पास है ?'

'हाँ, मैं उसे तुम्हें अभी दे सकती हूँ।'

'सही पासपोर्ट है ?'

'बिल्कुल सही।'

'आहा ! तब तो बड़ा ही अच्छा है क्योंकि उसके बारे में पुलिस बड़े झंझट करती है। ...तुम्हारा पासपोर्ट तुमसे ले लिया जायगा और उसके स्थान मे तुम्हें पीला टिकट दे दिया जायगा, जिसमें स.फ़ अक्षरो मे तुम्हारा नाम, तुम्हारे बाप का नाम, तुम्हारे कुटुम्ब का नाम और तुम्हारा पेशा—वेश्या—लिख दिया जायगा। तुम्हारा पुराना पासपोर्ट पुलिस के पास ही रहेगा और उसे जब कभी वापिस लेना होगा तो बड़ी कठिनाइयों का सामना करना होगा।'

'मुझे उन मुसीबतों का सामना करने की कभी नौबत ही नही आवेगी।'

'अच्छी बात है और हर हफ्ते पुलिस की तरफ़ से डाक्टर आकर तुम्हारा मुआयना करेगा !'

'हाँ, यह मैंने सुना है। यह तो अक़्लमन्दी का काम है !'

'ठीक है, यह अक़्लमन्दी का काम है। मगर और भी बातें हैं। मैं समझती हूँ, यह तो जानती ही होगी कि बाइज़्ज़त औरतों को, ख़ासकर उनको जो प्रेम का व्यापार करती हैं, अपना शरीर ठीक रखने के लिए क्या-क्या करना होता है ? ख़ैर, यह बात छोड़ो ! तुम्हें यह पता है कि जो आदमी भी तुम्हें पसन्द कर लेगा उसके साथ तुम्हें बिस्तर पर सोना पड़ेगा, चाहे वह कितना ही बदसूरत या बदबूदार क्यों न हो ?'

'हाँ, यह बड़ी कड़ी शर्त है ; ख़ैर मैं अपनी आँखें बन्द कर लिया करूँगी या मुँह फेर लिया करूँगी। बस यही सारी बातें हैं या और भी कुछ ?'

'यही मुख्य बातें हैं। छोटी-मोटी कुछ और भी हैं। एक बात और साफ़-साफ पहिले ही से बतादो—जिससे हममें तुममें पीछे कोई ग़लतफहमी न हो—तुम्हे किसी नशे का शौक है ?'

'नहीं, मैंने आज तक कभी, स्वाद जानने के लिए भी, कोई नशा नही किया है। मैंने देखा है, नशे का लोगों पर कितना ख़राब असर होता है, जिससे मैं नशो से हमेशा दूर रही हूँ।'

'कभी थोड़ी शराब भी नही पीती ?'

'साथ में पड़कर, दूसरों के बहुत ज़ोर देने पर पी लेती हूँ, मगर अपने आप अकेली कभी नहीं।'

'यह बड़ा अच्छा गुण है।' मालकिन ने कहा, 'देखो श्रीमती, मैं तुमसे ऐसे ही बातचीत कर रही हूँ जैसे एक समझदार औरत दूसरी समझदार औरत से बातचीत करती है। तुम शराब नही पीतीं यह तो बड़ी अच्छी बात है, परन्तु हमारी इस

सम्मानित पेढ़ी में तुम मेहमानों से—ख़ासकर अमीर मेहमानों से—शराब पर खर्च करा सको तो यह बात बुरी नहीं समझी जायगी। यह ज़रा-सी काबलियत और चटपटी बातचीत से बड़ी आसानी से किया जा सकता है, जिससे तुम्हे भी बड़ा फायदा हो सकता है ; क्योंकि शराब की हर बोतल पर पाँच फ़ीसदी कमीशन तुम्हें भी मिलेगा। हां, मगर मेहमानों को इतना अधिक नशा न होने देने के लिए कि वे जानवर ही बन जावें, चरित्र और समझदारी की ज़रूरत होगी।'

'मैं भरसक प्रयत्न करूँगी।'

'अच्छा, तो मैं अब तुमसे एक समझ और दोस्ती की बात भी कहदूँ। बहुत से मेहमान ऐसे भी आवेंगे जो तुमसे तरह-तरह का गन्दा विषय-भोग करने का प्रयत्न करेंगे ! मुझे इन शब्दों के लिए आप क्षमा करें ! परन्तु हमारी पेढ़ी को इससे कोई गरज़ और मतलब न होगा कि तुमको कमरे में किसी मेहमान के साथ रहकर लौट आने के बाद, फिर तुम्हारे गुणों के लिए अथवा तुम्हें पसन्द करने के कारण वह तुम्हें क्या-क्या तोहफ़े देता है। हमें तो सिर्फ़ अपनी निश्चित फीस से और जो खाने-पीने का सामान मेहमान हमसे मँगायेगा, उसके दामों से ही ताल्लुक रहेगा। अस्तु कोई अच्छा मेहमान तुमसे अस्वाभाविक विषय-भोग करना चाहे तो तुम चाहो तो उसे टका-सा जवाब दे सकती हो। हम उसके लिए तुम्हें मजबूर नहीं कर सकते और न हमें ऐसा करने का कोई अधिकार ही है। हाँ, हमारे मुहामदे के अनुसार तुम किसी मेहमान से साधारण विषय-भोग के लिए 'न' नहीं कह सकतीं। ऐसा तुम करोगी तो वह हमारे मुहामदे के ख़िलाफ़ होगा। मगर मैं तुम्हें ऐसा गन्दा विषय-भोग चाहनेवालों के बारे में एक बात बता दूँ कि ऐसे लोग रुपया खूब देते हैं—तुम्हें मालामाल कर सकते हैं—और खाने पीने पर रुपया उड़ाने में तो ज़रा भी नहीं झिझकते ! जो कुछ तुम उनसे पाओगी वह लूट तुम्हारी होगी ! हमें तो जो कुछ भी अधिक मिलेगा, वह सिर्फ़ खाने-पीने की क़ीमत से ही मिलेगा। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इन सब बातों पर और अच्छी तरह, गौर से, सोच लें।'

'मैं और भी सोचूँगी—गौर करूँगी। मगर फिर भी एक बात तो मैं अभी कह दूँ—मेरी स्पष्टता के लिए मुझे माफ़ करना—कि हरएक के साथ विषय-भोग करना मेरे लिए बड़ा कठिन होगा—क्या हर एक के साथ करना ही होगा...?

'मैं तुम्हारी कठिनाई समझती हूँ। मगर तुम्हारी जैसी प्रिय सङ्गिनियों के लिए कभी-कभी इस नियम में ढील भी कर दी जाती है। किसी ख़ास आदमी से तुम विषय-भोग न करना चाहोगी तो तुम्हें उसकी फ़ीस के दाम और आठ आने खाने-

पीने के मुनाफे के लिए पेढ़ी को देने होंगे और तुम उस आदमी से विषय-भोग न करने के लिए आज़ाद होगी। हम मेहमान को यह कहकर टाल देंगे कि तुम्हारे महीने के दिन हैं।

वह कुड़बुड़ करेगा तो हम उसे पुलिस के क़ायदे दिखा देंगे जिसमें, बड़ी दूरदर्शिता से, इस काल के लिए यह काम वर्जित कर दिया गया है। मगर यह सहूलियतें हम उन्हीं छोकरियों को देते हैं जो कि हमारी पेढ़ी की शोहरत बढ़ाती हैं।'

'मैं आपकी पेढ़ी की शुहरत बढ़ाने की अज़हद कोशिश करूँगी जिससे कि आप मुझे ये सहूलियत आसानी से दे सकें।'

'तब ठीक है।' ऐम्मा ने शाही अदा से सिर हिलाते हुए कहा, 'मगर एक बात मैं तुमसे और पूछने की इजाज़त चाहूँगी—तुम यहाँ क्यों आना चाहती हो? आसानी से कमाई करने के विचार से? या तुम किसी कारण से अपने जीवन से निराश हो गई हो? या तुम किसी को चिढ़ाने, किसी का मान-मर्दन करने के लिए यह सब कर रही हो? अथवा इस प्रकार का जीवन देखने की एक महज़ पागलपन की उत्कण्ठा तुम्हारे हृदय में हो उठी है?'

'आह, श्रीमती जी—यह कारण तो मेरे लिए बड़े हक़ीर हैं।' आगन्तुक स्त्री ने दृढ़ता से कहा, 'मैं तुम्हें एकान्त मे अपना भेद बता दूँगी। है तो एक साधारण सा-ही कारण—मेरे मन में मर्दों के लिए एक हविस रहती है जो बुझाये नही बुझती। रोज़ नये-नये मर्द मुझे चाहिये। मै तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि यह कोई विषय-भोग सम्बन्धी मुझमे मानसिक रोग नही है। अधिकतर मर्दों की भी औरतों के लिए ऐसी ही इच्छा रहती है। मगर समाज में रहने के कारण लोगों को इस प्रकार की विषय-लोलुपता पूरी करना सम्भव नहीं होता, क्योंकि समाज के सैकड़ों और हज़ारों लोगों से हर आदमी की जान-पहिचान होती है। प्रेम करने के लिए समाज में पहिले तो लम्बी जान-पहिचान की आवश्यकता होती है, जिसमें काफ़ी विघ्न और बाधायें पड़ा करती हैं; फिर मजबूर होकर रज़ामन्दी का नाटक होता है; फिर प्रेम की उड़ानें जो धीरे-धीरे नीची होकर ज़मीन से आ लगती हैं और एकदम सपाट हो जाती हैं; तब नाटक का अन्तिम, परन्तु अनिवार्य्य दृश्य आता है जो उदासीन और पेचीदा होता है जिसमें ईर्षा, उलाहने, धमकियाँ और आंसुओं का मेह बरसता है। भाड़ में जाय ऐसा रोना-धोना! मै तो कभी नही रोती! मेरे मर्द को ही रोना होता है—वही रो-रोकर आत्म-हत्या की धमकी देने लगता है; और फिर जिस घटना का वर्षों से

इन्तज़ार होता है, वह होती है—नाटक का पटाक्षेप होता है—दोनो एक दूसरे से अलग हो जाते हैं अथवा वह चुपचाप छोड़कर भाग जाता है! छीःछी! धिक्कार है ऐसा जीवन! ऐसे जीवन से बचने के लिए ही मैं तुम्हारे यहाँ आ रही हूँ। तुम्हारे यहाँ यह कठिनाइयाँ मुझे न उठानी होंगी और आसानी से नित्य मर्द मिल सकेंगे। हाँ, मुझे बीमारियाँ हो जाने का तो ज़रूर डर लग रहा है...।'

'उसकी फिक्र मत करो। हमारे घर में बीमारियाँ होने की शहर से भी कम सम्भावना है। मैं तुम्हें कुछ तरकीबें भी बता दूँगी, और फिर ख़ाला ने व्यावहारिक ढङ्ग पर कहना शुरू किया:

'सच तो यह है कि तुम मुझे बहुत पसन्द आ गई हो। हमारी पेढ़ी में रहकर तुम चमक उठोगी। मगर जाओ एक दिन और अच्छी तरह सारी बातों पर सोच लो। शायद अच्छी तरह सोचने पर तुम्हारा मन फिर जाय? सोचकर कल फिर इसी समय आकर जवाब देना। तब मैं तुम्हें मालकिन से मिला दूँगी। हमसे तुम्हारा बस एक ही बात का मुहायदा होगा और वह यह कि तुम किसी ख़ास मर्द को अपना प्रेमी न बनाओगी—और सबसे अच्छा तो यह होगा कि रोज़ आने वाले मेहमानों में भी किसी खास से अधिक लगाव न रखना—सभी का सिर फिरा देने की एक-सी कोशिश करती रहना—बस!'

'मैं यह काम बहुत अच्छी तरह बड़ी खुशी से करूँगी! तुम देखोगी तुम्हें मेरे काम से सन्तोष होगा।'

'ऐसा करोगी तो तुम भी यहाँ बड़ी सन्तुष्ट और खुश रहोगी।'

'परन्तु एक छोटी सी प्रार्थना मेरी तुमसे है प्यारी...'

'मेरी प्यारी ऐम्मा ऐडवार्डोवना, मैंने अपना, मर्दों के लिए मेरी हविस का, जो भेद तुम्हें बता दिया है, वह मेरे और तुम्हारे बीच में ही बना रहे!'

'ज़रूर, ज़रूर! मरते दम तक तुम्हारा भेद मेरे ही साथ रहेगा। मेरे और तुम्हारे, दोनों के हक़ में यही ठीक होगा। अच्छा तो अब बन्दगी! कल तक तुमने अपना विचार न बदल दिया तो कल इसी वक्त फिर मुलाक़ात होगी।'

'मेरा विचार बदलना असम्भव है।'

दूसरे दिन यह नई औरत आकर अन्ना के चकले मे शामिल हो गई और इसको पाकर अन्ना भी खुश हुई। अकेला इसाय उसके वहाँ आकर रहने पर आश्चर्य-चकित था।

'यह पढ़ी-लिखी और अच्छे घर की लगती है।' वह कहता, 'ऐसे लोग बड़े

लाभरहित और निकम्मे होते हैं। ऐसे लोगों से आज तक न कोई काम बना और न बन सकता है। काम पड़ने पर ऐसे लोग जी चुराने लगते हैं। उनमें मेहनत और बर्दाश्त का माद्दा नहीं होता। ज़रा मेहनत पड़ी नहीं कि बीमार पड़े।' मगर कुछ दिन बाद वह भी उसका आदी हो गया और उसने अपना कुड़बुड़ाना बन्द कर दिया।

इस नई छोकरी का चकले में नाम मगदा रखा गया।

शुरू में चकले की दूसरी छोकरियों ने, जो पहिले से वहाँ रहती थीं, मगदा को छेड़ने, धमकाने और उसका मज़ाक उड़ाने का प्रयत्न किया। वे उस पर तरह-तरह के ताने कसतीं और उसे छोटी-छोटी बातों में सतातीं जैसे कि नये आनेवालों को हर जगह, स्कूलों में, कालिजों में, सैनिकों के दस्तों में और जेलों में भी—सताया जाता है। दुनिया का यही दस्तूर है।

मगर मगदा की आँखों और आवाज़ में एक ऐसी छिपी हुई ताकत-सी थी जिससे उस पर इस प्रकार के सारे हमले व्यर्थ हो जाते थे। अस्तु मगदा और दूसरी छोकरियों में झगड़े की कभी नौबत नहीं आती थी। मगदा सबसे नम्रता का व्यवहार करती थी और किसी की खुशामद और चापलूसी न करके सभी को खुश करने की कोशिश करती थी, परन्तु फिर भी किसी से उसकी घनिष्ठता न हुई। और वह अकेली, सबसे अलग-सी, न तो किसी की मित्र और न किसी की शत्रु, इस विचित्र दुनिया में अपनी जगह बनाकर रहने लगी। यह बात ज़रूर थी कि सभी उसको यहाँ इज्ज़त की नज़र से देखते थे; क्योंकि वह हमेशा सबको मदद करने, फायदा पहुँचाने, खिलाने-पिलाने और कर्ज़ा देने के लिए तत्पर रहती थी। मगर धीरे-धीरे चकले के निवासियों का उसमें रस कम होगया—शायद कभी कोई खास रस उनका उसमें था भी नहीं। वे उसको भूल-से गये, यद्यपि वे हर घड़ी उसको वहाँ देखते थे। एक टमारा अवश्य कभी-कभी मगदा के पास आ जाती थी और उसके बिस्तर पर बैठकर, दस पाँच मिनट बात करती और फिर असन्तुष्ट होकर चल देती।

'तुम तो पत्थर की तरह हो, मगदा!' वह उससे कहती, 'तुम्हारे दिल नहीं सुलगता!'

ऐम्मा वार्डोवना अपनी बात की पक्की निकली। उसने मगदा की मर्दों के लिए हविस का रहस्य किसी को नहीं बताया। मगर धीरे-धीरे ऐम्मा को एक बडी परेशानी होने लगी। मगदा कामयाब तो ज़रूर साबित हुई, क्योंकि अक्सर मेहमान उसे चुनते थे। वह आकर्षक थी और उन पर अपना प्रभाव डालती थी। अक्सर सबसे अमीर, हुनर में होशियार और शिष्ट मेहमान उसी को पसन्द करते थे।

परन्तु आश्चर्य की बात यह थी कि गोकि सभी उसकी तारीफ़ करते थे, कोई भी एक बार उसे चुनने के बाद दूसरी बार फिर नहीं चुनता था। 'यह क्या अजीब बात है?' अनुभवी ऐम्मा के मन में बड़ी चिन्ता रहने लगी, 'समझ में नहीं आता! सुन्दर है, चतुर है, बातचीत भी अच्छी करती है, प्रभावशाली है, मेहमानों से रुपया भी काफ़ी ख़र्च करा लेती है—फिर भी दूसरी बार उसे कोई नहीं चुनता!'

उसने कुछ मेहमानों से, जिनसे उसकी घनिष्ठता थी, जानने का प्रयत्न भी किया कि मगदा क्यों लोगों को ऐसी जल्दी अपने चंगुल में फँसा लेती है और दुबारा वे उसे क्यों नहीं चुनते हैं; परन्तु उसे यही उत्तर मिलता जो उसकी समझ में न आता था कि,

'इस छोकरी के ख़िलाफ़ कुछ भी कहना तो बिल्कुल पाप ही होगा; क्योंकि वह बड़ी प्यारी, बड़ी मीठी, हँसमुख और नज़ाकत वाली है। मगर कैसे तुम्हें कोई समझाये?......प्रेम करने में वह बड़ी शर्मीली और मानिनी है और प्रेमी के दिल में आग नहीं लगाती। अगर वह बहाना ही करे...मगर वह ऐसा नहीं कर सकती अथवा करना नहीं चाहती।'

बातुनर और अनुभवी व्यभिचारी ऐम्मा से सीधे और संक्षेप में कहते, 'सुन्दर है, मगर निरी चटनी है! अच्छे खाने के साथ ठीक रहेगी!'

आख़िरकार ऐम्मा ऐडवार्डोवना ने मगदा से स्वयं साफ़-साफ़ बातें करने का निश्चय किया।

'कहो मगदा यहाँ की ज़िन्दगी तुम्हें कैसी लगती है? तुम सन्तुष्ट तो हो?'

'बड़ी सन्तुष्ट हूँ। अगर हज़रत मुहम्मद ने बहिश्त आदमियों के लिए न बनाकर औरतों के लिये बनाया होता तो मैं कहती कि मैं बहिश्त में हूँ।'

'मगर क्या तुम्हारे मेहमान भी तुमसे सन्तुष्ट होते हैं?'

मगदा ने हँसते हुए कहा:

'यह मुझे क्या पता? सच तो यह है कि मैं इस बात का पता लगाने का प्रयत्न भी नहीं करती। मुझे उनके मन के भावों से क्या मतलब? मैं तो ईमानदारी से सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा कर देती हूँ।'

ख़ालाजान ने घृणा से उलाहना देते हुए कहा,

'यह तो बड़ी ख़ुदगर्ज़ी की बात है—मगदा—कि तुम सिर्फ़ अपना ही ख़्याल रखती हो। मर्दों को प्रेम करते वक़्त औरतों का सी-सी करना, कराहना, चिल्लाना, नोंचना-खसोटना और गाली-गलौज करना अच्छा लगता है। किसी को पत्थर की

मूर्तियों से प्रेम करना अच्छा नहीं लगता। तुम्हें थोड़ा बहुत सी-सी सू-सू करना सीख लेना चाहिये, बीच-बीच में थोड़ी सी कर दिया करो।'

मगदा ने मुँह बनाते हुए कहा,

'धन्यवाद, आपकी सलाह के लिए! मैं पड़ोस के कमरों से ऐसी बनावटी प्रेम की चीत्कारें सुना करती हूँ जो मुझे बड़ी हास्यास्पद और घृणोत्पादक लगती हैं। मैं ऐसी बनावटी बातें नहीं कर सकती...'

'अच्छा, जैसी तुम्हारी मरज़ी', ख़ालाजान ने कहा और फिर चेहरे की आकृति बदल कर कहने लगी, 'तुम नायक नहीं बनना चाहती तो जाओ फिर तुम सैनिक ही रहो। आज से तुम्हारी सब रियायतें बन्द! अब अधिक तुम्हारी ख़ातिर न की जायगी। आज से जो आदमी भी तुम्हें बैठक में चुन लेगा उसी के साथ तुम्हें जाकर लेटना होगा—चाहे वह राक्षसों का राजा ही क्यों न हो—चाहे वह कितना ही घृणित और गन्दा हो।'

'और मैं इसके लिए राज़ी न होऊँ तो?' मगदा ने बिगड़कर पूछा।

'तुमको राज़ी करा लिया जायगा, मेरी प्यारी! हाँ! तुम्हें राज़ी होना ही पड़ेगा।'

'कौन मुझे राज़ी कर लेगा?'

'कौन राज़ी करेगा? यही सिमयन करेगा और कौन! तुमने अभी तक उसका बैलों की रगों से बना हुआ कोड़ा नहीं देखा है? उसका मज़ा भी तुम्हें चखने को मिल जायगा। परेशानी की कोई बात नहीं है। तुमसे भी कहीं सख़्त और भयङ्कर स्त्रियों को हम ठीक करके रास्ते पर ला चुके हैं!'

'मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ रिपोर्ट कर दूँगी!'

'किससे?'

'पुलिस से......गवर्नर से!'

'गवर्नर तक तुम्हारी पहुँच न हो सकेगी और पुलिस सब हमारी ख़रीदी हुई है। तुम यहाँ से एक ख़त तक बाहर न भेज सकोगी! अब से तुम हमारी कड़ी निगरानी मे रहोगी।'

'मैं निकलकर भाग जाऊँगी!' मगदा क्रोध से चिल्लाकर बोली।

'कहाँ भाग कर जाओगी मेरी परम प्यारी! तुम्हारे लिए कौन-सी जगह है? मैं जानती हूँ तुम भागना चाहोगी! मगर यहाँ से तुम भाग भी न सकोगी। हम तुम्हें जान से नहीं मारेंगे, मगर तुम्हारी यह शान तो हमें नीची करनी ही पड़ेगी।

बेहतर तो यही होगा कि तुम अपने आप ही ठीक रास्ते पर आ जाओ और हमें यह सब करने के लिए मजबूर न करो। तुम्हारे लिए भी यही ठीक होगा। उठो, चलो, बैठक में जा कर बैठो।'

तीन दिन के बाद एक अजीब घटना हुई। दोपहर के समय कामदेव की तरह एक सुन्दर नौजवान, फौज के कप्तान की पोशाक मे अन्ना के यहाँ आया और सीधा बैठक में घुसता हुआ चला आया। उससे एक क़दम पीछे, वर्दी मे बाक़ायदा 'अटेन्शन' मानो परेड पर हो, इन्सपेक्टर बरकेश था। आज तक कटरेवालों ने कभी भयङ्कर और ढीठ बरकेश को इस प्रकार दब कर किसी के पीछे-पीछे चलता हुआ नहीं देखा था।

'मैं इस घर की मालकिन से मिलना चाहता हूँ।' फौजी अफ़सर ने आकर नम्रता-पूर्वक कहा।

'वह इस वक़्त यहाँ हैं नहीं।' सिमयन ने झुकते हुए कहा, 'आधे घण्टे में आती होंगी।'

बरकेश ने अफ़सर के पास अदब से जाकर कहा :

'हुज़ूर, इस काम को मुझे सँभालने की इजाज़त दीजिये। इन टुच्चों से आपका बातें करना ज़ेब नहीं देता। हम पुलिसवालों की बात दूसरी है। हमें हर तरह की गन्दगियों से पाला पड़ता है। अस्तु हमें ऐसे काम सँभालने का मुहावरा है। यह हमारा रोज़ का काम है!'

'अच्छा, जैसी तुम्हारी मरज़ी।' अफ़सर ने कहा।

'इस घर की ख़ाला को फ़ौरन इधर लाओ!' बरकेश ने इतने ज़ोर से चिल्लाकर सिमियन से कहा कि खिड़कियों के शीशे और कन्दीलों के काँच हिल गये।

मगर ऐम्मा ऐडवार्डोवना अपने कमरे में से कछुये की तरह मुँह निकाल कर आधे खुले हुये द्वार में से बैठक के कमरे में घबराई हुई झाँक रही थी। और घर भर की छोकरियाँ परेशान एक कमरे में, रात के कपड़ों में ही इकट्ठी एक दूसरे द्वार में से एक के ऊपर से एक बैठक में झाँक रही थीं।

'अभी आई! अभी आई।' ख़ाला अपनी गर्दन को हाथों से ढाँकती हुई बड़बड़ाई-'ज़रा क्षमा कीजिये! एक मिनट ठहरिये! मैं अभी आई। कपड़े पहिन लूँ।'

'एक सेकण्ड भी हम नहीं ठहर सकते!' बरकेश ने दहाड़ कर उसको अपनी उङ्गली दिखाकर डराते हुए कहा, 'हम यहाँ तुम्हें सराहने नहीं आये हैं, खूसटजान!'

अफ़सर ने हाथ के इशारे से बरकेश को रोकते हुये कहा,

'इतना ज़ोर मे क्यों चिल्लाते हो ?'

'हुज़ूर, ये पशु मीठी-मीठी बातें नही समझते। इन लोगों मे बिना सख्ती के काम नही निकलता।' फिर उसने आवाज़ एक दम धीमी करके कहा, 'हज़ूर, इस कमरे मे तशरीफ़ ले चलें !'

वे उसी मानकिन वाले कमरे में घुसे जिसमें त्रिदेव के त्योहार को बरकेश ने, उस रोज, काफ़ी और शराब उड़ाई थी। खाला कमरे में अभी तक हाथ में कुछ चिथड़े और पिनें लिये दौड़ ही रही थीं, बरकेश ने उसे ठीक करने के लिए घुसते ही कहा:

'पुराना जूता फिर नया नहीं हो सकता ! तुम कितनी ही बनने को कोशिश करो, मगर उससे तुम अब जवान न हो सकोगी। बैठो ! देखो, यह क्या है ?' यह कह कर उसने एक काग़ज़ खाला की नाक से लगा दिया जिसमें परमात्मा के समान शक्तिमान् ज़िला सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के हस्ताक्षर थे। 'बोलो तुम इस औरत को जानती हो ?' वह उस काग़ज़ में से हुलिया और बयान पढ़ता हुआ उससे पूछने लगा।

'जानती हूँ, हुज़ूर।'

'उसका पीला टिकट लाओ। हुज़ूर, उस टिकट को यही फाड़कर फेंक दिया जाय या हुज़ूर पसन्द करेंगे कि मैं उसे हुज़ूर को दे दूँ ?'

'मुझे दे दो।'

'क्या नाम उसका यहाँ था ?'

'मगदा, हुज़ूर !'

'तुम्हारी छिनालों में से कौन सबसे होशियार और तेज़ है ?'

'टमारा !'

'टमारा ? ठीक है ! बुलाओ उसे यहाँ फ़ौरन् !' उसने स्वयं द्वार में से मुँह निकालकर चिल्लाकर कहा—टमारा, फ़ौरन् इधर आओ ! क्या कहा, कपड़े नहीं पहनी हुई हो ! कुछ हर्ज नही, जैसी हो वैसी ही चली आओ ! फ़ौरन आओ !'

टमारा लपकती हुई उसके पास पहुँच गई।

'फ़ौरन तुम श्रीमती...मगदा के पास जाओ और उनका मुँह हाथ धुलाकर, उन्ही के कपड़े पहनवा कर यहाँ ले आओ। दूसरी सब छिनालों से कह दो कि अपने अपने कमरों मे चली जायें ! अपनी शक्लें हमें दिखाने की कोशिश न करें वरना सबको ले जाकर हवालात में बन्द कर दिया जायगा !'

कुछ देर बाद मगदा आई। वह बिल्कुल डरी हुई नही थी—हमेशा की तरह

शान्त थी। उसको देखते ही फ़ौज़ी अफसर उठ कर खड़ा हो गया और उसने बड़े अदब से मगदा का आगे बढ़ा हुआ हाथ चूमा। वरकेश सतर्क होकर लैम्प के खंभे की तरह अटेन्शन खड़ा हो गया।

'इनको एक बिल के दाम देने हैं...' खालाजान ने धीरे से कहा।

'कैसा बिल? चुप रहो!' उत्साही बरकेश ने खाला पर भोंकते हुए कहा। मगर अफसर ने उसे इशारे से चुप कर दिया।

खालाजान को बिल के दाम, काफ़ी इनाम के साथ चुका दिये गये। बाहर एक शानदार गाड़ी इन्तज़ार कर रही थी जिसमें बरकेश ने फ़ौजी अफसर और श्रीमती मगदा को चढ़ने में बड़े अदब से मदद करते हुए बैठाया और गाड़ी उन दोनों को लेकर चल दी।

टमारा जब मगदा को कपड़े इत्यादि पहना कर तैयार कर रही थी तब उसकी मगदा से बड़ी मज़ेदार बातें हुई थीं।

'अच्छा मगदा, तो तुम छिनाल नहीं हो?' टमारा ने पूछा।

'नहीं, वह तो मैं कभी नहीं थी।'

'तो तुम भले, मान-मर्यादा वाले घर की हो?'

'नहीं, मैं भले कहानेवालों और मानमर्यादावालों की शत्रु हूँ।'

'अच्छा खैर, यह तो बताओ कि फिर तुम ऐसी बुरी जगह क्यों आई? क्या तुम्हें जहाँ तुम आज़ादी से रहती थीं, वहाँ ही, जितने आदमी चाहिये, नहीं मिल सकते थे? तुम्हें बहुत से आदमियों की ही हविस थी तो यह हविस वहाँ भी तो निकल सकती थी!'

मगदा मुस्कराई, परन्तु उसकी मुस्कराहट में उदासी भी मिली हुई थी। वह कहने लगी:

'आह टमारा! तुम्हें विश्वास न आयेगा कि मैं अभी तक बिल्कुल सती हूँ।'

टमारा हँसी से लोट-पोट हो गई। वह बोली, 'छः-छः सात-सात आदमियों के साथ एक-एक रात में तो तुम इस घर में सोई और फिर भी तुम अभी तक सती ही बनी हो? बड़ी अच्छी सती हो!'

मगदा का चेहरा एक दम गम्भीर हो गया। वह टमारा की तरफ, जो अपनी एड़ियों पर बैठी हुई थी, झुकी और उससे शान्त भाव से पूछा:

'टमारा, तुम चतुर लड़की हो! मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो...मान लो कि तुम एक जवान और तुम्हारे शब्दों में 'सती' लड़की हो और कोई नीचे तुम्हें

पकड़ कर तुमसे ज़बरदस्ती बलात्कार कर डाले। उसके बाद तुम सती रहीं कि नहीं?'

'क्या व्यर्थ का प्रश्न तुम पूछती हो? मैं फिर अपने को कुँवारी कैसे कह सकती हूँ?'

'नहीं, मेरा मतलब कुँवारा से नहीं है। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि ईश्वर और एक भले पति की नज़र में, जो कि समझदार है, अथवा अपनी नजरों में स्वयं तुम किसी दशा में सती रहीं या नहीं?'

'हाँ, ईश्वर की नज़रों में और अपनी नज़रों में तो सती मैं ज़रूर रहूँगी।'

'बस, तो मेरा भी यही हाल हुआ है! समझना तुम्हें ज़रूर कठिन है...' टमारा कुछ देर तक चुप रही। फिर उसने धीरे से पूछा :

'यह अफसर जो आया है, तुम्हारा कौन है? तुम्हारा पति है, अथवा इससे तुम्हारी शादी होनेवाली है अथवा यह तुम्हारा कोई भाई इत्यादि है?'

'नहीं, उनमें से वह कोई नहीं है। वह मेरा बन्धु है!'

'आह मगदा! मुझे लगता है कि तुम मुझसे झूठ नहीं बोलती हो, परन्तु मेरी समझ में तुम्हारी बातें नहीं आतीं। तुम मुझे बड़ी विचित्र और भोली लगती हो। तुम भले घर की हो यह तो मैं बहुत दिनों से सोचती थी, परन्तु तुम अपनी इच्छा से, जान-बूझकर, हमारे इस भँवर में क्यों आई, यह मेरी समझ में नहीं आता। अपनी कहानी तो मैं तुम्हें बता सकती हूँ। मैंने लड़कपन में शिक्षा भी पाई थी—यद्यपि वह शिक्षा ऐसी ही अधकचरी थी। मैं अभी तक दो भाषायें अच्छी तरह जानती हूँ। मैं जिस ज़बान का इस घर में इस्तेमाल करती हूँ, वह बनावटी है—मेरी असली ज़बान नहीं है। तुमसे भी जान-बूझकर मैं इसी भाषा में बोलती रही। मैं बड़ी फिरनेवाली, बड़ी आवारा तबियत की हूँ—चिड़िया की तरह उड़ती फिरती रहती हूँ। मुझे कभी पता नहीं रहता कि मेरा मन मुझे कहाँ उड़ाये लिये जाता है और कहाँ ले जाकर मुझे बैठायेगा। मगर तुम! तुम्हें तो अपने मन पर बड़ा क़ाबू है! तुम यहाँ क्यों आई?'

मगदा का चेहरा एकदम पत्थर की तरह ठण्डा हो गया।

'हाँ' उसने रूखी आवाज़ में कहा—'मैं भी समझती थी कि तुम जानबूझ कर भोंडी बनकर रहती हो जिससे कि तुम में और दूसरों में यहाँ कोई फर्क न रहे। अच्छा, तुम्हें मेरा भेद जानने का इतना ही शौक़ है तो लो मैं तुम्हें बताये देती हूँ। मैं लेखक हूँ। मैं ऐसे जीवन के सम्बन्ध में एक ऐसा उपन्यास लिखना चाहती थी, जिसमें यहाँ की दशा का बिल्कुल सच्चा-सच्चा हाल हो। अस्तु मैंने सोचा कि मैं

स्वयं ही यहां के जीवन का अनुभव करूँ तो ठीक होगा और मैं यहाँ आ गई।'

टमारा जो उसे कपड़े पहना चुकी थी, सीधी खड़ी होकर बोली, 'तुम्हारे उद्देशों की सच्चाई पर तो मुझे पूरा विश्वास होता है, परन्तु तुम्हारे लेखकवाले इस किस्से पर विश्वास नहीं होता। तुमने मुझसे बड़ी दून की हाँकी है! ख़ैर, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि जो कुछ भी तुमने मुझसे कहा है, मुझ ही तक सीमित रहेगा। मैं इस बात की क़सम खाती हूँ।'

'अच्छा तो जैसा तुम समझो, वही ठीक है। मगदा ने रुखाई से कहा, 'तुम्हारी कृपा के लिए धन्यवाद!' परन्तु फिर यकायक, मानों वह गिर पड़ी हो, उसने टमारा को पकड़कर सीने से लगा लिया और स्नेह से चूमकर धीमे स्वर में कहा, 'मैं तुम्हें खत लिखूँगी।'

इस घटना के बाद आठ महीने गुज़र गये। रूस में गेपन* देशव्यापी हड़ताल, और नई राज-व्यवस्था के दिन आ गये। सूक्ष्म में, रूस की हवा से क्रान्ति की गन्ध आ रही थी। चारों तरफ राजनैतिक तलाशियों और गिरफ्तारियों की धूम मची हुई थी।

एक दिन अन्ना के घर पर भी, आधी रात को, पुलिस ने धावा बोला। मकान चारों तरफ से घेर लिया गया। मेहमानों को, नम्रता से उठाकर बड़े कमरे में कर दिया गया और मकान के कोने-कोने की तलाशी ले डाली गई। क्रान्तिकारी पर्चों, ऐलानों और बमों के लिए अन्ना का घर टटोला जा रहा था। मगर ऐसी कोई चीज़ें वहाँ नहीं मिली। घर भर की स्त्रियों को, पुलिस के बड़े अधिकारी ने एक कमरे में एक-एक करके बुलाया और धमका-धमका और फुसला-फुसला कर मगदा के विषय में तरह-तरह के प्रश्न पूछे। वह क्या करती रहती थी? क्या कहती थी? किससे मिलती थी? किसको खत लिखा करती थी? कभी किसी को इस घर में उसने कोई किताब या पर्चा पढ़ने को दिया?'

यहाँ की स्त्रियों की समझ में इन प्रश्नों का कोई मतलब न आया। वे परेशानी से लाल हो जातीं, आँखें मिचकाने लगतीं, पसीने में डूब जातीं और अक्सर पुलिस अधिकारी के चरणों में माथा नवाकर कहतीं, हमने कोई बुराई की हो तो हम

* गेपन रूसी सरकार का एक जासूस था, जिसने क्रान्तिकारियों की टोलियों में घुस-घुस कर बहुत-सी व्यर्थ की हड़तालें करा-कराकर बहुत से कत्लेआम रूस में कराये।

पर गाज गिरे ! हमने न तो कोई खून किया है और न किसी की कोई चीज़ ही चुराई है !......' अफ़सर उनके ऐसे विलाप सुनते ही उन्हें अपने पास से भगा देता।

टमारा चाहती तो अफ़सर से मगदा के साथ हुई अपनी आख़िरी बातचीत के बारे में बहुत कुछ कह सकती थी—अधिकतर वेश्याओं को, जिन्हें कोई ख़ास बात करके अपनी तरफ़ ध्यान खींचने का रोग-सा हो जाता है, उस बातचीत को अफ़सर से कहने का लालच रहता। परन्तु टमारा ने कुटिलता-पूर्वक कहा :

'मुझे, श्रीमान्, उस राँड के बारे में इससे अधिक और कुछ नहीं मालूम कि वह सोलह आने कुतिया थी। दुनिया में उसके लिए मर्द काफ़ी नहीं थे... उसे तो कुत्ते-घर में रहना चाहिये था !...'

पुलिसवाले तलाशी लेकर और छानबीन करके चले गये। परन्तु इसके बाद बहुत दिनों तक तमाम कटरेवाले अन्ना के घर की छोकरियों को 'सोशलिस्ट' कह-कह-कर चिढ़ाते रहे। उन्हें उन पर सचमुच बड़ा गुस्सा था।

एक दिन टमारा ने बड़े आश्चर्य से बरकेश को मालकिन के कमरे में बैठे, शराब पीते हुए, मालकिन और उसके पति और ख़ालाजान से इस प्रकार बातचीत करते सुना—

'याद है तुम्हें, अपनी उस मगदा की ? बड़ी ऊँची चिड़िया थी वह ! बड़ा भारी शिकार हाथ से निकल गया ! उसके लगभग दस नाम थे, जिनमें से एक वह भी था जो उसके उस पासपोर्ट में लिखा था जिसको हमारे दफ्तर में देकर तुम उसका पीला टिकट हमसे ले गई थीं। उस पासपोर्ट में उसका नाम ओल्गा लेविन्सकाया लिखा था और पेशा सङ्गीत की शिक्षक। मगर जानती हो वह इस घर मे आकर क्यों रही थी ? बड़े आश्चर्य की बात है ! विश्वास होना असम्भव हो जाता है ! वह तुम्हारे यहाँ वेश्यावृत्ति की शिक्षा लेने आई थी ! परेशान मत हो ! आह-ऊह मत करो ! बाद को जो कुछ उसने किया वह और भी आश्चर्यजनक है ! तुम्हारे यहाँ से उसने वेश्या का काम इतना अच्छा सीख लिया था कि होशियार से होशियार आदमी भी उसके व्यवहार से यह नहीं मालूम कर पाता था कि वह वेश्या नहीं है। यहाँ से वह सेबेस्टोपोल[१] बन्दरगाह के एक ऐसे चकले में जाकर रही, जिसमें जहाज़ों पर काम करनेवाले मज़दूर और सैनिक आते थे और वहाँ फिर दूसरे उसी प्रकार के कई चकलों में जाकर रही। ओडेसा[२] और निकोलवे[३] में भी उसने यही काम जारी रखा। उसने इस प्रकार सभी सरकारी सैनिक बन्दरगाहों में अपने अड्डे

१, २, ३ रूसी बन्दरगाहों के नाम।

बनाये और अपने पीले टिकट का फायदा उठाकर, वेश्या के रूप में सरकार के विरुद्ध जहाज़ी सैनिकों मे भयङ्कर प्रचार कर-करके, उनको बादशाह और सरकार के सारे साथियों खासकर जमींदारों और पैसेवालों के विरुद्ध जाने और उनको विध्वंस कर डालने के लिए भड़काती रही। उसकी सहायता से क्रान्तिकारियों ने इन बन्दरगाहो मे अपने लाखों पर्चे और ऐलान लोगों में फैला दिये। पुलिस उसकी बड़ी फिराक़ में रहने पर भी, लाखों कोशिशें करने पर भी, उसे न पकड़ पाई। हर जगह उसकी सहायता के लिए उसके मित्र-बन्धु मौजूद रहते थे। देखो न उसी रोज़ वह जो फौजी अफ़सर बनकर यहाँ आया था और हम सबको उल्लू बनाकर दिन-दहाड़े उसे यहाँ से उड़ा ले गया, वह एक क्रान्तिकारी विद्यार्थी था जो कि सिर्फ फौजी अफ़सर की वर्दी डाटकर यहाँ आ गया था। उसका नाम नौवीकॉव था। और देखो तो उस जालिये को! कैसा मूर्ख उसने हम सभी को बनाया! वह हमारे पुलिस कप्तान साहब के पास गवर्नर साहब का एक ख़त लेकर पहुँचा। गवर्नर साहब के सरकारी काग़ज़ पर, उनकी मोहर के साथ बिल्कुल उन्ही के से दस्तख़तों की यह चिट्ठी थी! कितनी हिम्मत उस बदमाश ने की! ख़ैर, आखिरकार उसको मज़ा चखने को मिल ही गया! एक जगह पुलिस ने उसको पकड़ा और कालापानी कर दिया। अब वह हज़रत साइबेरिया की सरकारी खानों मे सोना खोदने का काम जलावतनी मे करते हैं। बदमाश को काफ़ी सज़ा नहीं मिली!

'और मगदा कहाँ है?' अन्ना ने आश्चर्य से पूछा।

'मगदा? मगदा अब इस दुनिया में नहीं है! उसने गवर्नर पर बम फेंका और उसे फाँसी दे दी गई!'

छठा अध्याय

अन्ना के घर की खिड़कियां खुली हुई हैं, जिनमें हो कर सन्ध्याकाल की सुगन्धित पवन अन्दर आ रही है। खिड़कियां पर लटके हुये रेशमी परदे धीरे-धीरे हवा के अदृश्य झोकों से हिल रहे हैं। घर के सामने की छोटी, सूखी-सी वाटिका से ओस से भीगी घास की महक आ रही थी, जिसमें कुछ-कुछ बकाइन घास और घर के द्वार पर त्रिदेव के त्योहार के कारण रक्खी हुई, मुझांनी हुई, सनौबर की टहनियों से निकलने वाली गन्ध भी मिली हुई थी। लियूबा नीली मखमल की एक छोटी कुर्ती पहिने हुये और नियूरा बच्चों का सा गुलाबी चोगा नीचे घुटनों तक पहिनकर, सिर के चमकीले बाल फैलाये हुये, जिनकी कुछ घुँघराली लटें माथे पर आ पड़ी है, एक दूसरे को सीने से लगाये हुए, खिड़की की चौखट से अड़ी हुई लेटी हैं और धीरे-धीरे एक अस्पताल से सम्बन्ध रखनेवाला एक गीत गा रही हैं जो आजकल गली-गली और कूचे-कूचे में गूँज रहा है और जिसकी हर तरफ़ मांग है और जिसे सभी वेश्याएँ अच्छी तरह जानती हैं। नियूरा नाक से स्वर निकालकर ज़ोर से गीत शुरू करती है और लियूबा धीमी आवाज़ से उसका समर्थन करती हुई गाती है।

'हाय आ गया फिर सोमवार !
प्रीतम कहें चलो उस पार !
इधर डाक्टर बिगड़े मुझ पर
कहो सखी मैं जाऊँ क्योंकर ! *

---

* गीत रूसी भाषा में है, जिसका हिन्दी में ठीक अनुवाद करना कठिन है

कटरे के सभी घरों की खिड़कियाँ तेज़ रोशनी से जगमगा रही हैं और द्वारों पर लटकी हुई लालटेनें जल रही हैं। अस्तु नियूरा और लियूबा को सामने वाली सोफिया वासीलीविना की पेढ़ी का भीतरी दृश्य अच्छी तरह दिखाई दे रहा है—सोफिया के कमरों का नक्काशीदार पीली रङ्गीन लकड़ी का फर्श, दर्वाजों पर पड़े हुये हरे व लाल रंग के पर्दे, जो रेशमी डोरियों से सिमटे हुये बँधे थे, बड़े काले रङ्ग के पियानो का एक कोना, जड़ाऊ चौखटे मे लगा हुआ एक आईना और भड़कीली पोशाकें पहिनी हुई स्त्रियाँ जो कभी खिड़कियों पर आकर खड़ी होती हैं और फिर गायब हो जाती हैं और उनकी आईनों में पड़नेवाली छायायें उन्हे साफ दीख रही हैं। दाहिनी तरफ ट्रपेल की पेढ़ी के नक्काशीदार ज़ीने मे नीले बिजली के एक कन्दील से जोर की रोशनी हो रही है।

संध्या शान्तिपूर्ण और रूस देश की ठण्डक को देखते हुए काफ़ी गर्म भी है। पश्चिम मे दूर कही पर, रेल की पटरो के बहुत उधर, मकानों की काली-काली छतों और दरख्तों के काले तनों के उस पार श्यामवर्ण पृथ्वी में जहाँ अभी तक वसन्त का राज्य रहता है, अस्त होते हुए सूर्य भगवान अपनी सुनहरी लालिमा बिखराये हुए हैं जो अन्धकारपूर्ण पृथ्वी पर एक सुनहरी चीर की तरह लिपटी हुई लग रही है। और इस अस्पष्ट, दूरवर्ती प्रकाश में, मुखों को चूमती हुई वायु में, आती हुई रात्रि की सुगन्धों मे, छिपी हुई एक मीठी और सज्ञान उदासीनता थी जो कि वसन्त और ग्रीष्म के मध्य-काल मे संध्याकाल में आमतौर पर अधिक नाज़ुक लगती है। शहर का अस्पष्ट कोलाहल बहता हुआ आ रहा था—वहीं से अरगन बाजे की करुणध्वनि और गोधूलि पर घरों को लौटती हुई गायों के रँभाने की आवाज़ें आ रही थीं; कोई अपने पैरो के तलवों से किसी ख़ुश्क चीज़ को खुरच रहा था; और कोई एक बेंत गली के पत्थरों पर पटक रहा था; बीच-बीच मे धीरे-धीरे कटरे में घुसती हुई किसी गाड़ी के लुढ़कते हुए पहियों की आवाज़ आने लगती थी और यह सारी आवाज़ें संध्याकाल की विचारपूर्ण सुस्ती मे एक सौन्दर्य और माधुर्य में मिल रही थीं। रेल की पटरी पर चलते हुए इञ्जन, जिनकी लाल और हरी-हरी बत्तियाँ अन्धकार में चमकती थीं, धीमे-धीमे सीटी की आवाज में से गा रहे थे। नियूरा और लियूबा पड़ी-पड़ी अपना गीत गाये जा रही थी—

'आई नर्स प्यारी आई,
सबको मक्खन रोटी लाई,

सबको दूध-बताशे लाई
प्यारी नर्स सबको भाई।

'प्रोखोर इवानिश !' नियूरा यकायक गीत बन्द करके सामने की दूकान पर काम करनेवाले घुँघरवाले बालों के एक नौकर की तरफ चिल्लाई जो कि एक भूत की छाया की तरह लपकता हुआ गली पार कर रहा था।

'आ, प्रोखोर इवानिश !'

'क्यों जान खा रही है !' उसने गली में से भर्राई हुई आवाज़ में गुर्राकर कहा—'क्या चाहती है ?'

'तुम्हारी दोस्त ने तुम्हें सलाम कहा है। उससे मेरी आज मुलाक़ात हुई थी।'

'किस दोस्त ने ?'

'वह देखने में बड़ी ख़ूबसूरत था ! बड़ा आकर्षक छोकरा थी...मगर तुम शायद पूछोगी कि मैं उसे कहा मिली ?'

'हाँ, हाँ बताओ तुम्हारी उससे कहा मुलाक़ात हुई ?' प्रोखोर ने पल-भर के लिए ठिठक कर पूछा।

'यहा, वह देखो अल्मारी के पाँचवे खाने में जहा कीलों पर पुराने टोपों के साथ मरी हुई बिल्लियाँ हम लोग लटका कर रखते हैं !'

'धत्तेरी की ! निपट मूर्खा !'

नियूरा खिड़की पर लोट गई और लम्बे काले-काले मोज़ों से ढंकी अपनी टाँगें पीछे की तरफ हवा मे हिलाती हुई ज़ोर-ज़ोर से खिल-खिलाकर हँसने लगी। उसकी हँसी की तेज़ आवाज़ हवा को चीरती हुई कटरे-भर में फैल गई। कुछ देर बाद हँसना बन्द करके वह यकायक आश्चर्य से आखें गोल करके धीमी आवाज़ में बोली—'मगर बहिना, देखो इसी प्रोखोर ने पार साल उस औरत का गला घोंट डाला था ! सच ! ईश्वर की क़सम इसी ने ! ख़बर है क्यों ?'

'सच कहती हो ? वह औरत मर गई ?'

'नहीं, मरी तो नहीं। वह बच गई।' नियूरा ने इस प्रकार कहा मानो उसके बच जाने पर उसे अफ़सोस था, 'मगर वह दो मास तक अस्पताल में पड़ी रही। डाक्टरों का कहना था कि ज़रा-सा घाव और गहरा होगया होता तो वह अवश्य मर गई होती। उसको 'राम नाम सत्य' ही हो गई होती।'

'इसने उसका गला क्यों घोंटा ?'

'मुझे क्या खबर ? शायद उस औरत ने इससे रुपया छिपाकर रख लिया हो या किसी और से यारी गाँठी हो। यह आदमी उसका प्रेमी था—और उसका दलाल भी था।'

'अच्छा, तो फिर इस आदमी को क्या सज़ा मिली ?'

'सज़ा ? कोई भी सज़ा नहीं। एक बलवा-सा हुआ था, जिसमे क़रीब सौ लोग भिड़े थे। क्या पता किसने किसको मारा ? उस औरत ने भी पुलिस से कहा कि उसे किसी खास आदमी पर शुबहा नहीं था, परन्तु इस आदमी ने ही बाद मे एक दिन शेख़ी बघारते हुए कहा था कि उस रोज तो डनका बच गई। मगर अबकी बार मेरे हाथों से बचकर नहीं निकल पावेगी। मै उसे बिना मज़ा चखाये न छोड़ूँगा !'

लियूबा के सारे शरीर में यह सुनकर कँपकपी दौड़ गई।

'यह दलाल बड़े भयङ्कर जन्तु होते है !' उसने धीमे से डरी हुई आवाज़ मे कहा।

'बड़े भयङ्कर ! साल भर तक मै भी इस सिमियन से फँसी रही थी। नीच गुण्डा कहीं का ! मुझे रोज इतना नोचा और मारा करता था कि मेरे शरीर भर पर काले और नीले धब्बे हमेशा बने रहते थे। मैं कोई क़सूर नहीं करती थी, जिसके लिए वह मुझे मारा करता था। उसे मुझे सताने मे मज़ा आता था। रोज सबेरे वह मुझे लेकर एक कमरे में घुस जाता था और अन्दर से ताला लगाकर मेरे शरीर को दुखाना शुरू कर देता था—मेरी बाहें खींचता था, मेरी छातियाँ नोचता था और मेरा गला ज़ोर से पकड़कर घोंटने लगता था अथवा मुझे वहशी की तरह बार-बार चूमता था और फिर मेरे होंठ अपने दाँतों से काट लेता था, जिससे उनसे ख़ून बहने लगता था और मैं चीख कर रो उठती थी। वह इसी की राह देखता था, क्योंकि वह मेरे ऊपर जानवर की तरह काँपता हुआ चढ़ बैठता था। वह मेरा सारा रुपया भी मुझसे छीन लिया करता था—एक फूटी कौड़ी भी मेरे पास नहीं रहने देता था। सिगरेट का एक पैकेट खरीदने के लिए भी मेरे पास दाम नहीं रहते थे। यह सिमियन बड़ा सूम, पूरा मक्खीचूस है ; जो कुछ पाता है बैंक में जाकर फौरन जमा कर देता है—कहता है कि जैसे ही एक हज़ार रुपये जमा हो गये, वैसे ही साधु बनकर बैठ जायगा।'

'कहे जाओ !'

'ईश्वर की क़सम ! तुम उसकी कोठरी में जाकर देखो—रात-दिन चौबीस घण्टे

देवी की मूर्ति के आगे दिया जलता देखेगा। बड़ा ईश्वर का भगत है...शायद इसीलिए ईश्वर का बड़ा भगत है कि उसके सिर पर बहुत से गुनाहों का बोझ है। उसने क़त्ल भी किये हैं।'

'क्या कहती हो ?'

'अरे, छोड़ो भी इस कम्बख्त की बातें, प्यारी लियूबोच्का ! आओ अच्छा गीत गायें। यह कहते हुए नियूरा ने गीत आगे चलाया—

'लाऊँ अफीम की पुड़िया,
मिट जावे झंझट सारा।'

जेनी पीठ के पीछे हाथ बाँधे कमरे में इधर-उधर टहल रही है और घूम-घूमकर अपना शरीर सारे आईनों में देखती है। वह नारंगी रङ्ग की एक छोटी कुर्ती पहिने हुए है और उसके लँहगे की चुनटें चलने पर उसके कूल्हों पर इधर-उधर होती हैं, जिससे उसके कूल्हों की हरकत साफ दिखाई देती है। छोटी मनका जिसे ताश खेलना इतना पसन्द है कि सुबह से शाम तक बिना रुके बराबर खेल सकती है, इस समय भी पाशा के साथ बैठी शाहकट खेल रही है। दोनों ने पत्ते बाँटने और चलने के लिए अपने बीच में एक खाली कुर्सी रख ली है और अपने जीते हुए पत्ते वे अपने लहँगों पर, जो उनकी टाँगों के बीच में बिछे हुये हैं, इकट्ठे करकर रख रही हैं। मनका एक साधारण खाकी और स्याह रंग की पोशाक पहने हुए है जो उसके सुन्दर व नाजुक छोटे सिर और नाटे शरीर पर बहुत फब रही है। वह इस पोशाक में अपनी उम्र से कहीं कम, बिल्कुल एक स्कूल की छोकरी की तरह लगती है।

उसकी साथिन पाशा नाम की छोकरी बड़ी विचित्र और अभागी लड़की है। उसको तो बहुत दिन पहले ही किसी चकले में न होकर किसी मानसिक अस्पताल में होना चाहिये था, क्योंकि उसको किसी भी मर्द के साथ जो उसे पकड़ ले, चाहे वह कितना ही गन्दा और कुरूप क्यों न हो, बड़े उत्साह से विषय-भोग करने की एक बीमारी-सी है। उसके साथ की इस घर की सारी छोकरियाँ इस बात के लिए उसका मज़ाक उड़ाती हैं और उससे भीतर ही भीतर घृणा भी करती हैं, क्योंकि वह उनकी मर्दों के प्रति घृणा में उनकी साथिन नहीं है। पाशा की आहों, पुकारों, चीखों और स्नेह के शब्दों की, जिन्हें पाशा मर्दों से संभोग करते समय बिना निकाले नहीं रह सकती और जो मकान के दूसरे और तीसरे कमरों तक में सुनाई देते हैं, नियूरा बड़ी चतुरता से नकलें किया करती है। पाशा के बारे में यह भी

अफवाह मशहूर है कि वह चकले मे किसी लालच या मजबूरी के कारण शामिल नहीं हुई थी, बल्कि संभोग की अपनी इस अपार लिप्सा को तृप्त करने के लिए ही आई थी। मगर चकले की मालकिन और छोटी और बड़ी दोनो ख़ालायें पाशा का हर तरह से ख़्याल रखती हैं और उसकी इस कमज़ोरी को बढ़ावा देती है, क्योंकि उसकी इस बीमारी के कारण ही चकले मे आनेवाले ग्राहक उसकी बड़ी माँग करते हैं और वह दूसरी छोकरियों से रोज चौगुना और पँचगुना कमाती है। यहाँ तक कि तीज-त्योहार के दिनों में तो मामूली ग्राहकों को उसे पाना ही असम्भव हो जाता है, क्योंकि चकले की मालकिन उसे अच्छे और बँधे हुए ग्राहकों के लिए रखकर दूसरों से उसकी मासिक बीमारी का बहाना कर देती है—वह ऐसा न करे तो बँधे हुए ग्राहकों का अपनी प्रिय छोकरी को न पाने पर नाराज़ हो जाने का भय रहता है। और इस प्रकार के बँधे ग्राहक पाशा के बहुत से हैं। बहुत-से तो सचमुच ही उस पर फ़िदा हैं। यहाँ तक कि दो-ने तो कुछ दिन पहिले ही एक साथ ही उससे विवाह कर लेने के प्रस्ताव भी किये थे—एक शराब की दुकान मे क्लर्क था और दूसरा रेल का एक ठेकेदार था जो कि बड़ा घमंडी और ग़रीब 'ख़ानदानी रईस' था, जो कफ़ीदार गुलाबी रङ्ग की एक कमीज़ पहिनकर आया करता था और जिसकी एक आँख मसनूई थी। पाशा किसी भी मर्द के साथ जो उसे बुलावे, जाने को सदा तैयार रहती थी। परन्तु चकलेवाले अपनी जायदाद की अच्छी तरह निगरानी रखते थे। एक प्रकार का पागलपन-सा पाशा के चेहरे पर झलकता था। उसकी आँखें आधी खुली और आधी बन्द रहती थी; एक नशीली, आनन्दमय, विनम्र और शर्मीली मुस्कान उसके कमज़ोर, कोमल और तर होठों पर जिन्हें वह चाटती रहती थी, हमेशा बनी रहती थी; जब वह हँसती तो उसकी हँसी सूखी और शान्त बिल्कुल सिड़ियों की-सी लगती थी। फिर भी दैनिक ज़िन्दगी और व्यवहार में यह समाज की मानसिक बीमारी की शिकार छोकरी बड़े भले स्वभाव की, सुशील, परोपकारी और ईर्षा-रहित थी और उसे अपनी विषय-भोग-कामना के लिए हमेशा बनी रहनेवाली इच्छा पर लज्जा आती थी। अपनी साथिनियों से वह बड़ा स्नेह करती थी और उन्हें चूमना और उनके साथ एक ही बिस्तर पर लोटना उसे बड़ा प्रिय था, परन्तु फिर भी ऐसा लगता है कि वे सब उससे एक प्रकार की घृणा ही करती थीं।

'मनया, मेरी प्यारी मनया!' पाशा मनका का स्नेह से हाथ पकड़कर प्रेम से गद्गद होकर बोली, 'मेरे भाग्य के बारे में कुछ बताओ!'

'अच्छा...अच्छा,।' मनया ने बच्चों की तरह होंठ बाहर को निकालकर कहा, 'थोड़ा और खेल लें।'

'मेरी सुन्दर मनच्का! चांदनी-सी मनया! मेरी निधि! मेरी प्यारी... मेरी अपनी...'

मनया ने उसे चूम लेने दिया और फिर पत्ते फेंटकर अपने घुटने पर ताश की गड्डी रख दी। पाशा ने पत्ते काटे और पहिली ही बांट में उसे तुरुप का बादशाह मिला। वह ताली बजाकर हँसती हुई चिल्ला पड़ी,

'ओहो, मेरा लिवान्चिक! हाँ, हाँ, उसने आज आने का वायदा भी किया है! ज़रूर, जरूर, लिवान्चिक ही है।'

'वह तुम्हारा जॉर्जियन!'

'हाँ, हाँ, मेरा प्यारा जार्जियन! कैसा आदमी है वह! मैं उसे कभी अपने पास से जाने न दूँगी। जानती हो पिछली बार उसने मुझसे क्या कहा था? 'तुम चकले में रहोगी तो मै तुम्हें भी मार डालूँगा और खुद भी मर जाऊँगा।' और यह कहकर उसने मेरी तरफ़ अपनी आँखें इस प्रकार गोल-गोल कीं!'

जेनी जो इन दोनों की बातें सुनने के लिये पास ही मे खड़ी हो गई थी, गुस्से से पूछने लगी, यह किसने कहा तुमसे?'

'मेरे प्यारे जार्जियन, मेरे लिवान ने। 'तुम्हें भी मार डालूँगा और खुद भी मर जाऊँगा।'

'मूर्खा! वह जार्जियन वारजियन कुछ नहीं है, एक मामूली आरमीनियन है। तू तो पागल है! मूर्ख कहीं की!'

'नहीं, नहीं, वह जार्जियन है। बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम इस तरह...'

'मैं कहती हूँ तुमसे, वह एक साधारण आरमीनियन है। मैं तुझसे अधिक पहिचान सकती हूँ, मूर्खा!'

'मगर मुझे तुम इस तरह गाली क्यों देती हो, जेनी! मैं तो तुमसे अच्छी तरह बोल रही हूँ क्यों?'

'तुम भी गाली देकर मुझे देखो तो! मूर्ख कहीं की! तुझे क्या? चाहे वह आरमीनियन हो चाहे जार्जियन? क्या तू उसे चाहती है? क्यों?'

'हाँ, हाँ, मैं उसे चाहती हूँ!'

'तभी तो मैं भी कहती हूँ कि तू मूर्खा है, मूर्खा! और वह जो अपनी टोपी में फुनगी लगाये हुये लँगड़ा आता है उसे भी तू चाहती है?'

'हाँ, तो क्या हुआ ? मैं उसकी बहुत इज़्ज़त करती हूँ। वह बड़ा सम्मानित पुरुष है।'

'और वह जिल्दसाज़ उसको भी तू चाहती है ? और उस ठेकेदार को भी तू चाहती है ? और उस आलू बेचनेवाले को भी तू चाहती है ? और उस मोटे नट को भी तू चाहती है ? उह, उह निर्लज्जा !' जेनी ने क्रोध से चिल्लाकर कहा, 'मैं तो तेरे चेहरे की तरफ़ बिना घृणा के देख भी नहीं सकती ! कुतिया कहीं की ! मैं तेरी जगह पर होती तो अपना गला खुद घोंटकर, खुद फाँसी लगाकर मर जाती। नरक की कीट !'

पाशा ने आँसुओं से भरी अपनी आँखों के चुपचाप पलक गिरा लिये, परन्तु मनया उसका पक्ष लेती हुई बोली,—

'यह क्या बक रही हो तुम जेनी ? क्यों इस प्रकार इस पर फट पड़ी हो ?...'

'हाँ, हाँ, तुम सब बड़ी भली हो !' जेनी ने कटुता से उसकी बात काटते हुये कहा, 'कोई लाज-शर्म बाकी रह गई है क्या ? कोई भी कुत्ता तुम्हें आकर दो कौड़ी में मांस के एक टुकड़े की तरह ख़रीद लेता है, एक गाड़ी की तरह निश्चित दर पर तुम्हें एक घण्टे के लिए किराये ले लेता है और तुम उस पर फ़िदा हो जाती हो, उस पर लट्टू हो जाती हो और कहती हो, 'आह, मेरे प्यारे ! ओहो, कैसा तुम्हारा स्वर्गीय प्रेम है !' थू ! थू ! थू ! कहते हुये उसने घृणा से ज़मीन पर थूक दिया।

फिर वह उनकी तरफ़ से पीठ मोड़कर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलने लगी और हर आइने में अपना चेहरा देख-देखकर आँखें मिचकाने लगी।

पास के नाच-घर में बैठा हुआ पियानो का उस्ताद आईज़क बेतुका बेला बजानेवाले इसाय से सिर खपा रहा था।

'नहीं, नहीं, इसाय ! इस तरह नहीं। ज़रा बेला रख दो और सुनो मैं कौन-सा स्वर बजाता हूँ। देखो, यह स्वर बजाओ !' यह कहकर एक हाथ से पियानो बजाता हुआ वह बकरों की-सी उस भयङ्कर आवाज़ में जो अक्सर गाने के उस्ताद अपने कण्ठ से किया करते हैं, 'स रे ग म प, प म ग रे स रे' कहता हुआ इसाय को सिखाने लगा, 'देखो, देखो, यह स्वर निकालो।'

इन दोनों की इस रिहर्सल को भूरी आँखों, गोल चेहरे और टेढ़ी भौंओं की ज़ो नाम की छोकरी देख रही थी, जो सस्ते लाल और सफ़ेद रङ्ग अपने चेहरे पर पोते पियानो पर कुहनियाँ टेके खड़ी थी। उसके पास कुछ दूर पर पतली-दुबली वीरा

नाम की छोकरी खड़ी थी, जिसके चेहरे पर अधिक शराब के नशे के परिणाम स्पष्ट दीखने थे। वह घोड़ों को दौड़ानेवाले सवारों की पोशाक में थी—सिर पर सीधे किनारों की एक छोटी-सी टोपी थी, शरीर पर एक छोटी-सी रेशमी जाकेट थी, जिस पर नीली और सफ़ेद धारियाँ थीं और पाँवों में उसके लम्बे-लम्बे बूट थे, जिनका सामने का हिस्सा पीले रङ्ग का था। लम्बे चेहरे, चमकीली, नीली-नीली तेज़ आँखों और कटे हुये छोटे-छोटे बालों और उठी हुई, चिन्तित परन्तु बड़ी सुन्दर नाकवाली वीरा सचमुच ही एक घुड़सवार-सी लग रही थी। दोनों उस्तादों का जब आखिरकार स्वर मिल गया तब छोटे शरीर की वीरा विशाल शरीरवाली ज़ो की तरफ़ मटकती हुई चाल से अपने शरीर का पिछला भाग बाहर को निकाले हुये, जो स्त्रियों के मर्दानी पोशाक चढ़ा लेने पर अनिवार्य्य हो जाता है, आगे को हाथ फैलाये हुये मानो वह उड़ने की कोशिश कर रही हो, बढ़ी। और मर्दों की तरह झुककर उसने ज़ो को फर्शी सलाम किया। इसके बाद ये दोनों छोकरियाँ हाथ में हाथ डाले, हँसती हुई, कमरे में इधर-उधर फिरने लगीं।

फुर्तीली नियूरा, जो सारी ख़बरें सबसे पहिले लाकर सुनाया करती थी, एकाएक खिड़की पर से उछलती हुई आई और आवेश और जल्दी से बड़बड़ाती हुई पुकारने लगी,

'अरी छोकरियो! ट्रेपेल के घर किसी बड़े अमीर की गाड़ी आई है...उसमे बिजली की बत्तियाँ जल रही हैं...तुम्हारी क़सम...उसमें बिजली की बत्तियाँ हैं।'

सारी छोकरियाँ खिड़कियों से झुक-झुककर बाहर देखने लगीं—सिर्फ़ घमंडी जेनी देखने नहीं गई। सचमुच ट्रेपेल की पेढ़ी के द्वार पर एक कोचवान एक बहुत सुन्दर गाड़ी लिये खड़ा था। गाड़ी नये वार्निश के रङ्ग से चमक रही थी और कोचबक्स के दोनो तरफ़ दो छोटी-छोटी नीले रङ्ग की बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं। गाड़ी में जुता हुआ सफ़ेद रङ्ग का ऊँचा घोड़ा जिसकी नाक पर एक गुलाबी धब्बा था, खड़ा-खड़ा अपना सुन्दर सिर हिला रहा था और पावों से ज़मीन खुरच-खुरच कर, कान उठा-उठाकर इधर-उधर देखता था। दाढ़ीवाला, हृष्ट-पुष्ट गाड़ीवान कोचबक्स पर, अपने हाथ आगे को फैलाये हुये, मूर्ति की तरह बैठा था।

'हाय, मुझे कोई इस गाड़ी पर बिठाकर ले जाता!' नियूरा चिल्लाई। 'अरे ओ चाचाजी! ओ भाग्यवान गाड़ीवान!' उसने खिड़की से शरीर निकालकर गाड़ीवान से चिल्लाकर कहा,

'मुझ ग़रीब छोकरी को भी ज़रा इस गाड़ी पर बिठाओ !...मेहरबानी करके हम लोगों को भी ज़रा-सी सैर इस गाड़ी पर करा दो !'

कोचवान हँसने लगा और उसने अपनी उङ्गलियों से ज़रा-सा इशारा किया कि झट सफ़ेद घोड़ा, मानो वह उसके इस इशारे का ही इन्तज़ार कर रहा था, अपनी जगह से मुड़ा और टपटप करता हुआ गार्डा और कोचवान को लेकर अन्धेरे में ओझल हो गया।

'ओफ़ ! ओफ़ ! कैसे ग़ज़ब की यह बदतमीज़ी है !' ऐम्मा की घृणापूर्ण आवाज़ उसके कमरे से आती हुई सुनाई दी, 'क्या भले घरों की छोकरियाँ कहीं इस तरह खिड़कियों में से लटक-लटककर गलियों में चिल्लपों मचाती हैं ? कैसा ग़ज़ब ढाया है ? और यह सब नियूरा ही करती है ! उसी की करतूतें ऐसी होती हैं !'

ऐम्मा यह कहती हुई अपने कमरे में से निकलकर आई। वह एक काली पोशाक पहिने थी, जिसमें वह बड़ी शानदार लग रही थी ; उसके चेहरे का मांस लटक रहा था, उसकी आँखों के नीचे काले-काले धब्बे बन रहे थे और उसकी तीन ठुड्डियाँ सामने लटकती हुई काँप रही थीं। सारी छोकरियाँ, मास्टरनी के आने पर स्कूल की छोकरियों की तरह, दीवारों के पास पड़ी हुई कुर्सियों पर चुपचाप जा बैठीं। मगर जेनी टहलती हुई आईनों मे अपना शरीर देखती रही। इतने में दो और गाड़ियाँ आकर सोफिया की पेढ़ी के आगे रुक गईं। कटरे में चहल-पहल शुरू हो चली थी। आख़िरकार एक गाड़ी धीरे-धीरे लुढ़कती हुई अन्ना के द्वार पर भी रुकी। द्वारपाल सिमियन ने उठकर ड्योढ़ी में किसी को कोट इत्यादि उतारने में मदद दी। जेनी ने किवाड़ों को पकड़े-पकड़े ड्योढ़ी में झुककर देखा और फिर फ़ौरन मुड़कर, कन्धे मटकाते हुए, कहा,

'न जाने कौन है ! कोई बिल्कुल नया आदमी लगता है। हमारे यहाँ तो पहिले वह कभी नहीं आया। कोई शौकीन मोटा है ! वर्दी चढ़ाये है और सुनहरी ऐनक लगाये हैं।'

ऐम्मा ने फौजी अफ़सर की हुक्म देने की-सी आवाज़ में कड़ककर कहा, 'श्रीमतियो ! बैठक में जाओ !' और एक-एक करके सारी छोकरियाँ, अभिमान और नज़ाकत से चलती हुई बैठक में चली गईं। टमारा जिसके सफ़ेद-सफ़ेद हाथ निरे उघरे थे और गर्दन भी बिल्कुल उघरी थी—सिर्फ़ उसमें मोतियों की एक माला पड़ी थी; मोटे और चौखुटे चेहरेवाली मोटी किटी जो इसी तरह थी, मगर जिसका रङ्ग लाल था और जिसके मुख पर लाल मुहासों की भरमार थी; भोंडी

नाक और भोंड़े स्वभाववाली नीना, जो हाल ही से चकले में शरीक हुई थी, और एक गहरे हरे रङ्ग की पोशाक में बिल्कुल तोता बनी हुई थी; बड़ी मनका, जिसको इस घर में मगरमच्छ के नाम से पुकारा जाता था; और आखिर में लाल, भद्दे चेहरेवाली यहूदिन सोनका, जिसकी नाक बहुत बड़ी थी, जिसके कारण उसको बड़नक्कू के नाम से भी पुकारा जाता था, परन्तु जिसकी आँखें बड़ी-बड़ी और सुन्दर थीं, जिनसे नम्रता के साथ-साथ किसी ग़म की एक अग्नि-सी झलकती थी—जैसी कि आम तौर पर दुनिया भर की स्त्रियों में और अधिकतर यहूदिनियों की आँखों में ही पाई जाती है—सभी बैठक में चली गईं।

अध्याय सातवाँ

सरकारी वर्दी पहिनकर आनेवाला काफ़ी उम्र का आगन्तुक शाह ज़ार के धर्मादा विभाग की वर्दी में था : वह हिचकिचाता हुआ, धीरे-धीरे अपने हाथों को इस प्रकार मलता हुआ घुसा मानों वह अपने हाथ धो रहा हो। सारी छोकरियाँ ऐसी गम्भीर शान्ति धारण किये हुये थीं, मानो उनको उसके आने की कोई ख़ास चिन्ता नहीं थी। अस्तु आगन्तुक कमरा पार करता हुआ जाकर चुपचाप लियूबा के पास की ख़ाली कुर्सी पर बैठ गया। लियूबा ने शिष्टाचार के अनुसार अपना लहँगा ठीक करते हुये उसकी तरफ भले घर की छोकरियों की तरह स्वतन्त्रता से देखा।

'कहिये श्रीमतीजी, अच्छी तो हैं ?' आगन्तुक ने पूछा।

'बड़ी अच्छी तरह हूँ, धन्यवाद !' लियूबा ने उत्तर में कहा।

'कैसी गुज़रती है ?'

'अच्छी तरह, धन्यवाद। एक सिगरेट पिलवाइये।'

'माफ़ कीजिये—मैं सिगरेट नहीं पीता।'

'अच्छा ! मर्द होते हुये भी सिगरेट नहीं पीते ? अच्छा तो विलायती शराब और लेमनेड ही पिलवाइये। मुझे विलायती शराब और लेमनेड बहुत ही पसन्द है।'

आगन्तुक ख़ामोश रहा।

'बड़े कन्जूस हो, दादाजी ! कहाँ काम करते हो ? किसी सरकारी दफ्तर में क्लर्क हो ?'

'नहीं, मैं शिक्षक हूँ। मैं जर्मन भाषा सिखाता हूँ।'

'मगर दादा, मैं शायद तुमसे पहिले कहीं मिली हूँ। तुम्हारी शक्ल मुझे परिचित लगती है। मैंने तुम्हें कहाँ देखा होगा?'

'कहीं बाज़ार में या सड़क पर देखा हो तो देखा हो।'

'हाँ बाज़ार या सड़क पर हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। अच्छा, एक देशी बोतल ही कम से कम पिलाओ! देशी तो पिलाओगे : या वह भी नहीं?'

वह फिर चुप हो गया और इधर-उधर बगलें झाँकने लगा। उसके चेहरे पर पसीना छलक आया और माथे के मुहासे लाल हो गये। वह मन ही मन सारी छोकरियों को देख-देखकर सोच रहा था कि किसको अपने लिये पसन्द करे। साथ ही वह अपनी ख़ामोशी पर परेशान भी हो रहा था। बातें करने के लिए उसके पास कोई ख़ास विषय नहीं था और लियूबा के बार-बार आग्रह से भी उसे चिढ़ हो रही थी। उसे मोटी किटी का गाय-सा भारी बदन पसन्द आया। मगर फिर उसने सोचा कि अन्य तमाम तगड़ी स्त्रियों की तरह वह भी संभोग प्रेम में बड़ी ठण्डी होगी। इसके अतिरिक्त उसका चेहरा भी आकर्षक नहीं था। एक छोटे लड़के की-सी शक्लवाली और सुडौल जाँघोंवाली वीरा ने, जिसकी जाँघें एक तङ्ग जाँघिये में साफ़ दीखती थीं, उसको उत्तेजित किया। छोटी सफ़ेद मनया, जो स्कूल की छोकरी की तरह भोली दीखती थी और तेज़, बलवान और सुन्दर चेहरे वाली जेनी भी उसे पसन्द थी। एक मिनट तक तो उसने क़रीब-करीब जेनी को चुन लेने का निश्चय भी कर लिया, मगर वह कुर्सी से थोड़ा-सा उठकर ही रह गया। उसकी अधिक आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि जेनी की अपनी तरफ़ बिल्कुल लापरवाही का रुख़ देखकर उसने समझा कि इस चकले की सारी छोकरियों में सबसे अधिक बिगड़ी हुई वही है, जिससे वह उसके पास आनेवालों से अपने ऊपर ख़र्च भी बहुत कराती होगी। मगर यह शिक्षक महाशय, जिनकी गृहस्थी काफ़ी बड़ी थी और पत्नी जनाब की मर्दानी ख़्वाहिशों को पूरा करते-करते भर्ता बन गई थी और बहुत से स्त्री-रोगों की शिकार हो गई थी, काफ़ी हिसाब-किताब और जोड़-तोड़ के आदमी थे। यह महाशय स्त्रियों की एक संस्था में अध्यापक का काम करते थे जिससे वह बराबर एक प्रकार के गुप्त विषय-सन्निपात में रहा करते थे, परन्तु उनकी जर्मन शिक्षा, कंजूसी और कायरता उनकी इच्छाओं को बहुत कुछ दाबे रखती थी। परन्तु साल में दो-तीन बार बड़ी तकलीफ़ सहकर और अपनी शाम की शराब का अद्धा भी, जो उसे बहुत प्रिय था, छोड़कर और दफ़्तर से घर तक का लम्बा रास्ता पैदल चलकर गाड़ी का भाड़ा बचाकर वह

पांच-दस रुपये अपनी छोटी आमदनी में से बचा लिया करता था। इस बचत को वह स्त्रियों पर खर्च करने के लिए अलग रख दिया करता था और उसको धीरे-धीरे बड़े उत्साह के साथ, जितना अधिक और सस्ता मज़ा वह उससे पा सकता था, पाने की कोशिश किया करता था। मगर उसको इस मज़े से हो जानेवाली बीमारियों का बड़ा भय रहता था; और अपने थोड़े से दामों में वह इतना खरीदने की कोशिश करता कि वह असम्भव होता था। उसकी भावुक जर्मन आत्मा किसी मासूम, शर्मीली, कवि-कल्पित प्रेमिका लिए तरसती थी। मगर एक मर्द की हैसियत से वह यह भी इच्छा करता था और स्वप्न देखा करता था कि उसे किसी ऐसी स्त्री का प्रेम मिले, जिसका दिल उसके चुम्बनों से सचमुच धड़क उठे और जो एक स्वर्गीय आनन्द-सा अनुभव करती हुई, उससे विषय-भोग करके एक मीठी थकान में डूब जाय।

सभी मर्दों को ऐसी ही इच्छा रहती है—कम्बख्त से कम्बख्त, कुरूप से कुरूप, भोंड़े से भोंड़े और मर्दानगी से हाथ धोये हुये मर्दों को भी यही इच्छा रहती है—जिससे अनन्त काल से अनुभवी स्त्रियं अपने हृदयों से बनावटी प्रेम की ज्वालायें निकालकर अपने हाव-भावों से मर्दों को खुश करना और तूफ़ानी से तूफ़ानी क्षणों में भी ठण्डा रहना अच्छी तरह जानती हैं।

'अच्छा, ज़रा उस्तादजी से कहकर एक पोल्का * नाच ही करवाइये, मास्टर साहब! इन छोकरियों को थोडा-सा नाच का ही मज़ा मिले!' लियूबा ने बड़बड़ाते हुये कहा।

यह प्रस्ताव मास्टर साहब को पसन्द आ गया। नाच के शोरो-गुल और दौड़-धूप में, चुपचाप हिम्मत बाँध कर, उठकर किसी एक छोकरी को पकड़कर नाच-घर से निकाल कर दूसरे कमरे में ले जाना अधिक सुभीते का काम था। नाच-घर के इस समय के शान्त दृश्य में, जिसमें सभी छोकरियाँ चुपचाप बैठी उसकी तरफ देख रहीं थीं, ऐसा करना उसे कठिन हो रहा था।

'पोल्का नाच कराने में क्या दाम लगते हैं?' उसने फिर भी सतर्क होकर पूछा।

'सिर्फ़ आठ आने! तो फिर कराओगे?'

'जैसी तुम्हारी मर्ज़ी...तुम्हारा हुक्म तो मुझे पूरा करना ही होगा।' वह फैय्याज़ी दिखाता हुआ बोला, 'किससे नाच कराने के लिए कहना होता है?'

* एक प्रकार का रूसी नाच।

'वह जो उस्ताद बैठे हैं, उनसे।'

'अच्छा, अभी लो! उस्ताद जी, थोड़ा-सा नाच होने दीजिये।' उसने पियानो पर दाम रखते हुए कहा।

'कौन-सा नाच हुज़ूर को पसन्द है?' इसाय ने दाम जेब में डालते हुए पूछा, 'वाल्ज़ या पोल्का?'

'कोई...कोई भी होने दो...'

'वाल्ज़! वाल्ज़ होने दो!' वीरा ने, जिसे नाचने का बड़ा शौक़ था, अपनी जगह से चिल्लाकर कहा।

'नहीं पोल्का! नहीं, नहीं वाल्ज़!' इत्यादि चारों तरफ़ से कई आवाज़ों ने कहा।

'पोल्का का नाच करो!' लियूबा ने सबके लिए निश्चय करते हुये कहा, 'उस्ताद जी, पोल्का का नाच कराइये! मेरे पति महाशय मेरे लिए नाच करा रहे हैं।' उसने मास्टर साहब की गर्दन से चिपटते हुये कहा, 'क्यों मास्टर दादा, ऐसा ही है न?'

मगर मास्टर साहब ने उसके हाथों से अपनी गर्दन छुड़ाकर कछुये की तरह अपनी गर्दन सिकोड़ ली। लियूबा ने उनकी इस बात का कुछ बुरा न माना और उठकर नियूरा के साथ नाचने लगी। छः छोकरियाँ और जोड़ों में नाच रही थीं। नाच मे सभी छोकरियाँ अपनी कमरें सीधी और सिर निश्चल रखने का प्रयत्न करती हुई बड़ी लापरवाही-सी दिखा रही थीं जो कि चकले की तहज़ीब मे अच्छी चीज़ समझी जाती है। नाच शुरू होते ही शिक्षक महोदय उठे और छोटी मनका के पास जाकर हाथ बढ़ाते हुए बोले :

'चलो जी!'

'चलिये!' मनका ने हँसते हुये उत्तर मे कहा।

मनका उसको लेकर अपने कमरे मे चली गई जो कि मामूली हैसियत के एक चकले की सजधज से सुसज्जित था—एक तरफ़ एक आईना लटक रहा था, एक काग़ज़ के फूलों का गुलदस्ता और उसके पास एक पाउडर का डिब्बा रक्खा हुआ था। दीवार पर सफ़ेद भौंहों के एक अभिमानी नौजवान का मैला चित्र टँगा था। पलँग के सिरहाने, जिस पर एक लाल रङ्ग का कम्बल पड़ा था, एक तुर्की सुल्तान का अपने हरम में आन्दोत्सव का चित्र लगा था, जिसमें सुल्तान एक सुन्दर फ़र्शी हुक्के की निगाली अपने मुँह में लिये बैठा था। दीवालों पर और भी कई चित्र, होटलों के खानसामों और सिनेमा के ऐक्टरों के से चित्र टँगे हुये थे; और एक गुलाबी रङ्ग

का कन्दील छत मे से लटक रहा था। पलँग के उस तरफ एक गोलमेज़, वीयना शहर की बनी तीन कुर्सियों और मेज़ के ऊपर एक काँच की सुराही और उस पर काँच का गिलास रक्खे हुये थे।

'प्यारे, मुझे विलायती शराब और लेमोनेड पिलाओ।' मनका ने अपनी कुर्ती के बटन खोलते हुये चकले की रिवाज के अनुसार कहा।

'बाद में।' शिक्षक महाशय ने गम्भीरता से कहा, 'तुम्हारा काम देखकर तय करूँगा। मगर यहाँ तो सड़ियल शराब मिलती होगी?'

'नहीं, हमारे यहाँ बड़ी अच्छी शराब मिलती है।' मनका ने कहा, 'दो रुपये की एक बोतल मिलती है। मगर तुम इतने कन्जूस हो तो कम से कम मुझे देसी शराब ही पिलाओ। ठीक है, क्यों?'

'अच्छा, देसी शराब पिला दूँगा...'

'लेमोनेड और देसी नारङ्गी शराब, क्यों?'

'अभी एक बोतल लेमोनेड ही मँगाओ, ममझी! शराब के बारे मे बाद मे देखा जायगा। मैं तो तुम्हें शैम्पेन की बोतल तक पिला सकता हूँ। मगर उसका पाना तुम्हारे हाथ में है। अगर तुम मेहनत करोगी और मुझे खुश करोगी तो...'

'अच्छा दादाजी, तो मैं चार बोतल देसी शराब की और दो बोतल लेमोनेड की मगाती हूँ? क्यों? और अपने लिए एक चाकलेट की केक भी? क्यों, ठीक है? हाँ?'

'दो बोतल शराब और एक बोतल लेमोनेड काफी है...अधिक नहीं। मुझे ऐसे मामलों में सौदा करना नहीं भाता। और ज़रूरत होगी तो मै खुद ही मँगाने को कहूँगा।'

'अच्छा, तो मैं अपनी एक सहेली को भी पीने बुला लूँ?'

'नहीं, नहीं, मैं तुम्हारे साथ अकेला ही रहना चाहता हूँ।' मनका ने खिड़की मे से सिर निकालकर, गूँजती हुई आवाज़ में कहा, 'प्यारी ख़ालाजान! दो बोतल देसी शराब और एक बोतल लेमोनेड मेरे लिए मेहरबानी करके भिजवा दो।'

सिमियन एक ट्रे लिये हुये आया और आदत के अनुसार जल्दी-जल्दी बोतलों की कार्क खोलने लगा। उसके पीछे-पीछे लगी हुई ज़ोसिया भी आई और आकर कहने लगी, 'अच्छा-अच्छा आप तो यह घर बिल्कुल अपना ही घर बना कर बैठे हैं। बधाई है आपको, आपके इस बाक़ायदा विवाह पर!'

'दादा जी, मेरी इन ख़ाला को थोड़ी शराब पिलाओ न!' मनका ने प्रार्थना करते हुये कहा और खाला से बोली, 'बैठो खालाजान, थोड़ी शराब पियो!'

'अच्छा-अच्छा धन्यवाद महाशयजी ऐसा लगता है कि मैंने आपको कहीं देखा है।'

मास्टर जी अपनी मूछों को चाटते हुये शराब पीने और ख़ालाजान के वहां से चले जाने की राह देखने लगे। मगर ख़ालाजान ने धन्यवाद देने के बाद शराब का एक गिलास उठाकर अपने सामने रख लिया और बोली :

'महाशय जी, शराब और जितना वक्त आप लें; उसका रुपया मेहरबानी करके पहिले चुका दीजिये। यह आपके लिए भी अच्छा होगा और हमारे लिए भी सुभीते का है।'

रुपये का तकाज़ा मास्टर साहब को बहुत बुरा लगा। प्रेम-वासना के मनमोदकों पर उनको यह यकायक वज्राघात-सा लगा। अस्तु वह चिढ़कर कहने लगे :

'यह क्या ओछापन है! क्या तुमने समझा है कि मैं तुम्हारा रुपया बिना चुकाये ही यहां से भाग जाऊँगा? क्या तुम्हें आदमियों की भी पहिचान नहीं है? दीखता नहीं है कि मैं सरकारी वर्दी में हूँ, कोई उठाईगीर नहीं हूँ। अजीब माँग आप मेरे सामने पेश करती हैं!'

ख़ालाजान ज़रा दबकर बोलीं, 'श्रीमान, नाराज़ न हों। आप इस लड़की को तो उसकी उजरत दे ही देंगे। आप इसके साथ दगा थोड़े ही करेंगे। यह हमारे घर की अच्छी छोकरियों में से है। मगर शराब और लेमोनेड के दाम, मुझे चुका देने के लिए तो मुझे आपसे प्रार्थना करनी ही होगी। आप मुझे इस तकलीफ़ के लिए माफ़ करें। मजबूरी है! मुझे फ़ौरन मालकिन को जाकर हर बिक्री का रुपया दे देना होता है। दो बोतल शराब के दो रुपये और एक बोतल लेमोनेड का चार आना... सवा दो रुपये मुझे देने की आप मेहरबानी करें!'

'क्या कहा? एक बोतल देशी शराब का दाम एक रुपया?' मास्टर साहब ने घृणा से कहा, 'किसी भी स्थान से दस आने में एक बोतल मैं ले सकता हूँ!'

'शराब की दुकान में आपको शराब सस्ती मिलती है तो आप वहीं जाकर पी सकते हैं, जोसिया ने नाराज़गी दिखाते हुये कहा, 'मगर किसी अच्छी जगह जायेंगे तब तो हर जगह एक बोतल का एक रुपया ही देना होगा। हम किसी से ज़्यादा दाम नहीं लेते हैं। लाइये, धन्यवाद! तीन रुपये मे से बाक़ी बारह आने जाकर मैं अभी भेजती दूँ।'

'हाँ, अभी जाकर फ़ौरन बारह आने भेजो!' जर्मन शिक्षक ने ज़ोर देते हुये कहा, 'और अब यहाँ और कोई न आवे।'

'जी नहीं, जी नहीं, अब यहाँ कोई न आवेगा। दिल भरकर आप मज़ा

लूटिये ! ईश्वर आपकी ताक़त बढ़ाये ।'

मनका उठी, दर्वाज़ा बन्द कर उसने चटखनी लगा दी। फिर आकर वह मास्टर साहब की गोद में बैठ गई और अपने उघरे हाथों से उन्हें अपने सीने से चिपटा लिया।

'तुम यहाँ कितने दिनों से हो ?' मास्टरजी ने शराब चुस्की लेते हुये उससे पूछा। उन्हें लगा कि उस नवीन प्रेम-क्रीड़ा के लिए जो अब शुरू ही होनेवाली थी, एक मानसिक मित्रता और एक दूसरे से अधिक जानकारी की ज़रूरत थी। अस्तु हृदय में बेसब्री होते हुये भी उसने मनका से ऐसी बातें शुरू कीं जैसी कि लगभग सभी पुरुष अकेले में वेश्याओं से किया करते हैं और जिनके उत्तर से, बड़े प्राचीन काल से, वेश्यायें मजबूरन झूठ बोला करती हैं—वे मशीनों की तरह झूठे उत्तर देती हैं, जिनसे न तो उनके हृदयों में कोई दुःख उत्पन्न होता है और न किसी प्रकार का क्रोध या उत्साह, क्योंकि वे अपने अनुभव से अच्छी तरह जानती हैं कि पुरुष उनसे क्षणिक उत्साह में यों ही ऐसे प्रश्न पूछते हैं।

'तीन मास ही मुझे अभी इस चकले में बीते हैं।' मनका ने उत्तर में कहा।

'तुम्हारी क्या उम्र है ?'

'सोलह साल की।' मनका ने पाँच साल अपनी उम्र में से घटा कर कहा।

'अच्छा, अभी सोलह ही साल की हो !' मास्टरजी आश्चर्य से झुक कर अपने बूट खोलते हुये बोले, 'मगर तुम यहाँ आई कैसे ?

'एक सरकारी अफ़सर ने मेरी अज़मत ख़राब कर डाली। मेरी माँ बड़ी सख्त हैं। उन्हें पता लग जाता तो वह अपने हाथ से ही मेरा गला घोंट डालती। अस्तु मैं घर से भागकर यहाँ चली आई।...'

'तुम उस अफ़सर को चाहती थीं ? वही तुम्हारा पहिला प्रेमी था ?'

'चाहती न होती तो ऐसी नौबत ही क्यों आती ? उस बदमाश ने मुझसे विवाह करने का वायदा किया था। मगर मेरी अज़मत बिगाड़कर वह मुझे छोड़कर चला गया। वह जो चाहता था उसे मिल ही गया था !'

'उससे ऐसा करने में पहिले दिन तुम बड़ी शर्माई होगी ?'

'ज़रूर, तुम्हें भी शर्म आई होगी...आपको रोशनी में पसन्द है कि बिना रोशनी के ? ज़रा रोशनी कम कर दूँ...ठीक है न ?'

'यहाँ तुम्हारा जी तो ज़रूर ऊब जाता होगा ? तुम यहाँ किस नाम से पुकारी जाती हो ?'

'मुझे मनया कहते हैं! जी तो मेरा यहाँ बड़ा ऊबता है। यह भी कोई ज़िन्दगी है!'

'मास्टरजी ने मनका को पकड़कर ज़ोर-से होंठों पर चूम लिया और फिर पूछा, 'यहाँ अपने पास आनेवाले मर्दों को भी तुम चाहती हो क्या? क्या कोई ऐसे भी आते हैं जिन्हें पाकर तुम्हें खुशी होती है? तुम्हें आनन्द देनेवाले भी कोई आते हैं?'

'हाँ, हाँ!' मनका ने हँसते हुये कहा, 'आप जैसे गुदगुदे आदमी मुझे ख़ासतौर पर पसन्द हैं!'

'अच्छा! मेरे जैसे आदमी तुम्हें ख़ासकर पसन्द हैं? क्यों?

'न जाने क्यों! आप भी मुझे बड़े अच्छे लगते हैं!

मास्टरजी धीरे-धीरे शराब चुसकते हुये कुछ क्षण तक विचार-मग्न होकर कुछ सोचते रहे और फिर उन्होंने मनका से वही बात कही जो लगभग हर एक वेश्यागामी वेश्या के शरीर पर अपना अधिकार जमाने से पहिले कहता है:

'मेरी प्यारी, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। मैं तुम्हें बड़ी खुशी से ले जाकर एक घर में बिठाकर रक्खूँगा!'

'मगर तुम्हारी तो शादी हो चुकी है।' छोकरी ने उसकी अङ्गूठी छूते हुये कहा।

'हाँ, मगर मैं अपनी स्त्री के साथ अब नहीं रहता। वह अपना-स्त्रियों का-फ़र्ज़ पूरा करने के योग्य अब नहीं है।'

'बेचारी! दादाजी, उसको पता लगा कि आप कहाँ-कहाँ जाते हो तो वह ज़रूर रोयेगी।'

'ख़ैर, यह बातें छोड़ो। देखो प्यारी, इसीलिये मुझे बहुत दिनों से तुम्हारी जैसी सुन्दर और मासूम-सी छोकरी की तलाश है। मैं अच्छा कमाता हूँ। तुम्हें एक अच्छे किराये के मकान में अलग रख दूँगा, जिसमें बिजली और नल इत्यादि सब होंगे। खाने-पीने के अच्छे प्रबन्ध और मकान के किराये के अलावा चालीस रुपया मासिक जेब ख़र्च को तुम्हें दिया करूँगा! चलोगी मेरे साथ?'

यह कहकर उसने मनका को पकड़कर ज़ोर से चूमना शुरू कर दिया, परन्तु फिर फौरन ही उसके कायर हृदय में एक भयप्रद विचार आया और उसने काँपती हुई आवाज़ से, बैर भाव से पूछा, 'तुम्हें कोई बीमारी तो नहीं है?'

'नहीं मुझे कोई बीमारी नहीं है। हर शनिवार को सरकारी डाक्टर आकर हम लोगों का मुआयना करता है।'

पाँच मिनट बाद वह उससे अलग हो गई और उससे जो रुपया मिला था, उसे अन्ध विश्वासी रिवाज के अनुसार उस पर थूक कर उसने अपने लम्बे मोज़ो मे रख लिया। इसके बाद उन दोनों में न तो एक दूसरे के प्रति स्वाभाविक प्रेम की चर्चा हुई और न साथ मिलकर एक घर में रहने की। मास्टर जी को मनका की शुष्कता के कारण ज़रा भी सन्तोष नहीं हुआ था, जिससे उन्होंने फौरन ख़ालाजान को अपने पास भेज देने के लिए मनका से कहा।

'ख़ालाजान ! प्यारी ख़ालाजान ! मेरे मालिक आपको बुलाते हैं।' मनया ने बैठक में घुसते हुये कहा और एक आईने के आगे खड़ी होकर अपने बाल ठीक करने लगी।

जोसिया मास्टर जी के पास चली गई। कुछ देर में लौटने पर उसने रास्ते मे ही पाशा को बुलाया और फिर अकेली बैठक में दाख़िल हुई।

'क्यों मनका, तुम मास्टर जी को सन्तुष्ट नहीं कर सकी ?' जोसिया ने हँसते हुए पूछा, 'वह तुम्हारी बड़ी शिकायत करते हैं। कहते हैं कि औरत है कि काठ का शुष्क लट्ठा ! अब मैंने उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए पाशा को भेजा है।'

'छिः छिः कैसा गन्दा आदमी है।' मनका ने मुँह बनाते हुए थूक कर कहा, 'सवालों की झड़ी लगा देता है ! पूछता है, 'क्यों मेरा चूमना तुम्हे पसन्द है ? तुम्हें मज़ा आ रहा है ? खूसट कहीं का ! कहता है कि मुझे ले जाकर घर मे बिठायेगा !'

'सभी इस प्रकार कहते हैं' ज़ो ने लापरवाही से कहा।

मगर जेनी जो आज सबेरे ही से ग़ुस्से में दीखती थी फट पड़ी।

'ख़ुशामदी, दब्बू, कम्बख़्त कहीं का !' वह लाल-पीली होकर, कमर पर अपने दोनों हाथ रखती हुई चिल्लाई, 'मै उस खूसट, गन्दे पशु की गर्दन पकड़कर उसे एक आईने के सामने ले जाकर उसकी थूथड़ी उसे दिखाकर पूछना पसन्द करूँगी, 'कहो ! कितने सुन्दर हो तुम ? और जब तुम्हारे मुँह से लार टपकने लगेगी और तुम्हारी आँखें टेढ़ी-मेढ़ी चला करेंगी और तुम्हारी नाक और गले से गुर्राहट निकल-निकलकर तुम्हारी प्यारी के मुँह पर पड़ेगी तब तुम और कितने अधिक सुन्दर लगोगे ! क्यों ! और इसी पर तुम चाहते हो कि तुम्हारे दो-चार गन्दे रुपयों के लिए प्रेम से मैं तुम्हारे आगे पिघलकर पानी हो जाऊँ और तुम्हें निहारने के लिये आँखें चढ़ाकर अपनी पेशानी में ले आऊँ ? 'फिर बदमाश के मुँह पर दो थप्पड़ इधर से और दो थप्पड़ उधर से, इतने ज़ोर से, लगाऊँ कि वह मुँह से खून उगल दे !'

'चुप जेनी, चुप! अरे चुप! छीः छीः!' ऐम्मा ने उसकी बातों पर घृणा दिखाकर, उसे चुप करते हुये कहा।

'मैं नहीं चुप होऊँगी!' जेनी ने उसकी बात काटकर कहा। मगर फिर वह आप ही चुप हो गई और नथने चढ़ाये हुये गुस्से से कमरे में टहलने लगी। उसकी सुन्दर, गहरी आँखों से आग बरस रही थी।

अध्याय आठवाँ

धीरे-धीरे अन्ना की बैठक में भीड़ होने लगी। रोलीपोली नाम से चकले मे पुकारा जाने वाला रङ्गीला बूढ़ा भी झूमता हुआ आ गया था। वह लम्बे क़द का और छरहरे बदन का था। उसकी नाक हमेशा लाल रहती थी और वह महकमा जङ्गलात के अफ़सरो की-सी एक वर्दी पहिने हुये, ऊँचे-ऊँचे बूट चढ़ाये और बग़ल मे लकड़ी का एक गज दबाये घूमा करता था। तमाम दिन और साँझें वह किसी ऐसे चकले में बिताया करता था जहाँ पीने को शराब और खेलने को बिलियर्ड भी मिल सकते थे। शराब के नशे से हमेशा झूमता हुआ, चकलों के दरबानों, खालाओं और छोकरियों से हँसी-ठठोली करता हुआ और अपनी कहावतें और तुकबन्दियाँ सबको सुनाता हुआ वह चकलों में विचरा करता था। चकलों के सभी निवासी, मालकिनों से लेकर नौकरानियाँ तक, उसका मज़ाक उड़ाती थीं और उसको एक प्रकार की लापरवाही और घृणा की दृष्टि से देखती थी—जिसमें अवश्य बैर-भाव नहीं होता था। कभी-कभी रोलीपोली इन लोगों के काम का साबित होता था—छोकरियों के प्रेमियों के पास उनके ख़त पहुँचा देता था अथवा बाज़ार से उनके लिए ज़रूरत की चीज़ें और दवायें ला देता था अपनी लम्बी चटोरी ज़बान के कारण जिसे वह लटकाये फिरता था और अपना सारा स्वाभिमान नष्ट कर चुकने के कारण वह अक्सर अजनबियों की शराबखोरी में शरीक होकर उनका ख़र्च बढ़वा दिया करता था और ऐसे मौक़ों पर, वह जो कुछ 'उधार' पा जाता था, उसे भी वह चकलों की स्त्रियों पर ही ख़र्च कर डालता था। सिगरेट बीड़ी के लिए थोड़े से पैसे अपने पास

भले ही रख लेता था। अस्तु सब लोग उसको एक प्रकार से पसन्द भी करते थे।

"रोलीपोली आया!" नियूरा ने घोषित किया। ड्योढ़ी में घुसकर दरबान सिमियन से मित्रतापूर्वक हाथ मिला चुकने के बाद टेढ़ी टोपी लगाये, बैठक के द्वार पर आकर खड़े हुए रोलीपोली से नियूरा ने कहा, "अच्छा रोलीपोली, सुनाओ कुछ!"

'हुज़ूर के दर्बार में।' रोलीपोली ने नाटक करते हुये कहना शुरू किया, 'चकलों का नारदमुनि, बेमुल्क का बादशाह, खान्दानी शाहज़ादा, दस्तबस्ता हाज़िर होता है।' फिर उसने दोनों उस्तादों को सम्बोधित करते हुए कहा, 'तानसेनजी! ध्रुपद का राग मुझे बजाकर सुनाइये! इस घर की वज़ीर आज़म खालाजान ज़ोसिया को दस्तबस्ता बन्दगी! ओहो! आप तो सिर्फ़ ईस्टर के त्योहार में ही बोसा देती हैं! यह तो मैं भूल ही गया था! ख़ैर, अब मैं डायरी में लिखे लेता हूँ ताकि आयन्दा भूलने का मौक़ा न आवे!'

इसी तरह हँसी-ठठोली करता हुआ वह सारी छोकरियों का चक्कर लगा गया और आख़िर में जाकर मोटी किटी के पास बैठ गया। किटी ने अपनी मोटी टाँग उठाकर उसकी टाँगों पर रख दी और उसके घुटनों पर अपनी कुहनियाँ टेककर बैठ गई और लापरवाही से उसके चेहरे की तरफ़ देखने लगी। रोलीपोली जेब में से तम्बाकू का डिब्बा और काग़ज़ निकालकर अपने लिए एक सिगरेट बनाने लगा।

'रोलीपोली, तुम कभी सिगरेट पीते-पीते थकते नहीं? जनाज़े की कीलों की तरह मैं तुम्हें हमेशा ही सिगरेट बनाते देखती हूँ।'

रोलीपोली ने उत्तर में फौरन अपनी भौंहें और अपने सिर की खाल सिकोड़ते हुये अपनी एक तुकबन्दी शुरू कर दी:

'मुझको भाती सिगरेट-बत्ती,
बड़ी ही प्यारी! बड़ी ही सच्ची!
कैसे छोड़े इसको कोई!
जिसने पाई उसको भाई!'

'छोड़ दो अब रोलीपोली, कुछ दिन बाद तुम्हें मरना है!' मोटी किटी ने बड़ी लापरवाही से कहा।

'सभी को एक दिन मरना है!'

'रोलीपोली, और इससे भी मज़े की चीज़ कोई सुनाओ!' वीरा ने कहा।

फौरन रोलीपोली ने मज़ाकिया हावभाव से एक दूसरी तुकबन्दी सुनाना शुरू कर दिया :

'आस्मान के असंख्य तारे,
पगले उनको गिनने वाले !
हवा गुनगुनाती गिनले ! गिनले,
पर मैं कहता, रे पगले ! पगले !
कलियाँ हँस हँस कर खिलती हैं,
चिड़ियाँ गा-गाकर मिलती हैं !'

'एक प्रेम का गीत भी मैं तुम्हे सुना सकता हूँ ! वह तुम्हें शायद पसन्द आयेगा !' यह कहकर उसने लरजती हुई आवाज़ में गाना शुरू कर दिया :

'कहाँ चले तुम, बाँके बीर,
काला घोड़ा, नीला चीर।
पूछें ग्राम-वधू बढ़-बढ़कर,
ग्राम छोकरी हों न्योछावर।
पर सवार उत्तर न देवै,
ऍड लगाता बढ़ता जावै।
मूँछें मरोड़े पर मुँह नहिं मोड़े,
ग्राम छोकरियों का दिल तोड़े।'

इसी प्रकार विदूषक का पार्ट खेलता हुआ, रोलीपोली, शाम-शाम भर और रात-रात भर चकलों की बैठकों में बैठा जीवन बिताया करता था। और उससे एक विचित्र प्रकार की मानसिक एकता हो जाने से छोकरियाँ उसको अपना ही-सा समझने लगीं थीं और अक्सर उसकी थोड़ी बहुत रुपए पैसे से भी मदद कर दिया करती थी—कभी उसे शराब खरीद देतीं थीं और कभी ताड़ी मोल ले देती थीं।

रोलीपोली के अन्ना के यहाँ आने के कुछ देर बाद ही दूकानों पर काम करने वाले नाइयों की एक टोली भी जो आज छुट्टी मना रहे थे, घूमती-घामती वहाँ आई। यह लोग आनन्द से शोरगुल कर रहे थे और चकले में दाखिल हो जाने के बाद भी अपना हिसाब-किताब और गप-शप करते रहे। वे आपस में एक दूसरे से अपनी

ऊपरी और असली आमदनी और अपने मालिकों और उनकी स्त्रियों के बारे में बातें करने में लगे हुये थे। यह बिल्कुल आचरणहीन, झूठे और बकवासी लोग थे जो अपने भविष्य के बारे में ऊटपटांग स्वप्न देखते थे—जैसे कि उनमें से कई किसी अमीर विधवा सेठानी की नौकरी करके धीरे-धीरे उसके यार बन जाने का स्वप्न देखते थे। यह लोग अपनी गाढ़ी कमाई के पैसों का पूरा फायदा उठाना चाहते थे, अन्तु वे कटरे के सभी चकलों का पहिले मुआयना कर रहे थे। हाँ, एक ट्रेवेल की पेढ़ी में घुसने की जरूर उनकी हिम्मत नहीं हुई थी, क्योंकि वह उनकी हैसियत के बहुत बाहर का था, परन्तु अन्ना को पेढ़ी में घुसते ही उन्होंने नाच शुरू कर देने का हुक्म दिया जिसमें यह लोग पैरिस के रईसों की नक़ बना-बनाकर स्वयं भी खूब नाचे। मगर उन्होंने कोई छोकरी पसन्द नहीं की और दूसरे सब चकले देख चुकने के बाद वे आने का वायदा करके चले गये।

इनके अलावा सरकारी दफ्तरों के क्लार्क, जो पेटेण्ट लैदर के बूट पहिने हुए छैला बने थे, कई विद्यार्थी और ऐसे अफ़सर भी आये, जिन्हें चकले की मालकिन और दूसरे मेहमानों की दृष्टि में अपना स्वाभिमान खोने का बड़ा भय लग रहा था। धीरे-धीरे अन्ना की बैठक में शोरगुल और चहल-पहल का एक ऐसा समा बँध गया कि किसी को वहाँ आना या रुकना बुरा नहीं लगता था। सोनका से बिना नागा रोज़ आकर मिलने वाला उसका प्रेमी भी आया जो सोनका के पास रोज़ घण्टों बैठा-बैठा स्नेह-पूर्ण, बीमार की-सी आँखों से उसे घूरा करता था और जो सिसकियाँ भर-भरकर और बेहोश हो-होकर उसका इसलिए नाक में दम किये रहता था कि वह चकले में रहती है और रविवार के दिन भी व्रत नहीं रखती, और ठीक तरह पर हलाल किया हुआ मांस नहीं खाती और घर, कुटुम्ब और धर्म के पथ से भटक आई है।

लगभग रोज़ ही, शोरोगुल शुरू हो जाने पर, ज़ोसिया चुपचाप उसके पास आकर, होंठ चबाती हुई, पूँछती थी :

"यहाँ बैठे-बैठे क्या करते हो, मिस्टर? मुफ्त में गर्मा रहे हो? जाओ छोकरी को अन्दर ले जाकर ज़रा मज़ा लूटो।'

सोनका और उसका प्रेमी, दोनों ही यहूदी थे और एक ही कस्बे के रहनेवाले थे। इन दोनों को ऐसा लगता था, ईश्वर ने ख़ास तौर पर एक दूसरे से इश्क़ करने के लिये ही सिरजा था। मगर भाग्य की मार! कुछ ऐसे वाक़यात हो गये कि इन दोनों का एक दूसरे से वियोग हो गया। उनके क़स्बे में यहूदियों के ख़िलाफ़ वह

भयङ्कर बलवा हो गया जिसमें यूरुप की दूसरी जातियाँ यहूदियों को खासकर लूटा और क़त्ल किया करती हैं। इस घटना से यह बेचारे कुछ समय के लिए एक दूसरे से अलग हो गये। मगर प्रेम का बन्धन भी बड़ा ज़बरदस्त होता है, जिसने इस नीमान नाम के नौजवान को गली-गली की खाक छनवाकर आखिरकार, अपनी प्रेमिका से ला मिलाया। अब यह नौजवान इसी शहर में एक दवाई की दूकान में नौकर था और रोज़ अपनी प्यारी के पास आया करता था। वह जपतप करने वाला एक धार्मिक यहूदी था। वह जानता था कि सोनका को उसकी माँ ही ने अपने हाथों से एक बुर्दाफरोश के हाथों बेच डाला था जिसके बाद सोनका की बड़ी दुर्गति हुई थी—वह बेचारी एक के बाद दूसरे के हाथ बहुत से हाथों में बेची गई और उसे बहुत-सी भयङ्कर और दर्दनाक स्थितियों में से गुज़रना पड़ा। इन तमाम बातों और घटनाओं के विचार से इस धार्मिक यहूदी की आत्मा में बड़ी ग्लानि उत्पन्न होती थी। मगर इश्क़ बुरी बला है, जिसके कारण वह रोज़ शाम को अन्ना की बैठक में नज़र आता था। जैसे ही वह किसी तरह, पेट काट-कूटकर, अपनी आमदनी में से, जिसमें उसकी बड़ी मुश्किल से गुज़र होती थी, एक-दो रुपया बचा लेता था वैसे ही फौरन वह सोनका को लेकर एक कमरे में चला जाता था। मगर इससे न तो उसे ही कोई खुशी हासिल होती थी और न सोनका को। क्षणिक आनन्द और एक दूसरे का शरीर प्राप्त कर लेने के बाद वे दोनों दुःखी होकर रोने लगते थे और एक दूसरे को बुरा-भला कहते हुए आपस में लड़ने लगते थे। बाद में सोनका मुँह लटकाये और आँखें लाल किये बैठक में लौटती थी।

मगर आमतौर पर उसके पास रुपया नहीं रहता था, जिससे वह शाम को अपनी आशना के पास बैठा-बैठा, उसको देख-देखकर समय ही गुज़ारा करता था। अगर इत्तफ़ाक से कोई मेहमान कभी सोनका को पसन्द कर लेता था और उसे अन्दर कमरे में ले जाता था तो यह अभागा नौजवान, बड़े सब्र और ईर्षा से सोनका के लौटने का इन्तज़ार किया करता था। और जब वह लौटकर फिर उसके पास आकर बैठ जाती थी तब धीरे-धीरे, बिना उसकी तरफ़ देखे, जिससे कि दूसरों का ध्यान उसकी तरफ़ न जाय, वह सोनका को लानत-मलामत करने लगता था। सोनका बेचारी की सुन्दर आँखों से ऐसे अवसरों पर कसाई की गाय की-सी बेबसी टपका करती थी।

चश्मे की दूकान में काम करने वाले जर्मनों की एक टोली भी अन्ना के यहाँ आई; और मछलियाँ और खाने-पीने का सामान बेचनेवाली दूकान के क्लार्कों की

एक टोली भी आई; और कटरे के बड़े परिचित दो नौजवान भी आये जिनके दोनो के सिर के बाल झड़-झड़ाकर जगह ब जगह गन्ज के निशान बन रहे थे। इनमें से एक का नाम निकी था। वह जिल्दसाज़ी का काम करता था। दूसरे का नाम मिशका था और वह गवैया था। इन्हीं नामों से उनको कटरे के चकलों में भी पुकारा जाता था। उनका भी चश्मे की दूकान के कार्ल कार्लोविश और मछली की दूकान के बोलोदका की तरह, बड़ी खुशी की आवाज़ों, चीखों और बोसों के साथ अन्ना की बैठक में स्वागत किया गया जो उन लोगों को खुश करने के लिये था। फुर्तीली नियूरका यह जानते ही कि कौन आया है, उछलकर अपनी आदत के अनुसार जेनी के पास जा पहुँचती और कहती :

'जेनका तुम्हारा पति आ गया!'

अथवा कूदती हुई मनका के पास जाकर कहती।

'नन्ही मनका, तुम्हारा आशिक़ आ गया!'

मिशका गवैया-सवैया तो क्या था—मादक वस्तुओं की एक दूकान का मालिक था। मगर वह अपने आपको शायद तानसेन का भी उस्ताद समझता था और अन्ना के यहाँ घुसते ही, बकरे की तरह, गले में से आवाज़ निकालता हुआ अलापना शुरू कर देता था। यह उसकी हमेशा की आदत थी।

बैठक में बराबर गाना और नाच हो रहा था। टमारा का प्रेमी सेनका भी आया। मगर आज अपनी रोज की आदत के अनुसार उसने शान-बान नहीं दिखाई; न तो उसने उस्ताद जी से बाजा बजवाया, न छोकरियों को चॉकलेट खिलवाई और न और कोई तबाही ख़रीदी। न जाने क्यों वह आज बड़ा सुस्त था और अपने दाहिने पाँव पर लँगड़ाता हुआ-सा सबसे आँख बचाता हुआ घुसा था। शायद उसके धन्धे में कोई गड़बड़ खड़ी हो गई थी जिससे वह परेशान था। उसने घुसते ही एक बार सिर्फ अपना सिर हिलाकर टमारा को अपने पास बुला लिया और उसको लेकर उसके कमरे में चला गया। ऐग्मोन्ट लावरेत्सकी नाम का ऐक्टर भी आया जो दाढ़ी-मूँछ मुड़ाये, लम्बे क़द का, राजदर्बार का विदूषक-सा लगता था। उसका चेहरा भोंड़ा और घृणोत्पादक था।

मछली की दूकान के क्लर्क नौजवानों के जोश से, और व्यवहारिक सभ्यता की किताबों से सीखे हुये तमाम शिष्टाचार के हाव-भावों को दिखाते हुये नाच रहे थे। छोकरियाँ भी उनके साथ इसी प्रकार का व्यवहार करती हुई, हाथ लटकाये हुये और अभिमान से गर्दनें ऊँची एक तरफ़ को नज़ाकत से ज़रा सिर झुकाये

हुये मानो भले घरों की कोमलांगियाँ नाचने-नाचते थक गई हों, वे नाच रही थीं ; क्योंकि यह लोग उनसे भी इसी प्रकार का शिष्ट व्यवहार चाहते थे। वे यह नाटक करते हुये, अपने मन में अपने आपको पैरिस के अमीरों के दर्जे का समझ रहे थे—जो शायद चकले की छोकरियों को खुश करने के लिए ही मानो उनके साथ नाचने को राजी हो गये थे। बीच-बीच में नाच बन्द करके, इस अभिनय में रूमालों से मुख पर पँखा झलते हुये अपना पसीना सुखाना और लापरवाही से थकान कम करना भी जरूरी था। मगर फिर भी वे इतने जोश-खरोश से नाच रहे थे कि क्लार्क पसीने से लथपथ हो रहे थे।

कई चकलों में दो-तीन बखेड़े भी इसी बीच में हो गये थे। कोई आदमी खून से लथपथ, जिसका चेहरा फीकी चाँदनी में खून से काला दीखता था, गालियाँ बकता हुआ, गली में से भागा जा रहा था। अपने घावों की चिन्ता से अधिक उसे अपनी टोपी की चिन्ता दीखती थी जो कहीं झगड़े में खो गई थी और जिसे वह इधर-उधर ढूँढ़ता हुआ दौड़ रहा था। छोटे कटरे में कुछ सरकारी दफ्तरों के बाबू जहाजों पर काम करने वालों से भिड पड़े थे। थके हुए उस्ताद ऊँघते हुये, मानो सन्निपात में हों, आदत के अनुसार बेचारे मशीनों की तरह पियानो बजा रहे थे। रात ढल चुकी थी।

अचानक सात कालिज के विद्यार्थी, एक प्रोफेसर और एक अखबार का संवाददाता अन्ना के चकले में दाखिल हुये।

अध्याय नवाँ

यह सब लोग, सिवाय एक सम्वाददाता को छोड़कर, आज सबेरे से ही पहली मई का त्योहार कुछ अपनी परिचित स्त्रियों के साथ मना रहे थे। नावें खेते हुये वे नोपर नदी के उसपार गये थे और वहाँ सुगन्धित घनी झाड़ियों में बैठकर, उन्होंने खाना पकाकर खाया था; और धूप हो जाने पर नदी के गरम और तेज़ पानी में वे और स्त्रियाँ बारी-बारी से तैरे और नहाये थे; घर की बनी मसालेदार ब्रान्डी पी थी; अपने देश के रसीले गीत गाये थे; और अँधेरा हो जाने पर घर लौटे थे जब कि नदी की काली-काली लहरें उनकी नावों से टकरा टकराकर, तारों की छायाओं को अपने दामन में, बिजली की रुपहली बत्तियों की तरह उछालने लगी थीं। नावों से उतरकर जब वे किनारों पर आये तो उनकी हथेलियाँ पतवारों को चलाते-चलाते जलने लगी थीं और उनके हाथ-पाँवों में एक मीठा-मीठा दर्द हो रहा था, जिससे उनके शरीरों में एक आनन्दपूर्ण थकान हो रही थी।

वे अपनी मित्र युवतियों को पहुँचाने उनके घर तक गये थे और उनकी वाटिकाओं के द्वार पर उनसे देर तक बातें कर-करके, हँस-हँसकर और इस प्रकार ज़ोर-ज़ोर से हाथ मिलाकर मानों वे पहिया घुमा रहे हों, विदा हुए थे।

सारा दिन उनका आनन्द और ऊधमचौकड़ी में बीता था जिसमें शोरोगुल तो उन्होंने इतना काफ़ी मचाया कि थोड़े-थोड़े थक भी गये थे, मगर उन्होंने जवानी का संयम कायम रखा था—न तो वह नशे में धुत्त हुए थे और न उन्होंने आपस मे,

जो जवानी की चौकड़ी में जरा असाधारण-सी बात है, ईर्षा से गाली गलौज और हाथा-पाई ही की थी। हाँ, उनका स्वभाव आज दिन भर ऐसा बने रहने के कई कारण भी थे। एक तो धूप बड़ी सुहावनी थी; दूसरे दरिया के किनारे की जीवन-दायिनी हवा में, घास और झाड़ियों की सुगन्ध में वह दिन भर रहे थे; तीसरे तैरने और नाव खेने के कारण वे अपने शरीरों में एक मस्त ताक़त और फुर्ती का आभास पा रहे थे, और चौथे उनके साथ परिचित भले घरों की चतुर, दयावान, पवित्र और सुन्दर लड़कियाँ थी। मगर उनके अज्ञान में—उनके बिल्कुल न जानते हुए—उनका मस्तिष्क ठीक रहते हुए भी, उनकी कामवासना—स्वस्थ और स्वाभाविक नवयुवकों की लीलापूर्ण काम-वासना, स्त्रियों के हाथ पकड़ने और उन्हें उठा-उठाकर नाव में चढ़ाते वक्त उनके सीने से लग जाने से, स्त्रियों के कपड़ों से आनेवाली सुगन्धों से, स्त्रियों की जल-क्रीड़ाओं और गहरे पानी में चले जाने पर, डर-डरकर चिल्लाने से, उनके शरीरों को लापरवाही से सेमोवार के चारों ओर घास पर झुके देखने से, और इसी प्रकार की दूसरी आज़ादियों से, जो उस प्रकार के सैर-सपाटो में अनिवार्य होती हैं, जग चुकी थी, क्योंकि पृथ्वी, घास, पानी और सूर्य्य की धूप से निर्द्वन्द संपर्क होने पर आदमी में वह प्राचीन, शानदार और आज़ाद पशु फिर जागने लगता है, जिसको मनुष्यों ने डरा-डराकर कुरूप कर दिया है।

अस्तु, आधीरात के लगभग जब यह आठों आदमी, ख़ूब खा-पीकर, विद्यार्थियों के एक विश्राम-गृह के गरम, कमरे में से निकलकर, बाहर की मीठी, शीतल और सुगन्धित वायु में आये तो उन्हें गली की अँधियारी बड़ी खली और आकाश और मकानों में इधर-उधर जलनेवाली बत्तियों और अँगीठियों ने, और न जाने कहाँ से आनेवाली वायु मे मिली उन सुगन्धों ने जो उनका माथा फेरे दे रहीं थीं, उन्हें अपनी ओर बुलाया। उनको अपने हृदयों में एक आग जलती हुई लगी जो उन्हें घुलाये-सा दे रही थी—किसी बात की उनको बड़ी अभिलाषा और उत्कण्ठा हो रही थी। दिन-भर की थकान के बाद, आराम और खानपान से पुट्ठों में नई ताक़त आ जाने और फेफड़ों में बहुत-सी हवा भर जाने, और रगों में लाल-लाल ख़ून फुरती से बह उठने से उन्हें बड़ा आनन्द और आत्मविश्वास हो रहा था। बिना कुछ कहे, सोचे या समझे, आज की रात—सोते हुए उस जङ्गल में, कपड़े शरीर से उतारकर किसी बनवाला के घास पर पड़ने वाले क़दमों के पीछे, सूँघते हुए दौड़ते, और उस बाला

को आख़िरकार पकड़कर छाती से चिपटा कर अपनाने के लिए—चीखचीखकर बुला रही थी।

मगर इन आठों को अब एक-दूसरे से अलग होना असम्भव था। दिनभर वह साथ-साथ रहकर भेड़ों के एक झुण्ड की तरह बन गये थे, जिसमें जिधर एक का रुख होता था, उधर ही सब जाने को तैयार हो जाते थे। अस्तु वे साथ-साथ विश्राम-गृह के द्वार के आगे, सड़क के खरंजे पर खड़े अपना वक्त ख़राब कर रहे थे और विश्राम-गृह में थोड़े बहुत घुसने वालों का मार्ग भी रोक रहे थे। वे इस बात की आपस में दिखावटी चर्चा कर रहे थे कि बाक़ी रात कहाँ बिताई जाय। सरकस में जाने का विचार हुआ। मगर वह बहुत दूर था। वक्त भी ज्यादा हो चुका था। अब तक बहुत-सा तमाशा ख़त्म हो चुका होगा और टिकटों के दाम भी वहाँ अधिक थे। वोलोद्या पावलोव ने अपने घर जाकर वहाँ रक्खी हुई एक दर्जन शराब की बोतलें ख़त्म करने का प्रस्ताव किया। मगर इतनी रात को किसी गृहस्थ के घर जाकर, दबे पावों घुसकर, घुसपुस-घुसपुस धीरे से एक दूसरे के कान में बातें करते हुए, शराब पीने का प्रस्ताव भी पसन्द नहीं किया गया।

'मैं बताऊँ, यारो!' लिखोनिन नाम के काफ़ी उम्र के, लम्बे क़द और झुकी कमर के, दाढ़ीवाले, मनहूस सूरत के विद्यार्थी ने कहा, "चलो यार, एक गाड़ी में बैठकर किसी चकले में छोकरियों के पास, चलें!" वह विचारों में अराजकता का पक्षपाती था, परन्तु बिलियर्ड की मेज़ों, ताशों और घुड़दौड़ों में जुआ खेलने का उसे बड़ा शौक़ था। सच तो यह है कि वह बड़ा खुला खिलाड़ी था। परसों ही उसने व्यापारियों के क्लब में जुए की मेज़ पर एक हज़ार रुपये जीते थे जो उसकी जेबों में, बाहर आने के लिए उछल रहे थे।

'ज़रूर! ज़रूर! ठीक कहा बन्धु, तुमने!' किसी ने उसका समर्थन करते हुये कहा, 'चलो चलें!'

'अरे भाई, रात क्या यों ही थकावट के कामों में बीतेगी...' दूसरे ने अक़्लमन्दी दिखाते हुये बनावटी थकान का ज़िक्र करते हुये कहा।

तीसरे ने एक दिखावटी जँभाई लेते हुये कहा, "नहीं यार, चलो अपने-अपने घर चलें...चलो...बन्दगी...आज भर के लिए काफ़ी हो चुका!"

"हाँ, हाँ तुम तो सोने में ही बड़े बहादुर हो!" लिखोनिन ने उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा, 'कहिये प्रोफ़ेसर साहब, आप चलेंगे?" प्रोफ़ेसर यारचेन्को ज़िद्दी और इस समय सचमुच गुस्से में भी दीखता था। परन्तु शायद उसको भी इस

समय पता नहीं था कि उसके दिल के एक कोने में कौन सी ख्वाहिश घर कर रही थी।

'मुझे तो माफ़ करो, लिखोनिन। मुझे दीखता है कि अब हम लोग बिल्कुल मूअरपन पर उतर आये हैं। अभी तक का समय तो हमने सब बड़ा अच्छा, स्नेहपूर्वक और सरलता से बिताया, मगर अब आप, शराब पी लेने पर जानवरों की तरह, कीचड़ में लोटने की तैयारी कर रहे हैं! मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।'

'अगर मेरी याददाश्त मुझे धोखा नहीं दे रही है,' लिखोनिन ने शान्तिपूर्ण ताना देते हुए कहा, 'तो मुझे याद पड़ता है कि पिछले हेमन्त मे ही हम दोनों एक प्रोफेसर के साथ, एक चकले में बैठे-बैठे पियानोफोर्ट में एक गिलास बरफ का पानी उड़ेल रहे थे और छोकरियों के साथ नाच भी रहे थे।'

लिखोनिन ने सच कहा था। यारचेन्को ने अपने विद्यार्थी-काल में और उसके बाद भी जब वह विश्वविद्यालय में रहता था, बड़ी औघड़ ज़िन्दगी बिताई थी। शहर के सभी शराब-ख़ानों, नाचघरों और आनन्द की जगहों मे उसके छोटे-मोटे, गोलमटोल शरीर और उसके गुलाबी, कामदेव के-से रङ्गे हुए गालों और उसकी चमकीली, तर, दयार्द्र आँखों से सभी परिचित थे और उसकी जल्दबाज़ी की गड़बड़ बातें और तेज़ हँसी सबको याद रहती थी।

उसके साथियों की समझ में ही नहीं आता था कि वह पढ़ने के लिए वक्त कहाँ से निकाल लेता था, क्योंकि वह अपने इम्तहान हमेशा ही अच्छे नम्बरों से पास किया करता था और प्रोफ़ेसर उससे बड़े खुश रहते थे। परन्तु अब धीरे-धीरे यारचेन्को अपने पुराने दोस्तों और बोतल के साथियों से अलग रहने लगा था। वह अब विद्वान प्रोफेसरों की सङ्गति में अधिक रहने लगा था, क्योंकि उसका मान भी बढ़ रहा था और उसको अगले वर्ष के लिए एक बड़े प्रोफेसर का दर्जा भी दिया जानेवाला था। अक्सर वह साधारण बातचीत में 'हम विद्वान लोग...' वाक्य का भी प्रयोग करने लगा था। विद्यार्थियों से दोस्ती, उनके साथ फिरना और उनकी सभाओं, जुलूसों और हड़तालों मे शरीक होना, अब उसे कठिन हो गया था। मगर विद्यार्थियों को खुश रखने के फ़ायदे भी वह जानता था, जिससे एकाएक वह अपने पुराने दोस्तों को छोड़ भी नहीं सकता था, परन्तु लिखोनिन के शब्दों से उसे बड़ी चोट पहुँची।

'हे भगवान, नासमझी में हम लोगों ने क्या-क्या काम किये, उन्हें गिनने से क्या फायदा? बचपन में हम लोग अपने घर से शक्कर चुराकर भी खाते थे,

अपने कपड़े गन्दे कर लेते थे, तितलियों को पकड़ कर उनके पाँव उखाड़ लेते थे।' यारचेन्को ने गुस्से से बड़बड़ाते हुये कहा, 'मगर उस सबकी भी एक इन्तहा होती है। मैं आपको किसी क़िस्म की सलाह या शिक्षा देना नहीं चाहता। मगर आखिर हम लोगों को अपने विचारों के अनुसार तो चलना ही चाहिये। हम सब मानते हैं कि वेश्यावृत्ति मनुष्य-समाज की एक बड़ी भयङ्कर बीमारी है। साथ ही हम लोग यह भी मानते हैं कि इस बीमारी के लिए स्त्रियों से अधिक मर्द ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि बाज़ार में जिस चीज़ की माँग होती है, वही बिका करती है—उसी को लाकर दूकान पर रक्खा जाता है। ऐसी हालत में शराब के नशे में होकर मैं वेश्याओं के पास जाऊँ तो मैं तीन के प्रति पापी बनता हूँ—एक तो उन अभागी, मूर्ख स्त्रियों के प्रति जिनसे मैं अपने रुपये के बल पर यह निकृष्ट कार्य करवाऊँगा, दूसरे मनुष्य-समाज के प्रति, क्योंकि घण्टे दो घण्टे के लिए अपनी पशु वृत्तियाँ तृप्त करने के लिए किसी औरत को भाड़े पर लेकर मैं वेश्यावृत्ति की अधम संस्था को कायम रखने मे साझीदार होता हूँ; और तीसरे स्वयं अपनी आत्मा और अपनी बुद्धि के प्रति भी यह बड़ा कुकर्म और पाप है।'

'ओ हो हो हो!" लिखोनिन ने एक तरफ को गर्दन लटकाकर अपना सिर उसके शब्दों की तान मे हिलाते हुये धीमी आवाज़ मे कहा, "हमारे फ़िलासफर साहब ने तो एक डाक गाड़ी ही छोड़ दी!'

'हाँ, तुम्हारे लिए इस तरह मज़ाक उड़ाना बड़ा आसान है।' यारचेन्को ने उत्तर में कहा, 'मगर मेरा विचार है कि हमारे दुखी रूसी जीवन में इससे अधिक दुःख की और कोई बात नहीं है कि हम लोग अच्छे से अच्छे विचारों को मज़ाक में उड़ा देते है। आज हम लोग यह कह सकते है कि, 'उहँ! हमारे चकले में न जाने से चकले थोड़े ही बन्द हो जायेंगे!' तो फिर पाँच बरस बाद हम यह भी कहेंगे कि 'उहँ! हमारे एक रिश्वत न लेने से सरकारी दफ्तरों में रिश्वत चलना थोड़े ही बन्द हो जायगी, है तो रिश्वत लेना बड़ी बुरी चीज़! मगर हमारे भी तो घर-गृहस्थी और बाल-बच्चे है! और फिर हम भी कोरे विचारों की दुनियाँ में ही विचरने और अमल कुछ न करने के कारण दस बरस बाद नरम दल में शरीक होकर बड़े-बड़े आदमियों के पिछलग्गू बने फिरेंगे और अपनी आरामगाहों में बैठे-बैठे व्यक्तिगत स्वाधीनता पर व्याख्यान झाड़ते हुये कहा करेंगे, 'जैसा देस वैसा भेस'। ईश्वर की क़सम किसी नेता ने कुछ रोज़ पहिले ही रूसी विद्यार्थियों को रूस के भावी क्लार्क कहकर ठीक ही सम्बोधित किया था!'

तो अपना समय राजनीति, प्रेम, सिनेमा और थिएटर और बीच-बीच में कुछ-कुछ पढ़ने में बिताया करते थे मगर रामसेस अपना समय अधिकतर मुकदमों की छान-बीन और अदालत माल के फ़ैसलों, जायदादों और व्यापार के झगड़ों, वारिसी की बारीकियों के अध्ययन में बिताया करता था। अपने आप ही, रुपये की उसको ज़रूरत न होते हुये भी, उसने एक नोटरी के यहाँ क्लर्की की और फिर एक मैजिस्ट्रेट का सेक्रेटरी बनकर रहा और पिछले पूरे साल भर तक अदालतों के मुक़दमों की एक अखबार को रिपोर्टें भेजता रहा और एक शक्कर के कारखाने के मंत्री के सहायक की तरह काम करता रहा। बाद में जब इस कारखाने की तरफ़ से एक साझीदार के खिलाफ़ मुक़दमा चला तो रामसेस ने ऐसी होशियारी से काम किया कि अदालत से बिलकुल अपनी इच्छा के अनुसार ही फैसला लिखा लिया।

उसकी उम्र कम होते हुये भी, अच्छे अच्छे वकील भी—यद्यपि ज़रा बड़प्पन के साथ—उसकी राय को सुना करते थे। रामसेस को अच्छी तरह जाननेवाले शुरू से ही समझते थे कि रामसेस अवश्य एक दिन किसी अच्छे रुतबे पर होगा—बल्कि रामसेस खुद भी अपने इस विश्वास को गुप्त नहीं रखता था कि पैंतीस वर्ष की उम्र होते-होते वह लगभग दस लाख रुपया अपनी माल की वकालत से कमा लेगा। रामसेस के साथी अक्सर उसको अपनी सभा-सोसायटियों और कक्षा का प्रधान चुन लेते थे। मगर वह ऐसे सम्मानों को धन्यवाद सहित वक्त न होने का बहाना करके स्वीकार नहीं करता था। मगर जब कभी उसके किसी मित्र का कोई मुक़दमा होता था तो वह उसमें अवश्य भाग लेता था और ऐसी अच्छी और समझदारी की बहस करता था कि अक्सर दोनो पक्ष खुश हो जाते थे और आपस में समझौता कर लेते थे। यारचेन्को की तरह वह भी कालिज के विद्यार्थियों को खुश रखने के फायदे अच्छी तरह समझता था। यद्यपि वह अपने आपको दूसरों से कहीं ऊँचा समझने के कारण दूसरों को हिकारत की नज़र से देखा करता था, परन्तु वह अपना यह भाव कभी भूलकर भी अपने चेहरे पर लाने की ग़लती नहीं करता था।

'देखो, पैट्रोविश, तुम्हें तो कोई ज़बर्दस्ती गिराने की कोशिश नहीं कर रहा है !' रामसेस ने सुलह कराने की चेष्टा करते हुए यारचेन्को से कहा, 'इतने रंजो-मातम की क्या ज़रूरत है ? बात बड़ी मामूली-सी है ! कुछ रूसी भद्र पुरुष हँसी-खेल में, गाते-नाचते हुए और शराब पीते हुए बाकी रात बिताना चाहते हैं। मगर सब

आनन्द की जगहें और शराबखाने इस वक्त बन्द हैं। सिर्फ चकले ही इस वक्त ऐसी जगहें हैं जहाँ उनको यह सुविधाएँ मिल सकती हैं। तो क्या...'

'तो क्या चकलों में जाकर बिक्री के लिए बैठी हुई स्त्रियों से हम हँसी-खेल करें? वेश्याओं से? चकलों में जाकर? क्यों?' यारचेन्को ने उसकी मजाक उड़ाते हुए उसको चिढ़ाया।

'ऐसा भी हो तो क्या? एक दार्शनिक का अपमान करने के लिए उसे एक दावत में गवैयों के साथ बैठा देने पर उसने कहा था, 'चलो मेरे यहाँ बैठने से इस जगह की हैसियत तो बढ़ जायगी!' उसी तरह मैं भी तुमसे कहता हूँ कि तुम्हारी आत्मा बिक्री की स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करने के लिए तैयार नहीं है तो तुम वहाँ चलकर अलग बैठ जाना और अपनी फूलती हुई पवित्रता को भङ्ग न करके वैसे ही लौट आना।'

'तुम्हारी दलीलें तो रामसंस, ऐसी ही हैं' यारचेन्को ने नाराज़गी से कहा, 'जैसी कि वह घृणित तमाशबीन 'बूर्जुआ' दिया करते हैं जो कि लोगों को बाज़ार में फाँसी के तख्तों पर लटकता देखने जाते हैं मगर कहते यही जाते हैं कि हम तो मौत की सज़ा के एकदम खिलाफ हैं, हमसे और इस फाँसी देने से कोई सम्बन्ध नहीं। इसकी सारी ज़िम्मेदारी सरकार पर है।'

'ख़ूब कहा यारचेन्को, तुमने! और जो कुछ तुमने कहा वह कुछ हद तक सही भी है। मगर तुम्हारी मिसाल हम लोगों पर लागू नहीं होती। किसी बीमारी का इलाज बिना उसको अच्छी तरह देखे और समझे नहीं किया जा सकता। हम लोग जो इस समय यहाँ इस विश्राम-गृह के द्वार पर खड़े लोगों के आने-जाने का रास्ता रोक रहे हैं, हम सब को ही एक दिन इस वेश्यावृत्ति की समस्या को हल करने का काम हाथ में लेना पड़ेगा! लिखोनिन को, मुझको, बोरया सोबाशनीकॉव और पावलोव को न्यायाचार्यों की दृष्टि से और पेट्रोवस्की और टोल्पीजिन को डाक्टरों की दृष्टि से, इस समस्या को एक दिन हाथ में लेना ही है। हाँ, वेल्टमैन अवश्य गणितशास्त्र पढ़ता है। मगर गणित पढ़कर वह किसी विद्यालय में शिक्षक होगा और अपने विद्यार्थियों की उसे रहनुमाई करनी होगी—कम से कम उसे अपने बाल-बच्चों की तो रहनुमाई करनी ही होगी। अस्तु वह भी इस विषय को अच्छी तरह समझले तो अच्छा है! और तुम्हें लाठी लेकर इस बला को बाहर निकाल देना है। तो तुम्हारे लिए भी यही अच्छा है कि तुम भी इसे अच्छी तरह देख और समझ तो लो। तुम तो इतिहास और पुरातत्ववेत्ता हो! तुम्हें भी क्या यह जानने की ज़रूरत

नहीं है कि प्राचीनकाल में और इस समय की वेश्यावृत्ति में क्या-क्या भेद है? क्या यह ज्ञान प्राप्त करके तुम दुनिया का भला नहीं कर सकते?'

'शाबाश रामसेस, वाह! वाह! वाह!' लिखोनिन ने चिल्लाकर कहा, 'वाह! खूब कहा! अब और सोच-विचार की और रुकने की क्या देर है। पकड़ो टॉग प्रोफ़ेसर साहब की और ले चलो एक गाड़ी में डालकर!'

विद्यार्थी हँसते हुए यारचेन्को को पकड़कर ले चले। सभी की हृदय से स्त्रियों के पास जाने की ख्वाहिश हो रही थी। मगर लिखोनिन के सिवाय और किसी को इतनी हिम्मत नहीं थी कि खुलकर प्रस्ताव करता। मगर अब यारचेन्को की मज़ाक उड़ाने के बहाने सारा मामला बड़ा आसान हो गया था। यारचेन्को ने हाथ-पैर पटके और वह गुस्सा दिखाता और हँसता हुआ छूटने की कोशिश करने लगा। इतने में एक लम्बा, मुच्छन्दर कानिस्टबल जो इन लोगों को कुछ देर से सड़क के उस पार खड़ा, ध्यान-पूर्वक देख रहा था, उनके पास आकर बोला,

'देखिये बाबू लोग, आप यहाँ भीड़ लगाकर रास्ता न रोकिये! चलते-फिरते रहिये!'

नौजवानों की टोली आगे बढ़ गई। यारचेन्को धीरे-धीरे ठण्डा पड़ने लगा था। वह कह रहा था:

'देखो भाई, अगर तुम मुझे मजबूर ही करते हो तो मैं चलने को तैयार हूँ... मगर यह न समझना कि मैं रामसेस महाशय की अक्लमन्दी की बातें स्वीकार करता हूँ...मुझे सिर्फ इस टोली को बिगाड़ना पसन्द नहीं है। मगर मेरी एक शर्त तुम्हें माननी होगी...वहाँ हम लोग थोड़ी शराब पीकर गपबाज़ी और हँसी-मज़ाक से अधिक और कुछ न करेंगे। अपने मुँह पर वहाँ हम-लोग कालिख नहीं पोतेंगे! सोचो तो, हम लोग—रूसी समाज के स्तम्भ—क्या वेश्याओं के साथ अपना मुँह काला करेंगे?'

'बिल्कुल ठीक! मान लिया! मैं क़सम खाता हूँ कि जो कुछ तुम कहते हो उससे अधिक कुछ न होगा!'

'ठीक है! ठीक!' सबने दुहराते हुये कहा, 'यारचेन्को ठीक कहता है! हम सब भी क़सम खाते हैं कि और कुछ न होगा!'

इसके बाद वे सब दो-दो तीन-तीन करके उन गाड़ियों में बैठ गये, जिनके गाड़ीवान, एक दूसरे से झगड़ते हुये, बहुत देर से उनके पीछे आ रहे थे। लिखोनिन यारचेन्को को ढाढ़स दिलाने के लिए उसी की गाड़ी में, स्नेह से उसकी कमर में

हाथ डाले हुए, उसके और उसके पास में बैठे हुए टोलपीजिन नाम के गुलाबी मुख के एक ग्रामीण लड़के के जो बाईस बरस का होता हुआ भी निरा छोकरा ही लगता था, घुटनों पर बैठ गया। फिर बाहर सिर निकालकर उसने दूसरे गाड़ीवानों से कहा, 'डोरशेन्को के पीठे पर चलो! समझे? वहाँ पहुँचकर रुक जाना!'

गाड़ियाँ चलीं और धीरे-धीरे डोरशेन्को की शराब की दूकान पर जाकर रुक गईं। जो रातभर खुली रहती थी। गाड़ियों से उतर-उतरकर सब नौजवान दूकान में घुसे और घुसते ही शराब पीने लगे। वैसे तो सब शराब काफ़ी पी चुके थे और किसी का इस समय और कुछ खाने-पीने को जी नहीं चाह रहा था; मगर चूंकि अभी तक हर एक की आत्मा में यह ज्ञान बाक़ी था कि वे कुकर्म करने जा रहे हैं, आनन्द करने नहीं—वे और शराब पीकर शराबी की समाधि की वह रँगीली अवस्था प्राप्त कर लेना चाहते थे, जिसमें मन में कोई खटका नहीं रहता और बुद्धि को यह पता भी नहीं रहता कि हाथ और पाँव क्या कर रहे हैं अथवा ज़बान क्या बक रही है। इन विद्यार्थियों के ही क्या, कटरे में आनेवाले प्रायः सभी लोगों के दिल में थोड़ी बहुत इसी प्रकार की खटक होती थी जिससे कटरे में घुसने से पहिले वहाँ के सभी मेहमान इस दूकान में घुसकर शराब पी लेते थे। अस्तु यह शराब की दूकान शाम से लेकर रातभर तक ख़ूब चलती थी, दूकान पर आमतौर पर शराब पीनेवाले अधिक टिकते नहीं थे—जल्दी-जल्दी शराब पी और भागे, मानो सफ़र तय करने की जल्दी में हों, अथवा डरते हों कि कोई उन्हें वहाँ देख न ले।

सब नौजवान तो शराब पीने में जुट गये, मगर रामसेस बड़े ग़ौर से दो आदमियों की तरफ़ घूरने लगा जो पीठे के उस कोने में एक मेज पर बैठे हुए थे। इनमें से एक तो लम्बा-चौड़ा, सफेद बालों और टूटे हुए स्वास्थ्य का बूढ़ा आदमी था जो बिना बाहों की एक जाकेट पहिने हुए था। दूसरा, जो उसके सामने, दूकानवाले की तरफ पीठ किये और मेज पर अपनी कुहनियाँ टेककर उनपर अपना मुँह रक्खे बैठा था—एक कुबड़ा, बलिष्ठ, छोटे-छोटे बालों का और ख़ाकी सूट पहिना हुआ आदमी था। बूढ़ा अपने सामने रक्खा हुआ चिकाड़ा बजाता हुआ, भर्राई आवाज़ में, परन्तु अच्छे स्वर में कुछ गा रहा था।

'माफ़ करना मुझे ज़रा! मेरा एक साथी यहाँ है', कहता हुआ रामसेस अपने साथियों को छोड़कर ख़ाकी सूटवाले आदमी से मिलने चला गया। एक मिनट के बाद वह उसे लिये हुये लौटा और उसका अपने साथियों से परिचय कराता हुआ

बोला, 'मित्रो, यह मेरे साथी आइवानोविश प्लेटोनॉव है, जो अख़बारों का काम करते हैं और सबसे आलसी, मगर सबसे होशियार अख़बारनवीस हैं।'

एक-एक करके सबने अपने नाम बताते हुये उसको अपना परिचय दिया।

'अच्छा, अच्छा, अब आओ पियें!' लिखोनिन ने कहा और यारचेन्को ने बड़ी मिलनसारी और शिष्टता से, जो वह कभी नहीं छोड़ता था, प्लेटोनॉव से पूछा, 'माफ़ कीजिये मुझे आपसे पहिले कभी स्वयं मिलने का सौभाग्य तो नहीं मिला मगर मैं आपको पहिले से जानता हूँ! आपही ने के विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर प्रिक्लोन्स्की उस सारगर्भित वक्तृता की रिपोर्ट अख़बार में भेजी थी न?'

'जी हाँ।' अखबारनवीस ने कहा।

'बड़ी सुन्दर रिपोर्ट थी!' यारचेन्को ने स्नेह से मुस्कराते हुए, न जाने क्यों प्लेटोनॉव का हाथ दबाकर कहा, 'मैंने उसे कई बार पढ़ा। बड़ी सुन्दर, सही, अच्छी भाषा में, चतुरता से लिखी गई थी...लीजिये, कृपया, एक गिलास शराब पीजिये न?...धन्यवाद!'

'मुझे भी आपको थोड़ी शराब पिलाने का मौक़ा दीजिये।' प्लेटोनॉव ने कहा, 'ओ दूकानदार, देखो, एक...दो...तीन...चार...नौ गिलास कौग्नेक शराब के दो।'

'नहीं, नहीं, जी नहीं! लिखोनिन ने उसको मना करते हुए कहा, 'आप ऐसा नहीं कर सकते! आप हम लोगों के मेहमान हैं...हमारे साथी है!'

'वाह! वाह! मैं कैसे आपका साथी हो सकता हूँ।' प्लेटोनॉव ने हँसते हुए कहा, 'मैंने तो स्कूल में फ़िर्फ़ एक दर्जे तक ही पढ़ा और वह भी सिर्फ छः मास तक। लीजिये...लीजिये...शराब लीजिये...मुझ पर मिहरबानी करके पीजिये...'

क़िस्सा यह है कि आध घण्टे में ही लिखोनिन और यारचेन्को प्लेटोनॉव से इतने घनिष्ठ हो गये कि उसको किसी तरह छोड़ने को ही तैयार न थे। अस्तु वह उसे भी अपने साथ घसीट कर चकले में ले चले। उसने भी इन्कार नहीं किया।

'अगर मैं आपका हर्ज न करूँ तो मुझे भी आपके साथ जाने में ख़ुशी होगी।' उसने सरलता से कहा, 'ख़ासकर आज, क्योंकि आज, मेरे पास मुफ़्त का रुपया आ गया है। एक अख़बार ने मुझे आज कुछ रुपया दिया है जो कि ऐसी ही अचम्भे की बात है जैसा कि किसी नाटक के टिकट पर दो हज़ार रुपया इनाम मिल जाय। क्षमा कीजिये! मैं अभी आया...'

यह कह वह उसे बूढ़े के पास गया जिसके साथ वह पहिले बैठा था और कुछ रुपया उसको पकड़ाकर उससे छुट्टी लेते हुए कहा:

'बाबा, अब मैं जहाँ जा रहा हूँ, वहाँ तुम्हें जाना ठीक न होगा...कल हम लोग फिर वहीं मिलेंगे जहाँ आज मिले थे, अच्छा ? बन्दगी !'

फिर सब शराब की दूकान में से निकलकर चले। दरवाज़े पर बोरया सोबाश्नीकॉव ने, जो हमेशा दूसरों को नीची नज़र से देखा करता था और साथ ही औचित्य का बड़ा ख़्याल रखता था, लिखोनिन को रोका और उसे एक तरफ़ ले जाकर उससे कहा।

'यह क्या कर रहे हो, लिखोनिन ? मुझे तुम्हारे ऊपर बड़ा आश्चर्य होता है। अभी तक तो हम लोग सिर्फ़ अपने ख़ास दोस्तों के साथ ही थे ! मगर अब तो तुम बाहर वालों को भी अपने साथ घसीटने लगे हो ? न मालूम यह कैसा आदमी है ?'

'चलो ! चलो, बोरया !' लिखोनिन ने स्नेह-पूर्वक कहा, 'यह बड़े अच्छे हृदय का आदमी है !'

दसवाँ अध्याय

'अरे यारो, यहाँ कहाँ इस गन्दी जगह में चल रहे हो ?' यार्चेन्को ने अन्ना के द्वार पर शिकायत करते हुए कहा, 'अगर चलना ही है तो कहीं अच्छी जगह चलो...ऐसी गन्दी जगह में क्यों चल रहे हो ? चलो, ट्रेपेल की पेढ़ी में चलें, वहाँ कम से कम सफाई और रोशनी तो ठीक है।' 'मेहरबानी करके, अन्दर दाख़िल हूजिये, जनाब !' लिखोनिन ने द्वार खोलकर अदब से यार्चेन्को की तरफ़ झुककर हाथ फैलाते हुये कहा—'आइये अन्दर आइये, जनाब...'

'अरे यार, यह तो बड़ी ही गन्दी जगह है...ट्रेपेल के यहाँ कम से कम स्त्रियाँ तो अच्छी शक्ल की हैं !'

रामसेस उसके पीछे-पीछे घुसता हुआ सूखी हँसी हँसा। 'हाँ, हाँ ठीक है पेट्रोविश ! भूखा आदमी किसी खोमचे से कुछ चुराकर खाले तो उसे सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिये, मगर कोई बैंक का डायरेक्टर लोगों का लाखों रुपया सट्टे में बर्बाद कर दे तो लोगों को चुपचाप आँखें फिरा लेनी चाहिये।'

'माफ़ कीजिये ! मैं आपके इस उदाहरण का अर्थ नहीं समझा !' यार्चेन्को ने संयम से उत्तर देते हुये कहा, 'ख़ैर, मुझे क्या ? कहीं भी ! चलो, यहीं चलें।'

'यह घर ख़ास तौर पर हमें आकर्षक है।' लिखोनिन ने कहा, "इस घर की ऐतिहासिक अहमियत है, क्योंकि इस घर की दीवारों में से विद्यार्थियों की बहुत सी पीढ़ियाँ हमारे ऊपर अपनी कृपा-दृष्टि डालती हैं। दूसरे, जिस तरह थियेटर और सिनेमाओं में विद्यार्थियों के और बच्चों के आधे टिकट लगते हैं वैसे ही यहाँ भी विद्यार्थियों को आधे दाम ही देने होते हैं। क्यों, श्रीमान सिमियन ?'

सिमियन को इस तरह लोगों का, भीड़ में इकट्ठा होकर आना अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि इससे आसानी से बलवा हो जाने का डर रहता था। इसके अलावा उसे विद्यार्थियों से ख़ास कर घृणा थी क्योंकि वे लोग एक तो ऐसी बातें करते थे, जो उसकी समझ में नहीं आती थीं, दूसरे बात-बात में वे मज़ाक करते थे और नास्तिकता की बातें करते थे, तीसरे सरकारी अफ़सरों और अमन के भी यह लोग आम तौर पर विरोधी होते थे। एक बार बाज़ार में झगड़ा हो जाने पर पुलिस के सवारों, कसाइयों, परचूनियों और ख़ोमचेवालों ने मिलकर विद्यार्थियों को ख़ूब पीटा। उसकी ख़बर जैसे ही सिमियन को मिली वैसे ही उसने फ़ौरन एक घोड़ा-गाड़ी किराये की और उसमें खड़ा होकर पुलिस के अफ़सरों की तरह गाड़ी दौड़ाता हुआ लड़ाई के स्थान पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही वह भी विद्यार्थियों की ठोंक-पीट में फ़ौरन शरीक हो गया। उसको आम तौर पर संजीदा, मज़बूत और काफ़ी उम्र के आदमी पसन्द थे जो कि चकले में अकेले और लुकते-छिपते आते थे और जाते समय कमरे में से झाँककर पहिले बैठक में देख लेते थे कि कहीं कोई जान-पहिचान का आदमी तो वहाँ नहीं बैठा है। जाते समय वे सिमियन को अच्छा इनाम देकर जाते थे। सिमियन ऐसे मेहमानों को 'हुज़ूर' कहकर सम्बोधित करता था।

यारचेन्को का ओवरकोट उतारते हुये सिमियन ने लिखोनिन के प्रश्न के उत्तर में गुर्राकर कहा :

'मैं श्रीमान नहीं हूँ। इस घर का द्वारपाल हूँ।'

'आपके इस ओहदे पर मैं आपको बधाई देता हूँ,' लिखोनिन ने नम्रता से सिमियन की तरफ़ झुकते हुये कहा।

अन्ना की बैठक में काफ़ी आदमी थे। क्लार्क नाचते-नाचते थककर, लाल मुँह और पसीने से तर अपनी-अपनी स्त्रियों के पास बैठे रूमालों से अपने ऊपर हवा कर रहे थे। उनके शरीरों से बूढ़े बकरों के बालों की सी गन्ध निकल रही थी। गवैया मिशका और उसका साथी जिल्दसाज़ जिनके दोनों के सिर के बाल झड़ कर गंज निकल आये थे और जिनकी सीप की-सी धुँधली आँखें शराब के नशे से लाल हो रही थीं, एक सङ्गमरमर की मेज़ पर कुहनियाँ टेके, एक दूसरे के सामने बैठे, इस प्रकार काँपती और उछलती हुई आवाज़ से बार-बार मिलकर राग अलापने का प्रयत्न कर रहे थे, मानो उनकी पीठ पर कोई डन्डा मार रहा हो जिससे वह चिल्ला उठते थे। एम्मा और जोसिया उन्हें भरसक समझाने का प्रयत्न कर रहीं थीं कि उस प्रकार का व्यवहार करना ठीक नहीं है। रोलीपोली एक

कुर्सी में, एक टाँग पर दूसरी रक्खे और ऊपरी टाँग का घुटना अपने हाथों में पकड़े, शान्तिपूर्वक सो रहा था।

छोकरियों ने कुछ विद्यार्थियों को घुसते ही पहिचान लिया और उनसे मिलने के लिए दौड़ीं।

'टमारा, तुम्हारा पति आ गया! और मेरा भी आ गया! मिशका!'

नियूरा तीक्ष्ण आवाज़ से चिल्लाती हुई, लम्बे क़द और बड़ी नाकवाले गम्भीर पेट्रोवस्की की गर्दन में लटक कर बोली, 'मेरे प्यारे! इतने दिनो तक तुम क्यों नहीं आये? मैं तो तुम्हारी वाट देखते-देखते थक गई।'

यारचेन्को परेशानी से अपने चारों ओर, सिर घुमा घुमाकर देख रहा था।

'हम लोगों के लिए एक अलग कमरा मिल सकता है?' उसने झिझकते हुए ऐम्मा से पूछा, जो उसके पास आकर खड़ी हो गई। 'और कुछ शराब और काफ़ी भी हमें मिल सकेगी?'

यारचेन्को से होटल के नौकर और मालिक हमेशा उसके अच्छे कपड़े और तपाक के व्यवहार के कारण बड़े अदब और उत्साह से बातचीत किया करते थे। ऐम्मा उसकी बातें सुनते ही उसकी तरफ़ सरकस के बूढ़े घोड़े की तरह सिर हिलाती हुई बोली, 'जी हाँ, सब मिल सकता है...इधर इस कमरे में तशरीफ़ ले चलिये।... कौन-सी शराब जनाब के लिए मँगाई जाय? हमारे यहाँ सिर्फ़ एक ही क़िस्म की शराब रहती है...वही मँगाई जाय? वह तो फ़ौरन ही आ सकती है...और लड़कियों को भी इसी कमरे में हाज़िर किया जाय?'

'हाँ अगर उनका आना भी ज़रूरी ही है तो?' यारचेन्को ने एक गहरी साँस लेकर हाथ फैलाते हुए कहा।

एक एक करके फ़ौरन ही छोकरियाँ भी उसी कमरे में आ गईं। कमरे में रक्खी हुई कुर्सियों और कोचों पर रेशमी गद्दियाँ लगी हुई थीं और नीले लैम्प जल रहे थे। लड़कियों ने कमरे में घुसकर हर एक को हाथ मिलाने के लिए बढ़ते हुए, जल्दी-जल्दी अपने नाम धीमी आवाज़ में बता दिये...मन्या, केटी, लियूबा... और कोई किसी की गोद में और कोई किसी की गर्दन में हाथ डाल कर बैठ गईं और रीति के अनुसार कहने लगीं।

'तुम बड़े अच्छे लगते हो! मुझे शराब पिलाओ!'

'मेरे लिए थोड़ी चाकलेट मँगाओ!'

'मेरे लिए मिठाई मँगाओ!'

वीरा ने जो एक जवान घुड़सवार की पोशाक में मटक रही थी, यारचेन्को की गोद में बैठते हुए कहा, 'मेरी एक सहेली अन्दर कमरे में बीमार पड़ी है, बेचारी बाहर नहीं आ सकती। मैं उसे वहीं थोड़े से सेब और चाकलेट दे आऊँ? ...?'

'अच्छा-अच्छा आप मुझे अपनी यह सहेलीवाली कहानी न सुनाइये! और न मुझपर इस तरह से चढ़िये! इस पास की आराम-कुर्सी पर तहज़ीब से, बच्चे जैसे बैठते हैं, बैठिये और अपने हाथ ठीक करके अपने ऊपर ही रखिये।'

'ओह, यदि मैं तुम्हें देखकर आपे में न रह सकूँ तो?' वीरा ने आँखें मटकाते हुये कहा, 'तुम इतने सुन्दर क्यों हो?'

मगर लिखोनिन ने ऐसी माँगों के उत्तर में सिर्फ गम्भीरता से सिर हिलाते हुये कहा 'सब कुछ मिल सकता है। सब मिल सकता है!'

'अच्छा प्यारे, तो मैं नौकर से कहूँ कि मेरी सहेली को थोड़ी सी मिठाई और सेब उसके कमरे में दे आवे?' वीरा जान खाने लगी।

इस प्रकार की मेहमानों से प्रार्थनाएँ करना भी इन छोकरियों का फ़र्ज़ समझा जाता था—बल्कि छोकरियों में इस बात की आपस में एक प्रकार की होड़ रहती थी कि कौन मेहमानों से अधिक ख़र्च करा सकती है। यह थी आश्चर्य की बात क्योंकि ऐसा करने से उन्हें इसके सिवाय और कोई फायदा नहीं होता था कि ख़ालाजान खुश होकर स्नेह से बोले अथवा मालकिन उन्हें पसन्द करे, परन्तु उनके क्षुद्र, रसहीन और कृत्रिम खेलवाड़ के जीवन में बहुत-सी ऐसी ही अर्थहीन मूर्खता और पागलपन की बातें थीं।

सिमियन काफी से भरा बर्तन, प्याले, शराब की बोतलें, फल और मिठाइयों की रकाबियाँ एक बड़े बर्तन में रखकर लाया और आकर जल्दी-जल्दी बोतलों की डाटें फुर्ती से खोलने लगा।

'आप क्यों नहीं पीते? यारचेन्को ने प्लेटोनॉव की तरफ मुड़कर पूछा, 'माफ़ कीजिये, आपका शुभ नाम...सरजी आइवानोविश?

'जी हाँ।'

'लीजिये यह काफी पीजिये—सरजी आइवानोविश। इसे पीकर आप ताज़ा हो जायँगे। अथवा आइये, इस शराब को ही पीकर देखें कैसी है?'

'नहीं, मुझे तो आप माफ़ी दें...मैं अपनी चीज़ मँगाकर पिऊँगा...सिमियन, लाओ तो...'

'कॉगनेक[1] !' नियूरा जल्दी से चिल्लाई।

'और नाशपाती[2] के साथ !' नन्ही मनका ने जल्दी से बोलकर उसका साथ दिया।

'मैंने आपकी आवाज़ सुनते ही उसका इन्तज़ाम कर लिया था, सरजी आइवा-नोविश यह हाज़िर है लीजिये।'

सिमियन ने सरलता से झुककर, अदब से गुनगुनाते हुये, एक बोतल की डाट फट से खोली।

'आज अपनी जिन्दगी में पहली ही बार मैं इस कटरे में कॉगनेक दी जाती देख रहा हूँ !' लिखोनिन ने आश्चर्य से कहा, 'मैं इतना माँगता था तो भी ये लोग मुझे इनकार ही करते रहते थे।'

'शायद सरजी आइवानोविश को कोई ऐसा गूढ़ मन्त्र मालूम है जो तुम्हें नहीं मालूम,' रामसेस ने मज़ाक करते हुये कहा।

'या इनकी इस जगह पर ख़ास तौर से इज़्ज़त की जाती है ?' बोरिस सोबाशनिकॉव ने जोर देकर बात साफ़ करते हुये कहा।

प्लेटोनॉव ने लापरवाही से सोबाशनिकॉव की तरफ नज़र घुमाई और उसकी सफेद व ढीली जाकेट के निचले बटनों को देखकर गुनगुनाता हुआ कहने लगा।

'इसमें कोई ख़ास इज़्ज़त की बात तो नहीं है। जिस तरह घोड़े पानी पीते है उसी तरह मैं शराब पीता हूँ। फिर भी अपने होश हवास नहीं खोता हूँ—न तो कभी किसी से झगड़ा बखेड़ा करता हूँ और न किसी तरह का शोरोगुल मचाता हूँ। मेरा यह स्वभाव यहाँ के सभी लोग जानते हैं और इसीलिए वे मुझ पर विश्वास करते हैं।'

'क्या कहते हैं ? आपकी पाँचों घी में हैं !' खुशी से लिखोनिन ने कहा। उसे प्लेटोनॉव के लापरवाही से बात चीत करने के ढङ्ग और आत्मविश्वास से सचमुच बड़ी खुशी हुई। फिर वह बोला, 'तो यह कॉगनेक आप अकेले ही उड़ायेंगे या इसमें से कुछ हिस्सा मुझे भी मिल सकेगा ?'

'लीजिये, लीजिये ! हाज़िर है।' बड़े स्नेह से प्लेटोनॉव ने उत्तर दिया और यकायक बच्चों की तरह उसका सरल, उभरी हुई हड्डियों का चेहरा सूर्यमुखी के फूल की तरह खिल गया। वह बोला, 'मुझे भी शुरू ही से आप अच्छे लगे हैं।

---

१ फ्रान्सीसी ब्राण्डी २ लेमोनेड की तरह नाशपाती।

शराब की दूकान में आपको देखते ही मैंने समझ लिया था कि आप जैसे सख़्त ऊपर से दीखने में लगते हैं वैसे वास्तव मे नहीं हैं।'

'अच्छा? अच्छा! बहुत हम लोगों ने एक दूसरे की तारीफ़ें कर लीं,' लिखोनिन ने हँसते हुये कहा, 'मगर यह बड़े आश्चर्य की बात है कि हम लोग आज तक पहिले कभी यहाँ नहीं मिले। आप तो यहाँ, मालूम होता है, अक्सर आते है।'

'मैं इस घर में बहुत आता हूँ।'

'सरजी आइवानोविश हमारे खास दिन के मेहमान हैं!' नियूरा ने शैतानी से कहा, 'और हमारे भाई की तरह है!'

'मूर्ख!' टमारा ने उसे रोककर कहा।

'बड़े आश्चर्य की बात है' लिखोनिन ने कहा, 'मैं भी तो यहाँ बराबर आता हूँ। ख़ैर कुछ भी हो, मगर यह लोग आप पर जितनी मेहरबानी करते हैं उसे देखकर तो दिल में जलन होती है।'

'यह यहाँ के सिरताज हैं!' बोरिस सोबाशनिकॉव ने अपने होंठ लटकाकर इतने धीमे से कहा कि प्लेटोनॉव चाहता तो उसकी बात अनसुनी करने का बहाना कर सकता था। शुरू ही से न जाने क्यों बोरिस को प्लेटोनॉव से कुछ चिढ़ भी हो रही थी। वह बोरिस के साथियों मे से नहीं था, यह तो कोई ख़ास वजह इस चिढ़ की नही हो सकती थी। मगर शायद बोरिस भी दूसरे बहुत से विद्यार्थियों, फौजी अफ़सरों और सरकारी नौकरों की तरह सैरसपाटो में मिल जानेवाले बाहरी आदमियों के व्यवहार—आमतौर पर अपने प्रति खुशामदी व्यवहार—का आदी हो गया था। ऐसे मिल जाने पर लोग इन लोगों की शक्ति और दृढ़ता की तारीफ़ करते हुये इनके छोटे-छोटे से मज़ाकों को सराहते और खुश होते थे और अपनी बीती हुई जवानी पर हाथ मलते थे। मगर प्लेटोनॉव का व्यवहार इन नवयुवकों के प्रति सिर्फ ऐसा .खुशामदी ही नहीं था बल्कि एक प्रकार से लापरवाही का था। यही शायद बोरिस को खटक रहा था।

इसके अतिरिक्त बोरिस सोबाशनिकॉव को यह भी बुरा लग रहा था कि अन्ना के घर में, दरबान सिमियन से लेकर मोटी किटी तक सभी, प्लेटोनॉव का खास लिहाज़ कर रहे थे। जिस तरह यह सब लोग प्लेटानॉव को बात ध्यान से सुनते थे, जिस तरह टमारा ने बहुत सँभालकर उसके लिए गिलास मे कॉगनेक भरी और नन्ही मनका ने उत्साह से नाशपाती छीली, जिस .खुशी से ज़ो ने सिगरेट

की वह डिब्बी उससे ली जो उसे अपने पास के नौजवान से, जो अपनी बातों में मशगूल था, वह कई बार माँगने पर भी नहीं मिल सकी थी और जिस तरह छोकरियाँ उसके उदार व्यवहार के कारण उससे कोई भी चीज़ मागने मे हिचकती नहीं थीं, उन सब कारणों से प्लेटोनॉव के प्रति उनके एक ख़ास लिहाज़ की झलक टपकती थी ; अस्तु बोरिस ने घृणा से अपने मनमें एकबार सोचा कि, 'यह आदमी दलाल है।' मगर फिर उसी को अपना यह विचार ठीक नहीं लगा क्योंकि प्लेटोनॉव जैसी लापरवाही की पोशाक में था और जैसा लापरवाही और शराफ़त का व्यवहार कर रहा था उससे वह साफ़ एक भला आदमी लगता था। वेश्याओं का दलाल नहीं लगता था।

प्लेटोनॉव ने बोरिस की बेहूदी बातें फिर अनसुनी करते हुए अपने हाथ का रूमाल काँपती हुई उङ्गलियों से ज़ोर से दबाया और उसके पलक बोरिस की तरफ देखते हुए हिले।

'हाँ, सच है, मेरा एक तरह से यह घर ही-सा हो गया है' उसने शान्तिपूर्वक अपना गिलास मेज़ पर धीमे-धीमे घुमाते हुए कहा, 'मैंने लगातार चार महीने तक रोज इस घर में खाना भी खाया है।'

'नहीं, सच ?' यारचेन्को ने आश्चर्य से हँसते हुये पूछा।

'सच ! यहाँ का खाना खराब नहीं होता ! काफ़ी स्वादिष्ट होता है ! क्योंकि तेल और घी ज़रूर उसमें यह लोग अधिक डालते हैं !'

'मगर आप यहाँ खाना क्यों खाते...'

'मैं यहाँ रोज़ अन्ना की लड़की को पढ़ाने आता था। अतएव मुझे यहीं सुभीते का लगा कि मेरे वेतन में से खाने के दाम काट लिये जाया करें और मैं यहीं रोज़ खाना खा लिया करूँ।'

'बड़ा अज़ीब इन्तज़ाम आप ने सोचा !' यारचेन्को ने कहा, 'यह इन्तज़ाम आपको सुभीते का क्यों लगा ? माफ़ कीजिये...शायद मैं आपके जीवन में बहुत अन्दर घुसने की कोशिश कर रहा हूँ ! क्या आप उस समय तक़लीफ़ में थे ? और ग़रीबी की वजह से आपको यह इन्तज़ाम सुभीते का लगा...'

'जी नहीं, यह बात नहीं थी, अन्ना जितना दाम मुझ से खाने के लिए ले लेती थी उसके एक तिहाई दाम में मैं बड़े मज़े से विद्यार्थियों के किसी भी भोजनालय में खाना खा सकता था, परन्तु बात यह थी कि मैं ख़ुद इस घर के निवासियों के

अधिक से अधिक निकट आना चाहता था। मैं उनकी दुनिया को अच्छी तरह जानना चाहता था।'

'अच्छा! अच्छा! अब मैं समझा!' यारचेन्को ने हँसते हुए जोर से कहा, 'अब मेरी समझ मे आ गया! आप शायद उनकी ज़िन्दगी से अपने लिए मसाला इकट्ठा कर रहे है। अच्छा तो कुछ दिनों के बाद हम लोगों को इस विषय पर एक नया ग्रन्थ...'

'एक नया शोकान्त नाटक पढ़ने को मिलेगा!' बोरिस ने उसकी बात काटकर अभिनेता की तरह ज़ोर से बोलते हुए कहा।

प्लेटोनॉव यारचेन्को को उत्तर देने लगा, मगर टमारा चुपचाप उठी और मेज़ का चक्कर लगाती हुई बोरिस के पास पहुँची और झुककर उसके कान में बोली :

'मेरे प्यारे, इस आदमी से न अटको। सच कहती हूँ, यही तुम्हारे लिए अच्छा है!'

'क्या कहा?' बोरिस ने अपना चश्मा आँखों पर ठीक करते हुए बड़प्पन से भौहे चढ़ाकर कहा, 'क्यों? क्योंकि यह तुम्हारा यार है? या तुम्हारा दलाल है?'

'मै ईश्वर की क़सम खाकर कहती हूँ आज तक कभी यह आदमी हम मे से किसी के भी साथ नहीं लेटा है। मैं तुमसे फिर कहती हूँ, प्यारे, इससे उलझना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है!'

'ज़रूर! ज़रूर! जो कुछ भी तुम कहती हो ज़रूर सच है।' उसने मुँह बनाते हुये कहा, 'इन महानुभाव की सफाई देने के लिए तुम अकेली क्या चकले के सभी सम्मानित लोग तैयार हो जायँगे, क्योंकि यहाँ के सभी खिलाड़ी इनके हमजोली लगते है।'

'नहीं, यह बात नहीं है।' टमारा ने धीरे से कहा, 'मै तुमसे यह बात इसलिए कहती हूँ कि यह आदमी कहीं तुमसे नाराज़ हो गया तो अभी तुम्हारी गर्दन पकड़कर तुम्हे पिल्ले की तरह इस खिड़की मे से निकालकर बाहर गली में फेंक देगा। मैंने ऐसा होते कई बार अपनी आँखों देखा है। ईश्वर न करे किसी के साथ फिर वैसा हो क्योंकि उसमें शरम तो उठानी पड़ती ही है, साथ ही शरीर मे चोट भी लगती है!'

'भाग जा यहाँ से, चुड़ैल कही की!' सोबाशनिकॉव ने अपनी कुहनियाँ उसकी तरफ़ हिलाते हुए ज़ोर से चिल्लाकर कहा।

'अच्छा, लो मैं जाती हूँ, प्यारे !' टमारा ने नम्रता से उत्तर दिया और वहाँ से धीरे-धीरे चली गई।

सब लोग क्षण भर के लिए मुड़कर बोरिस की तरफ देखने लगे, लिखोनिन ने उसकी तरफ़ उङ्गलियाँ हिलाकर धमकाते हुए कहा—

'होश से बाहर मत होइये !' और फिर प्लेटोनॉव की तरफ घूमकर उसने कहा, 'कहे जाइये। आप कहे जाइये। आपकी बातें मुझे बड़ी अच्छी लग रही हैं।'

'नहीं, मैं तो कोई किताब लिखने के लिए मसाला यहाँ से इकट्ठा नहीं कर रहा हूँ।' प्लेटोनॉव ने गम्भीरता पूर्वक शान्ति से कहा, 'मगर हाँ, यहाँ मसाला है सचमुच ऐसी पुस्तक के लिए बहुत-सा भयङ्कर और हृदय-विदारक ! स्त्रियों के व्यापार और वेश्यागमन इत्यादि की, बड़े-बड़े शहरों में, रोज़ाना इस प्लेग की जो कहानियाँ हम लोग अक्सर सुनते रहते हैं, जिनके बारे मे कुछ लोगो ने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं, यहाँ के रोज़ाना की छोटी-छोटी बातों की, हज़ारों वर्ष से चले आनेवाले इस प्रेम-व्यापार के रात-दिन के हिसाब-किताब की, रस्म-रिवाज़ और तरीक़ों की भयङ्करता के सामने वे तुच्छ लगने लगती है। यहाँ की उन छोटी-छोटी बातों मे, जो हमारी आखों के सामने रोज़मर्रह घटने से हमारा ध्यान नहीं खींचतीं, यहाँ के वास्तविक दुःख, यहाँ की लज्जा और यहाँ के आन्तरिक-क्रोध की कहानी छिपी हुई है। वेश्यावृत्ति भी इस दुनियाँ के और पेशों की तरह ही एक पेशा बन गया है जिसकी बुनियाद बाक़ायदा क़ानूनी इक़रारनामों और साख पर उसी तरह रहती है जिस तरह कि शक्कर या अनाज के व्यापार की। सबसे बड़ी भयङ्करता वेश्यावृत्ति की यही है कि इसको भी एक पेशा समझा जाता है—एक भयङ्कर अपराध नहीं माना जाता।'

'ठीक कहते हैं आप !' लिखोनिन ने उसका अनुमोदन करते हुए कहा—मगर प्लेटोनॉव अपने गिलास में ध्यान-पूर्वक घूरता हुआ बोलता रहा—

'हम लोग अक्सर अख़बारों में चिन्तित आत्माओं के इस सम्बन्ध में अग्रलेख पढ़ते हैं। और कुछ डाक्टर स्त्रियाँ भी इस सम्बन्ध में बड़ी चीख़-पुकार मचाती और प्रयत्न करती फिरती हैं। 'रोको ! बन्द करो ! इसका ख़ात्मा करो ! इन लालची ख़ालाओं को हटाओ ! मनुष्य समाज का ख़ून चूसनेवाली इन अधम जीवों को मिटाओ !' इत्यादि आवाज़ें उठाने से ही यह सामाजिक बीमारी ख़त्म नहीं हो सकती। इस तमाम शोरगुल का नतीजा कुछ नहीं होता ! भयङ्कर शब्दों से कहीं भयङ्कर, सौगुनी भयङ्कर, इस व्यापार की वे छोटी-छोटी घटनाएँ हैं जो

आत्मा को बेंध देती है। इस दरबान सिमियन को ही लीजिये। आप शायद समझते होंगे कि इससे अधम इस चकले मे दूसरा और कोई जीव नहीं हो सकता, क्योंकि वह निरा पशु लगता है...शायद क़ातिल भी है...वेश्याओं को सताता और पीटता है। मगर आप जानते है मेरी उससे किस सम्बन्ध में मुलाक़ात हुई और कैसे हम दोनो एक दूसरे के दोस्त हो गये है? ईश्वरोपासना और बाइबिल इत्यादि धर्म सम्बन्धी बातो पर ही हम दोनों एक दूसरे से बातचीत किया करते हैं और इस विषय मे एक-सा रस होने के कारण ही हम दोनों, दोस्त हैं। सिमियन हृदय से बड़ा ही धार्मिक आदमी है...ऐसा धार्मिक है कि आसानी से ऐसा धार्मिक आदमी देखने को नही मिलता! मैं जब उसके साथ ईश्वर प्रार्थना करता था तब मैंने कई बार देखा कि प्रार्थना करते-करते उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। शायद दुनियाँ में रूसी आत्माओं में ही ऐसी विरोधी बातें एक साथ देखने को मिलती है।'

'हाँ इस क़िस्म का आदमी ईश्वरोपासना करेगा, फिर किसी का गला भी घोटेगा और फिर हाथ धोकर बड़ी भक्ति से मूर्ति की आरती उतारेगा!' रामसेस बोला।

'हाँ, हाँ, बिल्कुल ठीक कहते है आप। मगर मुझे मनुष्यों में इस प्रकार की ईश्वर-भक्ति और उसी के साथ-साथ अपराध-वृति देखकर बड़ा आश्चर्य और परेशानी होती है। आपसे सच-सच कहूँ? मै जब-जब सिमियन से अकेले में बैठकर बातें करता हूँ और हम लोग अक्सर अकेले बैठकर घण्टों बाते किया करते है—तब-तब मुझे बड़ा भय लगने लगता है। मुझे ऐसा लगता है मानो गोधूलि के समय एक अन्धकार-पूर्ण और गूँजते हुए, कुँए के मुँह पर रक्खे हुए एक तख़्ते पर खड़ा हूँ जो हिल रहा है और नीचे कुँए में साँप लोट रहे हैं जो अँधेरे मे मुझे धुँधले-धुँधले दीख रहे है। फिर भी सिमियन निस्सन्देह भक्त है और एक दिन अवश्य वह साधु हो जायगा और बैठकर तप, भजन और उपवास इत्यादि किया करेगा। ईश्वर ही जाने कैसे उसकी आत्मा में धार्मिक भक्ति के साथ-साथ संसार की सारी पवित्र वस्तुओ को अपमानित और नष्ट-भ्रष्ट करने और विकृत विषय-भोग करने की शक्ति भी एक साथ मिश्रित रह सकती है!'

'कुछ भी हो आप अपने दोस्तों की फ़िक्र ख़ूब रखते है,' यारचेन्को ने छोकरियों की तरफ आँखे मारते हुए कहा।

'नही, अब मेरी और उसकी दोस्ती नही है। वह ख़त्म हो चुकी है!'

'कैसे ?' वोलोदया पावलोव ने, जिसने इस बातचीत का सिर्फ आख़िरी हिस्सा ही सुना था, पूछा।

'ऐसे ही !...कोई ख़ास बताने लायक़ वजह नहीं है !' प्लेटोनॉव ने मुस्कराते हुये बात टाल कर कहा, 'लाइये मिस्टर यारचेन्को, आपका गिलास और भर दूँ !'

मगर नियूरा, जिसको ऐसे मौकों पर अपनी ज़बान बन्द रखना कठिन होता था, अचानक बोल पड़ी।

'इन्हों ने उसकी थूथड़ी पर एक दिन ज़ोर से घूँसा जड़ दिया तब से वह इनसे दूर रहती है...उस निनका के लिए !...उस रोज एक बूढ़ा आकर रातभर निनका के पास रहा था और बेचारी को रातभर सताता रहा यहाँ तक कि वह रोने लगी और उठकर उसके पास से भाग आई।'

'छोड़ो नियूरा उस किस्से को ! अच्छा नही है।' प्लेटोनॉव ने सूखे मुँह से कहा।

'चुप रह !' टमारा ने ज़ोर से नियूरा को डॉटा।

मगर नियूरा की ज़बान जब चल पड़ती थी तब किसी को भी उसे चुप कराना असम्भव हो जाता था। अस्तु वह बोलती ही रही।

'निनका ने आकर कहा कि मेरे टुकड़े टुकड़े भी कोई कर डाले तो भी मैं उस खूसट के पास लेटने नहीं जाऊँगी। उसने मेरे सारे शरीर पर अपने मुँह की लार रात भर टपका टपकाकर मेरा शरीर गीला और गन्दा कर डाला है। बूढ़े ने सिमियन से निनका के उसके पास से उठकर भाग आने की शिकायत की जिस पर वह निनका को पीटने लगा। उस वक्त यह मेरे पास बैठे मेरी तरफ से मेरे घर को एक ख़त लिख रहे थे। इन्होंने जैसे ही निनका के रोने और चिल्लाने की आवाज़ें सुनी वैसे ही......'

'ज़ो बन्द कर दो उसका मुँह !' प्लेटोनॉव ने कहा।

'वैसे ही ये उठकर बाहर गये और तड़...तड़...' नियूरा इतना ही कह पाई कि ज़ो की हथेली आकर उसके मुँह पर लग गई जिससे उसका मुँह बन्द हो गया।

सब हँसने लगे। मगर बोरिस सोबाशनीकॉव हँसने के शोर में, घृणापूर्वक प्लेटोनॉव की तरफ़ देखता हुआ, बड़बड़ाया।

'ओहो ! क्या कहने हैं आपकी वीरता के !' बोरिस काफ़ी शराब पी चुका था जिससे उसको नशा हो चला था। वह दीवार से अपनी पीठ टेके इस प्रकार खड़ा

था मानों लड़ने के लिए आमादा हो और जल्दी-जल्दी अपने मुँह से सिगरेट का धुआँ निकाल रहा था।

'निनका कौन-सी है?' यारचेन्को ने उत्सुकता से पूछा, 'यहाँ है?'

'नहीं, वह यहाँ नहीं है। वह छोटे क़द की मोटी नाकवाली छोकरी है। बड़ी सीधी है मगर तेज़ मिजाज़ है।' प्लेटोनॉव ने कहा और फिर यकायक खिलखिलाकर बोला, 'मुझे उस बूढ़े की याद आ रही है—कैसा बेचारा डरकर अपने कपड़े और जूते उठाकर बेतहाशा कमरे से निकलकर भागा था! बेचारा शरीफ़ बूढ़ा! सूरत-शक्ल से देखने मे बिल्कुल ऋषियों की तरह लगता था! मैं जानता हूँ वह कहाँ काम करता है। आप सब लोग भी उसे जानते होंगे। सबसे मज़े की बात तो यह रही कि जब वह बैठक में पहुँच गया और अपने आपको ख़तरे से बाहर समझने लगा तब कपड़े पहिनता हुआ—गो कि घबराहट के मारे पतलून मे उसके पाँव भी ठीक-ठीक नही पड़ते थे—चिल्लाने लगा, 'यह बदमाशी! यह शोहदापन! मज़ा चखवा दूँगा!... चौबीस घण्टे मे यहाँ से निकलकर छोड़ूँगा!'...बेचारे की घबराहट देखकर और उसके साथ-साथ उसकी इस प्रकार की धमकियाँ सुनकर मुझे बड़ी हँसी आने लगी। यहाँ तक कि गम्भीर-मुख सिमियन भी हँसने लगा...। ख़ैर मैं आपसे सिमियन के बारे मे कह रहा था!...सच तो यह है कि मनुष्य जीवन ऐसा विचित्र है, ऐसा मिश्रित है कि उसे देखकर आश्चर्य से आँखें विस्फारित होने लगती है। हम और आप बहुत से दलालों और बहुत सी ख़ालाओं के चित्र अपने मन मे सोच सकते है मगर एक ऐसे सिमियन का चित्र सोचना हमको कठिन हो जायगा। मनुष्य भी इस दुनियाँ में कैसे कैसे हो सकते हैं! इस पैढ़ी की मालकिन अन्ना को ही ले लीजिये। वह समाज का ख़ून चूसनेवाली एक नाटकीय कुटनी है। परन्तु साथ ही वह एक बड़ी स्नेहपूर्ण माँ भी है। उसकी बर्था नाम की एक छोटी सी लड़की है जो पाँचवे दर्जे में पढ़ती है। अन्ना को इस बात को हमेशा बड़ी ही चिन्ता रहती है कि कहीं उसकी लड़की को, किसी तरह, अन्ना का पेशा न मालूम हो जाय। जो कुछ अन्ना करती है और जो कुछ उसके पास धन-सम्पत्ति है वह सब उसकी इस 'चिड़िया' के लिए ही है। वह अपनी लड़की के सामने बातचीत तक करती डरती है कि कहीं उसके मुँह से, उसकी पुरानी आदत के अनुसार, कोई ऐसे गन्दे और अश्लील शब्द न निकल जायँ जिन्हें वह लड़की सीख ले, अतएव वह केवल उसकी आँखों में स्नेहपूर्वक चुपचाप देखा करती है मानो

वह उस लडकी की कोई बूढ़ी, मूर्ख, स्वामि-भक्त दाई हो जो उस पर अपना सब कुछ वार देने को तैयार हो। अन्ना काफ़ी बूढ़ी हो चुकी है; अब उसे यह काम छोड़कर आराम से बैठ जाना चाहिये था। मगर नहीं, उसे अभी और रुपया इकट्ठा करने की हविस है क्योंकि 'चिड़िया' के लिए एक हज़ार रुपये, फिर इसके लिए एक हजार और एक हज़ार उसके लिए चाहिये। 'चिडिया' के लिए चढ़ने को घोड़े हैं। एक अँग्रेज़ दाई है। हर साल देश से बाहर वह हवा बदलने के लिए भेजी जाती है और चालीस हज़ार की क़ीमत के हीरे-जवाहरात भी उसके पास हैं—गोकि ईश्वर ही जाने वह किसके हैं? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अपनी इस 'चिड़िया' की ज़िन्दगी भर की खुशी और आराम के लिए ही नहीं बल्कि उसकी अँगुली में निकल आनेवाली छोटी सी एक फुन्सी को अच्छा करने के लिए तक यह अन्ना—जरा सोचिये तो—हमारी बहिनों और बेटियों को, मन मे जरा भी मैल न लाकर बाज़ार में व्यभिचार के लिए बेच सकती है और हमारे लड़को को आतशक का शिकार बना सकती हैं। समझते हैं; बड़ी पिशाच है आप कहेगे! मगर सोचिये तो कि वह यह पिशाचलीला क्यों करती है?...माता की उस महान, अन्धी, अज्ञान पूर्ण ममता और प्रेम के लिए ही न जिसके लिए हम लोग अपनी माताओं को देवियाँ मानते और पूजते है!'

'देखिये, मोड़ पर इतनी तेज़ी से मत दौड़िये!' बोरिस ने दाँत पीसते हुए कहा।

'माफ़ कीजिये। मैं लोगों की तुलना नहीं कर रहा हूँ। मै तो सिर्फ साधारण मातृस्नेह का ज़िक्र कर रहा हूँ। अन्ना का उदाहरण न देकर मै किसी पशु या पक्षी की मा का उदाहरण दे सकता हूँ। लेकिन सचमुच मैं बड़ी टेढ़ी और रूखी बातों में पड़ गया हूँ। छोड़िये इन बातों को!...'

'नहीं, नहीं, अपनी बात पूरी करिये' लिखोनिन ने कहा, 'आप बड़ी असाधारण बात कह रहे थे।'

'नहीं, बड़ी साधारण बात थी। उस रोज़ एक प्रोफेसर ने मुझसे पूछा कि 'क्या आप यहाँ की ज़िन्दगी कुछ लिखने की ग़रज़ से देखने और समझने आते है' मेरे मन में आया कि कहूँ, 'देखता तो ज़रूर हूँ। मगर समझ में ठीक-ठीक कुछ नहीं आता।' मैंने अभी आपको सिमियन और कुटनी के दो उदाहरण दिये। न जाने क्यों मुझे इन लोगों के जीवन मे हमारे सभी के जीवन की जड़ता का एक बहुत बड़ा अंश छिपा हुआ लगता है, मगर मैं उसे ठीक तौर पर किसी को समझा या बतला नहीं सकता। इस काम के लिए बड़ी योग्यता की ज़रूरत है। छोटी-

छोटी घटनाओं और साधारण बातों से भयङ्कर सत्य के ऐसे शब्दचित्र तैयार करने के लिए जिन्हें पढ़कर लोग आश्चर्य से अवाक् रह जावें, बड़ी योग्यता की ज़रूरत है। लोग भयङ्कर घटनाओं के वृत्तान्त पढ़ना चाहते है। अतएव, क़त्लेआमों के, जेलों में मारपीट के और विद्रोह के वृत्तान्त हमें पढ़ने को मिलते है जिनमे सैनिकों और पुलिसवालों को, जो कि निरङ्कुशता और जायदाद और मिलकियत को क़ायम रखने के हथियार माने जाते है, प्रजा के रक्त से रँजित चित्रित किया जाता है। ठीक भी है! और चित्र भी ऐसी दशाओं के क्या हो सकते है? ऐसे चित्र हमारे मन में दुःख, चिन्ता और घृणा उत्पन्न करते हैं। मगर यह दुःख, चिन्ता और घृणा हमारे दिमाग़ों में ही होती है। ऐसे चित्र हमारे हृदयों को नहीं छूते; लेकिन मैं एक सड़क पर जा रहा हूँ और एक जगह पर कुछ भीड़ इकट्ठी देखता हूँ। पास जाकर देखता हूँ कि भीड़ के बीच में एक चार-पाँच बरस की बच्ची बैठी रो रही है जिसको उसके माता-पिता या तो जान-बूझकर छोड़कर चले गये हैं या जो उनसे किसी तरह बिछुड़ गई है। बच्ची के सामने एक पुलिस का सिपाही बैठा उसे पुचकार-पुचकार कर पूछ रहा है, 'बच्ची, तुम्हारा क्या नाम है? तुम कहाँ रहती हो? बाबा को क्यों पुकारती हो? अम्मा को क्यों पुकारती हो?' सिपाही बेचारा पूछते-पूछते थककर पसीने से लथपथ हो गया है, उसका टोप उलट कर गर्दन पर लटक आया है, उसके बड़ी-बड़ी मूछोंवाले चेहरे से दया का भाव टपक रहा है और उसकी आवाज़ मीठी स्नेहपूर्ण और नम्र है। मगर लड़की फिर भी रो-रोकर अपना गला फाड़े डाल रही है और उसके प्रश्नों का कोई उत्तर नही देती। शायद वह भीड़ और सिपाही को देखकर बहुत डर गई है। अतएव बेचारा पुलिस का सिपाही लाचार होकर अपनी शान-शौकत भूल जाता है और लड़की को हँसाकर ठीक करने के लिए बकरे की नक़ल करता है। वह अपने मुँह पर हाथ रखकर बकरे की बोली बोलने का प्रयत्न करता है और उस लड़की को एक बच्ची का गीत गाकर सुनाता है!...मैं यह सुन्दर दृश्य देखता हूँ। परन्तु फिर तुरन्त जब मैं सोचने लगता हूँ कि यही दयालु दीखनेवाला सिपाही शायद आधे घण्टे के बाद थाने मे किसी ऐसे आदमी से, जिसे उसने पहिले कभी देखा भी न होगा और जिसके गुनाह मे वह बिल्कुल अनभिज्ञ होगा, उसके मुँह और सोने पर चढ़-चढ़कर और लातें मार-मारकर, गुनाह इक़बाल कराने का प्रयत्न कर रहा होगा तब मेरा हृदय दुःख से बैठने लगता है। मनुष्य जीवन एक विचित्र विरोधाभास का सम्मिश्रण है! आइये, थोड़ी कॉगनेक और पियें।'

हम लोग अब एक दूसरे से 'आप' न कहकर 'तुम' कहें तो ठीक होगा!' लिखोनिन ने एकाएक प्रस्ताव किया।

'बहुत अच्छा। मगर यहीं तक रहे तो ठीक है। कहीं हम लोग एक दूसरे का कुछ देर में मुँह भी न चूमने लगें! लीजिये! पीजिये, एक गिलास मेरे कहने से और पीजिये! बस एक ही और! मैं भी पीता हूँ...एक और...यह लीजिये। एक फ्रांसीसी उपन्यास में मैं एक ऐसे मनुष्य के विचारों और भावों का वर्णन पढ़ता हूँ जिसे फाँसी की सज़ा का हुक्म सुनाया जा चुका है। लेखक उसका वर्णन बड़ा सुन्दर और ज़ोरदार भाषा में करता है। मगर फिर भी उसके वर्णन को पढ़कर मेरे मन में न तो कोई भाव ही उठते हैं और न कोई घृणा ही उत्पन्न होती है। सिर्फ़ जी घबरा उठता है। मगर कुछ दिन हुए मैंने एक अख़बार में एक आदमी को कहीं फ्रांस में फाँसी दिये जाने का वर्णन पढ़ा था। जेल के सिपाही उसे फाँसी पर चढ़ाने के लिए लेने गये। वह उनके साथ चलने के लिए बिना मोजा पहने ही पाँव में जूता पहनने लगा। कमअक्ल सिपाही ने उसे टोंका, 'अरे! मोजे बिना पहने ही जूता पहन रहे हो? मोजे नहीं पहनोगे?' अपराधी ने उसकी तरफ ध्यान-पूर्वक देखा और पूछा 'मोजे पहनने की भी जरूरत है?' उसके इस प्रश्न ने मेरा हृदय वेध दिया। अस्वाभाविक मृत्यु की सारी भयङ्करता मेरे आगे एकदम आ गई।'

'इसी प्रकार मृत्यु का मुझे एक दूसरा उदाहरण भी याद है। एक बार मेरे एक मित्र की मृत्यु हो गई। वह फौज में कप्तान था। वह था तो शराबी और आवारा, परन्तु उसकी आत्मा बड़ी ऊँची थी। न जाने कैसे हम लोग उसे 'बिजली कप्तान' कहकर पुकारने लगे थे। जब वह मरा तो मैं उसके निकट था। अतएव मुझे ही उसको कपड़े इत्यादि पहनाकर उसकी आख़िरी सवारी के लिए सुसज्जित करना पड़ा था। मैं उसकी फौज़ी वर्दी उसे पहना चुकने पर फौज़ी तमगों की डोरियाँ उसके कन्धों पर बाक़ायदा बाँधने लगा। यह डोरियाँ एक ख़ास तरह के फन्दे लगाकर बाँधी जाती है जो मैं बार-बार कोशिश करके भी नहीं बना सका। अतएव मैं सोचने लगा कि उसी ख़ास फन्दे की चिन्ता करने की इतनी क्या ज़रूरत है। यह डोरियाँ अब फिर तो कोई खोलेगा ही नहीं। साधारण गाँठ ही मैं क्यों न लगा दूँ जो मजबूत भी रहेगी? यह विचार आते ही मेरी आँखों के आगे एकाएक मृत्यु की सच्ची तस्वीर खिंच गई—जो कितनी देर से अपने मित्र की निस्तेज आँखों और ठण्डे माथे को देख कर भी अभी तक मेरे आगे नहीं खिंच पाई थी। डोरियों का बाक़ायदा फन्दा बनाने के बजाय साधारण गाँठ लगा देने का विचार

मन में आते ही मृत्यु की वास्तविकता से मैं एक दम विंध-सा गया। अन्त में निश्चय ही एक दिन मृत्यु द्वारा हमारे सारे शब्दों, कार्यों और भावों के नष्ट हो जाने के विचार के बोझ से मेरा मस्तक भारी हो गया। इस तरह की बहुत-सी छोटी-छोटी बातें मैं बता सकता हूँ...जैसे कि युद्ध में भाग लेनेवालों के मन पर क्या क्या बीतती है इत्यादि। परन्तु मैं अपने सारे विचार एक चीज़ पर ही लगाना चाहता हूँ। हम लोग ऐसी रोज़ मर्रह की छोटी-छोटी घटनाओं को देखते हुए, अन्धों की तरह उनके पास से होते हुए गुजर जाते है। मगर एक कलाकार ऐसी ही छोटी-छोटी घटनाओं से ऐसे चित्र बनाकर हमारे सामने रख देता है कि हम आश्चर्य से कह उठते हैं, 'अरे इन बातों को तो रोज़ हम देखते थे, परन्तु यह बात तो कभी हमारे ध्यान में आई ही नहीं। इस समस्या के उस पहलू पर तो हमने कभी सोचा ही नहीं।' रूस के लेखकों ने जो कि दुनियाँ में सर्वश्रेष्ठ और सबसे सच्चे-कलाकार माने जाते हैं, आज तक वेश्यावृत्ति को वास्तविकता के चित्र हमारे सामने कभी नहीं रक्खे। न जाने क्यों उन्होने ऐसी भयङ्कर सामाजिक बीमारी को अभी तक नहीं छुआ? इसका ज़िक्र करते उनकी आत्मा को दुःख होता था! या वे अपने आपको इतना बड़ा समझते थे कि ऐसी छोटी चीज़ों पर अपनी क़लम चलाना पसन्द नहीं करते थे? या इस डर से कि कहीं लोग उन्हें घासलेटी-साहित्य का लेखक न कहने लगें अथवा इस ख्याल से कि कहीं लोग यह समझकर कि जिन घटनाओं का लेखक ने ज़िक्र किया है वे उसी के जीवन मे शायद हुई होंगी, वे उसके निजी जीवन की छानबीन में लग जायेंगे? किस विचार से उन्होंने यह विषय नहीं छुआ मैं नहीं कह सकता? हो सकता है उन्हें इस काम के लिए समय ही नहीं मिला। अथवा वे इतना आत्म-त्याग और हिम्मत नहीं कर सके कि इस ज़िन्दगी में स्वयं घुसकर इसका अनुभव करते और वेश्यावृत्ति की दुनिया में प्रवेश करके निकट से इसे चुपचाप देखते और न तो यों ही रहमदिली दिखाते और न किसी को व्याख्यान सुनाते! ऐसा कोई लेखक करता तो एक बड़ी सच्ची, महत्वपूर्ण और मनुष्यों के हृदयों को हिला देनेवाली पुस्तक इस भयङ्कर व्यापार पर लिखी जा सकती थी!'

'रूसी लेखकों ने इस विषय पर भी लिखा तो है!' रामसेस ने अनमना होकर कहा।

'हाँ, लिखा है' प्लेटोनॉव ने भी उसी स्वर में उत्तर देते हुए कहा, 'मगर अभी तक जो कुछ लिखा गया है वह या तो सच्चा नहीं है या बच्चों के लिए नाटकों के ढङ्ग पर लिखा गया है अथवा इस प्रकार की उपमाओं और सूत्रों से भरा हुआ

है कि उसे सिर्फ़ भावी ऋषिमुनि ही समझ सकते है। किसी ने अभी तक इस सम्बन्ध में जैसा जीवन है उसको बिलकुल वैसा ही चित्रण करने का प्रयत्न नही किया है। रूस के सिर्फ एक महान लेखक ने, जिसकी आत्मा स्वच्छ और जिसकी कला थी, महान् इस विषय पर केवल एक बार लिखने का प्रयत्न किया; परन्तु उसके अद्वितीय चित्रों में भी इस विषय में उसकी आत्मा पर पड़नेवाले उन अक्सों की ही झलक दीखती हे जो कि वेश्यावृत्ति की दुनिया को बाहर से देखनेवाले कलाकार की आत्मा पर पड़ते है। उस महान् कलाकार के लिए असत्य लिखना और लोगों के हृदय में डर बैठाना असम्भव था। अतएव वह चकले के दरबान के कुत्ते के से मोटे मोटे बाल देखकर सोचता हुआ सिर्फ इतना ही कहता है, 'इसकी भी तो कोई माँ होगी! वह वेश्याओं के चेहरों को अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से घूर घूरकर देखता है और अपने मनमें उनके चित्र भी उतारता है। मगर वह उसके जीवन पर जिसे वह अच्छी तरह समझता नहीं था, लिखने की हिम्मत नहीं करता। इसी प्रकार यह महान् लेखक, जो अपनी पूर्ण आत्मा से सत्य का पुजारी था, रूसी किसान के जीवन पर भी दृष्टिपात करके ही रह जाता है। वह जानता था कि रूसी किसानों की भाषा और रुझान वह नहीं समझता और उनकी आत्मा को अच्छी तरह नहीं पहचानता अतएव वह आश्चर्यजनक चतुरता से रूसी जनता की वास्तविक आत्मा का चक्कर लगाता हुआ निकल जाता है और अपनी अनोखी सूझ को शहरी लोगों के जीवन के चित्र, जिन्हे वह अच्छी तरह जानता और पहचानता था, खींचने में खर्च कर देता है। मैं इस बात की चर्चा आप से जान-बूझकर कर रहा हूँ। हम लोग अभी तक जासूसों, वकीलों, सरकारी नौकरों, शिक्षकों, पुलिसवालों, इंजीनियरों, ज़मींदारों और विषय-लिप्त स्त्रियों के जीवन के बारे में ही लिखते रहे हैं। इन लोगों के जीवन के, हमारे साहित्य मे, बड़े सच्चे, सुन्दर चित्र और अद्वितीय चित्र मिलते हैं। मगर इन लोगों के जीवन जो कि कृत्रिमता और शिष्टाचार के सन्निपात से भरे होते हैं किसानों और वेश्याओं के जीवन के मुक़ाबले में, जो कि अत्यन्त प्राचीन काल से मनुष्य-जीवन के अङ्ग रहे हैं, बिल्कुल कूड़ा करकट-सा लगते हैं। फिर भी किसानों और वेश्याओं के जीवन के थोथले, असत्य, चटपटे, अथवा भोग-विलास पूर्ण चित्रों के सिवाय हमारे साहित्य में सच्चे चित्र अभी तक नहीं मिलते। दोस्तोवेस्की के केवल एक सोनेच्का मार्मेलाडोवा के चित्र के अतिरिक्त और हमारे रूसी साहित्य में वेश्याओं के जीवन का कौन-सा चित्र है? किसानों के जीवन के भी उनके दोषों के असत्य चित्रों और ग्रामीण जीवन के वर्णन के

अतिरिक्त और हमारे साहित्य मे सच्चे चित्र कहाँ है? हाँ, एक पुस्तक अवश्य इस विषय पर है जो कि वास्तव मे अपने ढङ्ग की एक ही पुस्तक है। रूसी साहित्य में ही नहीं वल्कि दुनियाँ के साहित्य में, मैं समझता हूँ, वह अपने ढङ्ग की अनोखी पुस्तक है। इस विषय पर ऐसी भयङ्कर शोकान्त कृति, जिसकी सत्यता पर हमारा दिल बैठने लगता है और शरीर के रोंगटे खड़े हो उठते हैं, मेरे विचार से दुनियाँ में दूसरी नही है। मै समझता हूँ आप समझ गये होंगे कि मैं किस पुस्तक की तरफ़ इशारा कर रहा हूँ...'

'हॉ, टॉल्सटाय की...' लिखोनिन ने धीरे से कहा।

'हॉ, हॉ' प्लेटोनॉव ने कहा और वह स्नेह से लिखोनिन की तरफ़ देखने लगा,

'मगर दोस्तोवेस्की की सोनेच्का भी वेश्या का केवल एक कल्पित चित्र है... एक प्रकार से वेश्या की मनोवृत्ति का अध्ययन है...' यारचेन्को ने कहा।

यह सुनकर प्लेटोनॉव जो अभी तक अनमना-सा बोल रहा था, एकदम जोश में बोला:

'मैं यह राय सैकड़ों ही बार सुन चुका हूँ! मगर यह बात बिलकुल ग़लत है। वेश्यावृत्ति के बेहूदा और अश्लील पेशे के नीचे, गन्दी माँ-बहिन की गालियों के नीचे, शराबखोरी की भयङ्करता के नीचे, दोस्तोवेस्की की सोनेच्का आज भी हमारे जीवन मे मौजूद है! रूसी वेश्या का भाग्य कितना भयङ्कर, कितना करुण, कितना रक्तरंजित, कितना मूर्खता-पूर्ण और हास्यास्पद है! रूसी वेश्या के जीवन मे हमें रूसी भगवान्, रूसी लोगों की दार्शनिक लापरवाही, जीवन में गिरे हुए रूसियो की निराशा, रूसी अशिष्टता, रूसी सब्र और रूसी निर्लज्जता सभी एक साथ देखने को मिलते हैं। उन सारी बाजारू स्त्रियों को, जिन्हें लेकर हम उनके साथ कमरे में लेटने चले जाते हैं, हम ध्यान से देखें, अच्छी तरह विचार-पूर्वक देखें तो हमें पता चलेगा कि वे सब बुद्धि मे बिल्कुल बच्ची की तरह है। ग्यारह वर्ष की बालिका से अधिक बुद्धि में उनमे से शायद ही कोई हो। भाग्य ने उन्हें कम उम्र में ही वेश्या बना दिया और तब से वे एक विचित्र, इन्द्र-सभा की, गुड़ियों की-सी दुनिया मे रहती है जहाँ उनको किसी प्रकार के विकास और अनुभव का मौक़ा नहीं मिलता और वे भोली, सरल, विश्वासी और लोभी बनी रहती है। उन्हें अपने बारे में यह भी पता नहीं रहता कि आध घण्टे बाद वे क्या कहेगी या करेंगी—बिल्कुल बालकों की-सी उनकी जिन्दगी होती है। मैंने यह बालकों की-सी हास्यास्पद मनोवृत्ति बूढ़ी से बूढ़ी, नीच से नीच,

टूटी से टूटी और कंगाल से कंगाल वेश्यायें देखी हैं। वेश्याओं के मन मे मनुष्य जीवन के दुःखों के लिए सदा एक निरसहाय दया रहती है...उदाहरण के लि...'

यह कहकर प्लेटोनॉव ने नीची दृष्टि से कमरे मे बैठे हुए तमाम लोगों को एक बार चुपचाप देखा और फिर बेसब्री से हाथ मलता हुआ वह बोला :

'ख़ैर...जाने दीजिये इन बातों को! आज तो मैं दस बरस के लिए काफ़ी बकवाद कर गया...व्यर्थ ही में...'

'मगर, सरजी!, सचमुच तुम्हीं इस विषय पर ,ख़ुद क्यों नहीं लिखते ?' यारचेन्को ने पूछा, 'तुम्हारा ध्यान तो इस समस्या पर इतना गया है!'

'मैंने लिखने का प्रयत्न किया है!' प्लेटोनॉव ने रूखी हँसी हँसते हुए कहा, 'मगर मैं लिख नहीं सकता। मैं जब लिखने बैठता हूँ तो लिखते-लिखते अपने ही ऐसे शब्दजाल में फँसने लगता हूँ कि उससे मेरे लिए निकलना कठिन हो जाता है और मुझे अपना लिखा हुआ फीका लगने लगता है। एक बार हमारे देश का एक प्रख्यात कहानी लेखक यहाँ आया था। मैं उससे मिला और मैंने उसे भी यहाँ के जीवन के सम्बन्ध में बहुत-सी ऐसी ही बातें बताईं जैसी मैं आपको आज बता रहा हूँ, जिन्हें सुनकर—मुझे डर है कि—आपका जी भी उकता उठा होगा। मैंने उस महा लेखक से प्रार्थना की कि वह मेरे दिये हुए मसाले को अपनी कहानियों में इस्तेमाल करे। उसने मेरी तमाम बातें बड़े ध्यान से सुनी, मगर आख़िर में वह बोला, 'बुरा न मानना, प्लेटोनॉव! जो कोई मुझे मिलता है वही मुझे मेरे उपन्यासों और कहानियों के लिए मसाला देने लगता है और मुझे यह बताने का प्रयत्न करता है कि मुझे किस विषय पर लिखना चाहिये। तुमने आज जो कुछ भी मसाला मेरे सामने रक्खा है वह अपार और अत्यन्त महत्व का है। मगर मै इसका उपयोग नहीं कर सकता हूँ क्योंकि ऐसा महान् ग्रन्थ लिखने के लिए, जैसा तुम सोचते हो, किसी दूसरे के शब्द, वे चाहे कितने ही सच्चे क्यों न हों, काफी नहीं हो सकते और इधर-उधर कुछ देख-सुनकर और पेन्सिल से अपनी नोटबुक में दूसरों के देखे-सुने अनुभवों को लिख लेने से ही कोई ऐसा महान् ग्रन्थ नहीं लिख सकना और न लिखने के योग्य ही हो सकता है। वेश्यावृति पर सच्ची पुस्तक लिखने के लिए वेश्याओं की जिन्दगी में घुसने की आवश्यकता है। चतुरता से उनके जीवन को देखने या उनके बारे में कुछ लिखने के विचार से उनके जीवन मे घुसा नहीं जा सकता। स्वभाविक तौर पर ही यह काम हो सकता है। कोई अच्छा लेखक ऐसा कर सके तभी इस विषय पर एक महान् पुस्तक लिखी जा सकती है अन्यथा

नहीं ।' मुझे उस लेखक के इन शब्दों को सुनकर बड़ी निराशा हुई । परन्तु साथ ही उसके इन शब्दों ने मुझे इस काम में लगने के लिए उत्साहित भी किया। मेरे मन में ऐसा विश्वास-सा हो उठा कि एक न एक दिन, शायद पचास वर्ष के बाद, अवश्य कोई बड़ा कलाकार जिसने वेश्या जीवन के सभी पहलुओं को स्वयं देखा और अनुभव किया होगा, और शायद यह कलाकार कोई रूसी ही होगा, इस अधम जीवन के हृदय-विदारक सच्चे चित्रों को एकत्र करके एक ऐसे महान ग्रन्थ में दुनियाँ के आगे रक्खेगा जिसको पढ़कर लोग कह उठेंगे, 'अरे यह सब तो हम भी रोज़ देखते थे। फिर भी हमें यह कभी नहीं लगा कि यह जीवन ऐसा भयङ्कर है !' मेरा मन बारबार कहता है कि एक दिन एक ऐसा महान् कलाकार अवश्य रूस मे उत्पन्न होगा ।'

'आमीन् !' लिखोनिन ने गम्भीरता से कहा, 'आइये उसके नाम पर हम लोग आज शराब पियें !'

'ख़ुदा की क़सम' एकाएक नन्ही मनका ने कहा, 'अगर कोई हमारी ज़िन्दगी की हक़ीक़त लिखे...हम अभागी छिनालों की जिन्दगी की हक़ीक़त...' इतने में कमरे का द्वार खटका और जेनी अपनी चमकदार नारङ्गी रङ्ग की पोशाक पहिने हुए कमरे में दाखिल हुई ।

अध्याय ग्यारहवाँ

जेनी ने कमरे में घुस कर सब आदमियों को ऐसी आज़ादी से सलाम किया मानों वही इस घर की मालकिन हो और फिर सरजी के पीछे एक कुर्सी पर वह बैठ गई। वह अभी उस जरमन से अपना पिण्ड छुड़ाकर आ रही थी जिसने आज ही शाम को नन्हीं मनका से सन्तुष्ट न होने पर ख़ाला की सिफ़ारिश पर पाशा को अपने कमरे में बुलाया था। मगर ऐसा मालूम होता है जेनी के सौन्दर्य पर भी वह लट्टू होकर इस घर से गया था, क्योंकि तीन घण्टे तक शराब की भट्टियों का चक्कर लगाने के बाद वह फिर हिम्मत बाँधकर इसी घर में लौट आया था और बैठक में बैठा-बैठा तब तक चुपचाप इन्तज़ार करता रहा था जब तक कि जेनी का रोज़मर्रह का प्रेमी उसके कमरे में से निकलकर चला नहीं गया था। उसके चले जाने के बाद वह जेनी को अपने साथ कमरे में ले गया था।

टमारा ने जेनी से आँखों ही आँखों मे कुछ पूछा। उत्तर में जेनी ने घृणा से मुँह सिकोड़कर सिर हिलाया और उसकी पीठ काँप उठी। धीरे से वह बोली, 'हाँ, चला गया...छी...!...'

प्लेटोनॉव जेनी को बहुत ध्यानपूर्वक देख रहा था। वह जेनी के साथ दूसरी छोकरियों से बिलकुल भिन्न बर्ताव करता था क्योंकि जेनी के लापरवाह, घमण्डी और विद्रोही स्वभाव के लिए उसके हृदय में एक ख़ास इज्जत थी। इस समय बार-बार जेनी की तरफ़ घूम-घूमकर देखने पर प्लेटोनाव को लगा कि जेनी की बड़ी-बड़ी और सुन्दर आँखें जल-सी रही हैं, उसका चेहरा विकृत होकर लाल हो रहा है

और उसके होंठ सूखे जा रहे हैं। प्लेटोनॉव ने समझ लिया कि जेनी के हृदय मे बहुत दिनों से जो आग जल रही है वह इस समय इतनी भड़क उठी है कि उसके धुँए और ज्वालाओं से जेनी का कंठ रुँधा जा रहा है। इस दशा में जेनी जैसी सुन्दर उसे लगी वैसी आजतक कभी वह उसे नहीं लगी थी। बाद में भी फिर प्लेटोनॉव ने जब-जब इस समय की घटना को याद किया तब-तब वह इसी नतीजे पर पहुँचा। प्लेटोनॉव ने यह भी देखा कि इस समय जितने आदमी कमरे में मौजूद थे, वे सभी केवल एक लिखोनिन को छोड़कर, जेनी को तरफ बड़े ध्यान से देख रहे थे। कोई सीधे-सीधे तो कोई आँखें बचाते हुये। मगर दिल वह सभी का एक-सा बेध रही थी। ऐसा लगता था कि इस स्त्री के सौन्दर्य को देखकर और यह जानकर कि जिस क्षण चाहे वे उसे तुरन्त पा सकते हैं, सभी के मन मैले हो रहे थे।

'किसी चीज़ से तुम बडी उत्तेजित दीखती हो, जेनी।' प्लेटोनाव ने धीरे से कहा।

जेनी ने स्नेह-पूर्वक अपनी उङ्गलियों से प्लेटोनॉव की बाँह छूकर कहा, 'मेरी चिन्ता मत करो! कुछ नहीं है...स्त्रियो की बातें तुम्हारी समझ में नहीं आयेंगी।'

मगर यह कहकर वह फौरन ही टमारा की तरफ घूमी और उससे इस प्रकार की ठगों और उठाईगोरो की-सी साङ्केतिक और विचित्र भाषा मे, आवेश मे भरकर, बातें करने लगी जो वहाँ पर बैठे हुए लोगों मे से किसी की समझ मे नहीं आई।

'इस बुद्धिमान मनुष्य को धोखा देने की कोशिश मत करो...यह बड़ा ही चतुर है', टमारा ने मुस्कराते हुए जेनी की बातें काटकर प्लेटोनॉव की तरफ आँखों से इशारा करते हुए कहा।

सच तो यह है कि प्लेटोनॉव सारा मामला समझ भी चुका था। जेनी टमारा को घृणा-पूर्वक बता रही थी कि आज पाशा के पास इतने आदमी आये थे कि दिन और रात मे कुल मिलाकर उस अभागी को दस बार से भी अधिक उनके साथ कमरों मे जाना पड़ा था। हर बार एक नये आदमी के साथ उसे जाना पड़ा था जिसका फल यह हुआ था कि वह बेचारी कुछ देर पहिले मूर्छित होकर गिर पड़ी थी। मगर ख़ालाजान ने दवा पिलाकर उसे होश में कर लिया था और फिर फौरन ही बैठक मे भेज दिया था। जेनी ने ख़ालाजान से पाशा का पक्ष लेते हुये कुछ कहा था जिसपर ख़ालाजान उससे बिगड़ उठी थीं और सजा देने की धमकियाँ देने लगी थी।

'यह सब क्या झगड़ा है?' यारचेन्को ने परेशानी से भौंहे सिकोड़ते हुये पूछा।

'जनाब परेशान न हों...कोई ख़ास बात नहीं है।' जेनी ने और भी उत्तेजित होकर कहा, 'हमारा मामूली...रोज़ मर्रह का एक घरेलू मामला है। सरजी आइं-वानोविश क्या मैं तुम्हारी शराब में से थोड़ी-सी पी सकती हूँ ?'

यह कहकर उसने आधा गिलास शराब गिलास में उँडेलकर एक घूँट में गट-गट ढकोस ली।

प्लेटोनॉव चुपचाप उठकर द्वार की तरफ़ चला।

'नहीं सरजी, कोई ऐसी बात नहीं है! रहने दो।...' जेनी ने उसे रोक-कर कहा।

'नहीं, मुझे रोको मत।' प्लेटोनॉव ने कहा, 'मैं एक बहुत साधारण काम करने जा रहा हूँ—पाशा को सिर्फ़ यहाँ लिवा लाऊँगा...जरूरत होगी तो उसकी क़ीमत भी दे दूँगा। यहाँ इस दीवान पर लेटकर वह कुछ देर आराम कर सकेगी गो कि यहाँ भी...ख़ैर नियूरा, दौड़कर जल्दी से उसके लिए एक तकिया ले आओ!' यह कहकर वह चला गया।

प्लेटोनॉव की जैसे ही पीठ फिरी, जैसे ही वह कमरे के बाहर हुआ वैसे ही बोरिस ने घृणापूर्ण क्रोध से बड़बड़ाना शुरू कर दिया।

'यारो, इस आवारा को हम लोग अपने साथ यहाँ क्यों घसीट लाये हैं? क्या सब तरह का कूड़ा-कर्कट भी अपने साथ लिये घूमना हमारे लिए ज़रूरी है? शैतान ही जाने यह कौन है? न जाने क्या काम करता है? कहाँ का है? लिखोनिन, तुम हमेशा इसी तरह की गडबड़ किया करते हो?'

'लिखोनिन को दोष क्यों देते हो? मैंने उसका तुम लोगों से परिचय कराया है' रामसेस ने कहा, 'मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह एक बहुत ही शरीफ़ आदमी है! बड़ा ही अच्छा साथी है।'

'हूँ! क्या कहने हैं! मुफ्त की शराबख़ोरी में शरीक होने के लिए ही अच्छा साथी होगा! मुझे तो साफ़ वह एक मामूली आवारागर्द दीखता है जिसने इस चकले को अपना घर बना रक्खा है। या वह यहाँ का एक साधारण दलाल है जिसे मेहमानों से ख़ातिरदारी पर ख़र्च कराने के लिए कमीशन मिलता होगा।'

'रहने भी दो बोरिस, बेवकूफ़ी की बातें मत करो,' यारचेन्को ने उसे झिड़कते हुए कहा।

मगर बोरिस चुप न हुआ। उसके स्वभाव की यह विचित्रता थी कि शराब का नशा उसकी जबान और टाँगों पर असर न करके उसके दिमाग पर असर

करता था जिससे उसका जी किसी न किसी से लड़ने को होता था। प्लेटोनॉव के लापरवाह व्यवहार और उसकी साफ़ और गम्भीर बातों से, जो चकले में बिलकुल अनुचित-सी लगती थी, वह काफ़ी चिढ़ गया था। उसकी तीखी और तानेजनी की बातों को भी प्लेटोनॉव ने लापरवाही से अनसुनी कर दिया था, जिसको अपनी उपेक्षा समझकर बोरिस का दिमाग और भी गरम हो उठा था।

'देखो तो, किस तरह की बातें हम लोगों से करता है!' बोरिस उबला हुआ कहता रहा, 'कैसे घमण्ड और मिजाज से ऊँची-ऊँची हाँकता है! आवारा और मक्कार कहीं का! बड़ा घुटा हुआ बदमाश है!'

जेनी की आँखें जो बड़े ध्यान से इस विद्यार्थी को घूर रही थीं, ईर्षापूर्ण खुशी से एकाएक चमक उठीं। वह तालियाँ पीटती हुई चिल्लाई, 'ठीक कहा! वाहरे बहादुर विद्यार्थी! तुम बड़े बहादुर हो!...ठीक कर दो उसे!...सचमुच कैसी बेहूदा बातें करता है! आने दो उसको जो कुछ तुमने अभी कहा है मै उससे स्पष्ट करके कह दूँगी!'

'ज़रूर! ज़रूर! तुमको क़सम है ज़रूर कहना!' बोरिस ने बडप्पन से मुँह चिढ़ाते हुये नाटक मे पार्ट करनेवाले ऐक्टर की तरह ज़ोर से चिल्लाकर कहा, 'बल्कि मै ही ख़ुद उससे साफ़-साफ़ कहूँगा!'

'इसको कहते है मर्दाना! मेरे प्यारे, मैं तुम पर निसार हूँ!' जेनी ने एक हँसी हँसते हुए मेज़ पर हाथ पटककर कहा, 'उल्लू की उड़ान और मर्दों की नाक छिप नहीं सकती!'

नन्ही मनका और टमारा जेनी के मुँह की तरफ़ आश्चर्य से देखने लगी। उसकी आँखों में चमकनेवाली घृणा और उसके उठे हुए नथनों को देखकर वे दोनों उसकी इच्छा समझ गईं और मुस्कराने लगी।

नन्हीं मनका ने हँसने हुये सिर हिलाकर जेनी को बात बढ़ाने का प्रयत्न करने पर झिड़का। जेनी की झगड़ालू आत्मा को जब यह विश्वास होने लगता था कि अब वह फजीता होने ही वाला है जिसको वह रच रही थी, तब उसका चेहरा ऐसा ही हो जाता था जैसा इस समय था।

'ऐसी बड़प्पन की बातें मत करो, बोरिस,' लिखोनिन ने कहा, 'यहाँ सभी बराबर है—कोई किसी से कम नही है।'

इतने में नियूरा एक तकिया लिये हुए आई। तकिया लाकर उसने दीवान पर रख दिया।

'यह तकिया किसके लिए लाई हो ?' बोरिस ने उससे चिल्लाकर पूछा, 'ले जाओ फ़ौरन इस तकिये को यहाँ से—यह क्या कोई सराय या अस्पताल है ?'

'ऐसी बातें मत करो, प्यारे। तुम्हे इन तमाम बातों से क्या मतलब ?' जेनी ने तकिया उठाकर टमारा की पीठ के पीछे छिपाते हुए कहा, 'ठहरो प्यारे। मैं थोड़ी देर तुम्हारे पास बैठूँगी।'

जेनी मेज़ का चक्कर लगाती हुई बोरिस के पास पहुँची और उसे ज़बरदस्ती एक कुर्सी पर बिठाकर स्वयं उसकी गोद मे बैठ गई। फिर उसकी गर्दन में अपनी बाँहे डालकर और अपने होंठ उसके होठों से सटाकर उसने उसको दबाकर इतनी देर तक चूमा कि बेचारा बोरिस साँस लेने के लिए तड़फड़ा उठा। अपनी आँखो से सटी हुई औरत की बड़ी, काली, चमकीली, अस्पष्ट और निश्चल आँखें उसने देखी और उन्हें देखकर क्षण भर के लिए उसे ऐसा लगा कि वे निर्जीव हैं और उनमे एक पागलों का-सा क्रोध भर रहा है, जिसे देखकर भय की एक अचानक कँपकपी—सङ्कट के प्रथम बोध की तरह—उसे हुई। बड़ी मुश्किल से जेनी की लचीली बाहो मे से अपना सिर छुडाता हुआ, और धकेलकर उसे अपने ऊपर से हटाता हुआ वह लज्जा से लाल, हाँफता और हँसता हुआ बोला, 'बड़ी विचित्र हो तुम !...तुम्हारा क्या नाम है ?...जेन्का ? बड़ी सुन्दर हो तुम !'

इतने में प्लेटोनॉव पाशा को लिए हुए कमरे मे दाखिल हुआ। पाशा की हालत इस समय बहुत बुरी हो रह थी। उसको देखकर बड़ी दया आती थी। उसका चेहरा बिलकुल फीका पड़ गया था और उसमे कुछ-कुछ नीलापन भी आ गया था जैसे कि उसके शरीर का सारा खून ही निकल गया हो। उसकी आँखें आधी बन्द और आधी खुली हुई निर्जीव शीशों की तरह धुँधली, एक पागलों की-सी धीमी-धीमी मुस्कान मुस्करा रही थीं। उसके होंठ खुले हुए लाल-लाल दो भीगे चीथड़ों की तरह ऐसे लटक रहे थे मानों उनकी खाल किसी ने खींच ली हो। धीमे-धीमे हिचकती हुई वह इस प्रकार आ रही थी मानो वह एक टाँग से लम्बा डग उठाती हो और दूसरी से छोटा। आकर चुपचाप वह दीवान पर लेट गई और तकिये पर सिर रखकर अपनी मन्द-मन्द पागलों की-सी मुस्कान मुस्कराती रही। उसका शरीर कुछ कुछ काँप रहा था। ऐसा लगता था मानों उसे ठण्ड लग रही है।

'माफ़ कीजिये जनाब मैं अपना कोट उतारता हूँ।' प्लेटोनॉव ने यह कहते हुए अपना कोट उतारकर पाशा को उससे ढक दिया। फिर टमारा से उसने कहा, 'पाशा को थोड़ी चाकलेट और शराब पिलाओ।'

बोरिस फिर उठकर कमरे के एक कोने मे जाकर, दीवार से पीठ टेककर, एक पैर दूसरे के आगे रखकर और सिर ऊँचा उठाकर खड़ा हो गया। फिर यकायक कमरे की शान्ति भङ्ग करता हुआ वह बड़ी गुस्ताख़ी से प्लेटोनॉव से बोला:

'ऐ...सुनो जी...तुम्हारा क्या नाम है?...यह तुम्हारी रखेली है? अपने पैर के जूते से पाशा की तरफ इशारा करते हुए उसने पूछा, 'क्यों?'

'क्या कहा?' प्लेटोनॉव ने भौहे चढ़ाते हुये गुर्राकर पूछा।

'या आप इसके रखेल है?...दोनों एक ही बात हैं न? क्या कहा जाता है ऐसे लोगो को यहाँ?...मेरा मतलब उन लोगों से है जिनके लिए यहाँ की छोकरियाँ कमीज़ें इत्यादि अपने हाथों से सिया करती है, और जिन्हे वे अपनी कमाई भी खुशी से खिलाती-पिलाती है... क्यों?...'

प्लेटोनॉव ने गुस्से में भरकर उसकी तरफ़ घूरा। मगर फिर अपने क्रोध को सँभालता हुआ, माथा सिकोड़कर, भर्राई हुई आवाज़ में, शान्ति-पूर्वक कुछ सोचता हुआ और अपने शब्दों को तोलता हुआ वह बोला, 'देखिये, आप कई बार मुझसे झगड़ा मोल लेने की कोशिश कर चुके है। एक तो मै देख रहा हूँ कि आप ऊपर से ठीक लगने पर भी नशे के कारण आपे से बाहर हुए जा रहे है। दूसरे आपके साथियो की वजह से भी मै आपसे कुछ कहना पसन्द नहीं करता। मगर आप इस तरह की बातें मुझसे करने पर ही तुले हुए है तो अबकी बार कृपया आप अपना चश्मा उतार कर मुझसे फिर ऐसे शब्द कहें।'

'क्या बकते हो?' बोरिस ने अपने कन्धे हिलाकर, नाक से ज़ोर से साँस निकालते हुए कहा, 'कौन-सा चश्मा! मै चश्मा क्यों उतारूँ?' मगर यह कहते हुए भी उसका हाथ आप से आप चश्मे पर जा लगा जिसको पकड़कर उसने अपनी नाक पर मज़बूती से रख लिया।

'इसलिए कि फिर आपने मुझसे ऐसे शब्द कहे तो मैं आपकी नाक पर तानकर एक घूँसा जड़ दूँगा जिससे डर है कि कही चश्मा टूटकर आपकी आँखों में न घुस जाय', प्लेटोनॉव ने लापरवाही से कहा।

झगड़ा यहाँ तक पहुँच जायगा इसकी किसी को आशा न थी। फिर भी सब चुप रहे। केवल नन्ही मनका आश्चर्य से 'ऊह, ऊह' करती हुई ताली बजाने लगी। जेनी उत्सुकता और आवेश से कभी बोरिस की तरफ़ और कभी प्लेटोनॉव की तरफ़ देखने लगी।

'और मेरा घूँसा तुम्हारे मुँह पर पड़ गया तो वह बिल्कुल चपटा ही हो

जायगा !' भोंड़े तौर पर छोकरों की तरह, बोरिस ने चिल्लाकर प्लेटोनाव से कहा, 'मुझे भी बड़ी देर से केवल यही ख़्याल आ रहा है कि अपने हाथ तुम जैसों पर...

उसका इरादा प्लेटोनॉव के लिए कोई बहुत ख़राब विशेषण प्रयोग करने का था, मगर शायद कुछ सोचकर अथवा कोई उपयुक्त शब्द न मिलने से उसने अपना इरादा बदलकर इतना ही कहा, 'तुम जैसो पर डालकर गन्दा क्यों करूँ ? दोस्तो ! मैं इस जगह अब एक क्षण भी और ठहरने के लिए तैयार नहीं हूँ ! मैं किसी भी आवारागर्द के साथ मिलने और बैठने का आदी नही हूँ। मुझे बचपन से ऐसी शिक्षा नहीं मिली है।'

यह कहता हुआ वह तैश में आकर कमरे के द्वार की तरफ चला।

कमरे के द्वार पर पहुँचने के लिए बोरिस को प्लेटोनॉव के बिल्कुल पास से गुज़रना पड़ा। प्लेटोनॉव एक जङ्गली और खूँख्वार जानवर की तरह तिरछी नज़रो से बोरिस को घूर रहा था। उसके पास से गुज़रते हुए बोरिस के मन मे आया कि प्लेटोनॉव की कोख में एक घूँसा जडकर भागे क्योंकि उसने सोचा कि प्लेटोनॉव ने उसे मारने की कोशिश की तो उसके साथी अवश्य उसे बचा लेंगे ; मगर फिर तुरन्त ही, प्लेटोनॉव की तरफ़ बिना देखे ही, उसको प्लेटोनॉव के इन चौड़े-चौड़े हाथों का जो चुपचाप मेज़ पर रक्खे हुए थे, उसके आगे की तरफ़ झुके हुए हठीले सिर का जिसका माथा काफ़ी चौड़ा था और उसके विशाल, बलिष्ठ और चपल शरीर का जो लापरवाही से झुका हुआ कुर्सी मे ज़रूर बैठा था मगर ज़रूरत पड़ते ही उछलकर खूँख्वार हमला कर देने के लिए तैयार दीखता था, ध्यान आया। अस्तु, वह चुपचाप ज़ोर से दर्वाज़े के किवाड़ बन्द करता हुआ बाहर निकल गया।

'ख़स कम जहान पाक !' जेनी ने उसके चले जाने पर मज़ाक से मुँह बनाते हुए कहा, 'टमोरच्का, लाओ थोड़ी शराब और पियें !'

पतले शरीर के विद्यार्थी पेट्रोवस्की ने अपनी जगह पर खड़े होकर बोरिस का पक्ष लेते हुए कहा, 'दोस्तो, आपके मन में जैसा आवे करें ; मगर मैं तो यहाँ से बोरिस के साथ चला जाना ही उचित समझता हूँ। वह चाहे ग़लती पर ही हो—उसके लिए हम लोग उसे आपस में डॉट-डपट सकते हैं—मगर जब कोई बाहरी आदमी उसकी बेइज़्ज़ती करे तब हमें उसका साथ देना ही आवश्यक है। अस्तु मैं अब यहाँ नहीं ठहर सकता। मैं भी जाता हूँ।'

'हे मेरे ईश्वर !' लिखोनिन ने परेशानी से अपनी कनपटियाँ खुजलाते हुए कहा, 'बोरिस का व्यवहार शुरू से ही इतना बेहूदा, गुस्ताख़ और मूर्खतापूर्ण था !

फिर भी हमको उसका इसमे भी साथ देना ही चाहिये। क्या यहा कोई राजनैतिक सभा या सम्मेलन हो रहा है जहां मे हम अपना विरोध दिखाने के लिए उठकर चले जायँ? अथवा यह कोई अखबार का दफ्तर या कारखाना है जहा मे हड़ताल करके हम चल दें? इस चकले मे हड़ताल करके हम लोग चलें? अथवा हम लोग सरकारी नौकर हैं कि एक दूसरे के हरएक दोष को छिपाने का प्रयत्न करें?'

'कुछ भी कहे आप। मैं तो यहाँ से अब चला जाना ही ठीक समझता हूँ। बोरिस का ऐसी हालत मे साथ देना हमारा फर्ज हो जाता है!' पेट्रोवस्की ने गम्भीरता से कहा और यह कहकर वह भी चल दिया।

'खुदा हाफिज़!' जेनी ने उससे जाते हुए कहा; परन्तु मनुष्य आत्मा भी कैसे-कैसे अन्धकारपूर्ण और टेढ़ेमेढ़े रास्तो पर भटका करती है! बोरिस और पेट्रोवस्की, दोनों सचमुच ही, बिलकुल ईमानदारी से, अन्दर से गुस्सा होकर निकले थे। मगर बोरिस वहाँ से आधे मन से उठकर चला था तो पेट्रोवस्की चौथाई मन मे ही। बोरिस को नशा था और गुस्सा भी था मगर साथ ही उसके मन में यह विचार भी आ रहा था कि अब चलो, अकेले रह जाने पर जेनी को अपने पास बुला लेना आसान होगा। पेट्रोवस्की ने भी बिल्कुल इसी इरादे से उससे आकर तीन रुपये उधार मांगे। बैठक मे दोनो आपस में मिले; सब ठीक-ठाक हो गया। दस मिनट के बाद ख़ालाजान, होशियारी से, दबे पावों चलती हुई उस कमरे तक गई जहाँ अभी तक सब नौजवान और छोकरियाँ बैठे थे और द्वार मे से मुँह निकालकर जेनी को पुकारकर बोली, 'जेनी, धोबी तुम्हारे कपड़े लाया है। आकर गिनलो।' फिर नियूरा की तरफ देखकर बोली, 'नियूरा, तुम्हारा ऐक्टर एक मिनट के लिए तुम्हे बुलाता है। आकर उसके साथ भी थोड़ी शराब पीलो।'

प्लेटोनॉव और बोरिस की आपस की व्यर्थ की तू-तू मैं-मैं पर बड़ी देर तक नौजवानों में बातें होती रही। प्लेटोनॉव से और किसी से जब कभी इस प्रकार का कोई झगड़ा हो जाता था तो प्लेटोनॉव को उस पर बड़ी देर तक बेहद शर्म, परेशानी और तकलीफ़-सी हुआ करती थी। कमरे में जो लोग थे सब प्लेटोनॉव का पक्ष ले रहे थे। फिर भी प्लेटोनॉव दुःख से उनसे कह रहा था, 'नहीं, नहीं भाई! मेरे लिए भी अब यहाँ से चल देना ही उचित है। व्यर्थ में मैंने आप लोगों के मज़े में विघ्न खड़ा कर दिया। आप के दोस्तों को आपसे अलग कर दिया। दोष मेरा भी उतना ही जितना उसका, अस्तु मेरे लिए भी अब यहाँ से चला जाना ही उचित है। शराब इत्यादि के बिल के दाम चुकाने की आप लोग चिन्ता न करें। मैं

पाशा को लेने गया था उसी वक्त सिमियन को सारे दाम चुका आया था।'

लिखोनिन एकाएक अपने बाल सँभालता हुआ उठा और बोला :

'नहीं जी, आप ठहरिये! मैं उन दोनों को भी अभी खीचकर यही लाता हूँ। मैं सच कहता हूँ वे दोनों ही बड़े अच्छे दिल के छोकरे हैं। अभी कम उम्र है, अस्तु छोटे-छोटे पिल्लों की तरह कभी-कभी अपनी छाया से ही लड़ने लगते हैं। मैं अभी उन्हे पकड़कर लाता हूँ और आपको विश्वास दिलाता हूँ कि बोरिस अपनी ग़लती मानकर आपसे ज़रूर माफ़ी माँगेगा।'

यह कहकर वह कमरे से चला गया। मगर पाँच मिनट में ही वह लौट आया। 'वे तो कमरों के अन्दर हैं' उसने लौटकर गम्भीरता-पूर्वक हाथ हिलाते हुए कहा, 'दोनों ही कमरे बन्द किये पड़े है।'

बारहवाँ अध्याय

इसी वक्त सिमियन हाथ में एक ट्रे लिये कमरे में दाखिल हुआ जिस पर दो उफनते हुए झागों की शराब से भरे हुए गिलास थे और उनके पास एक बड़ा-सा विज़िटिङ्ग कार्ड रक्खा था।

'क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप साहबों में से कौन यारचेन्को साहब हैं?' उसने सबकी तरफ देखते हुए पूछा।

'मैं हूँ, क्यों?' यारचेन्को ने उत्तर दिया।

'यह शराब ऐक्टर साहब ने आपकी खिदमत में भेजी है।'

यारचेन्को ने विजिटिङ्ग कार्ड उठाकर ज़ोर से पढ़ा। उस पर लिखा था :—

एग्मौन्ट—लवरेज़तत्स्की मेट्रोपोलिटन थियेटर्स का ड्रामेटिक आरटिस्ट

'बड़ा विचित्र नाम है!' पावलोव बोला, 'परन्तु इन लोगों के नाम शायद ऐसे ही होते हैं!'

'हाँ, और जो प्रख्यात हो जाते हैं वे या तो मोटे स्वर से बोलने लगते हैं या तुतलाकर अथवा हकलाकर बोलते हैं' प्लेटोनॉव ने कहा।

'जी हाँ, और सबसे मज़े की बात यह है कि मेट्रोपोलिटन थियेटर के इस

आर्टिस्ट से पहिले कभी परिचय का भी मुझे सौभाग्य नहीं मिला है। इस कार्ड की पीठ पर भी कुछ लिखा है। ख़त से लगता है कि किसी ऐसे आदमी ने लिखा है जो शराब के नशे मे चूर हो और पढा-लिखा भी बहुत थोडा ही है।' यारचेन्को ने कार्ड के पीछे लिखा हुआ मज़मून पढ़ना शुरू किया।

'रूसी ज्ञान के महापण्डित'—विज्ञान को विज्ञान नही वज्ञान लिखता है और महापण्डित की बजाय महापण्डन लिखता है – यारचेन्को ने समझाते हुए आगे पढ़ा 'की ख़िदमत में, जिनको इस मकान के रास्ते में से गुज़रते हुए देख लेने का मुझे सौभाग्य मिला था, ख़ादिम यह शराब पेश करता है और उनके गिलास से अपना गिलास छुआकर शराब पीने की ख्वाहिश ज़ाहिर करता है। अगर जनाब को मेरी याद नही आती तो जनाब नेशनल थिएटर और उसमे होनेवाले नाटक 'ग़रीबी शर्म की चीज़ नहीं है' की याद करें और उसमें भाग लेनेवाले उस नाचीज़ आर्टिस्ट की याद करें जो उसमे अफ्रीकन का पार्ट खेला है।'

'हॉ, हॉ, याद आ गया', यारचेन्को कहने लगा, 'एक बार इस नाटक की आमदनी धर्मार्दे मे जानेवाली थी और इसका सारा प्रबन्ध मेरे सिर डाला गया था। उस वक्त उसमें एक मग़रूर से दीखनेवाली मुछमुण्डे ऐक्टर से मेरी मुलाक़ात हुई थी .. मगर उसको यहॉ बुलाकर क्या करेंगे? क्यों?'

लिखोनिन ने हँसते हुए कहा, 'बुला लो यार, उसको भी यहीं। मसखरा होगा। कुछ नकलें-वकलें करेगा। मज़ा रहेगा।'

'आपकी क्या राय है?' यारचेन्को ने प्लेटोनॉव की तरफ़ मुड़कर पूछा।

'मुझे तो कोई उज्र नहीं है। मैं उसे कुछ-कुछ जानता भी हूँ। घुसते ही वह चिल्लाकर कहेगा, 'बाय, शैम्पेन लाओ!' फिर ऑखों में ऑसू भरकर वह अपनी स्त्री का आपसे ज़िक्र करेगा और आपको बतायगा कि वह कैसी देवी है। फिर देश-भक्ति पर एक व्याख्यान झाड़ेगा और अन्त में शराब के दाम चुकाते वक्त झगड़ा करेगा गोकि अधिक देर तक नहीं। काफ़ी मजेदार आदमी है।'

'बुला लो यार उसे भी यहीं', वोल्ोद्या ने केटी के, जो उसकी गोद में बैठी हुई अपनी टॉगें हिला रही थी, कन्धों के ऊपर से झॉककर कहा।

'तुम्हारी क्या राय है, वेल्टमैन?'

'क्या कहा?' वेल्टमैन ने चौंककर पूछा। वह अपने साथियों की तरफ़ पीठ मोड़े हुए पाशा के पास दीवान पर उसके शरीर पर झुका हुआ बैठा था। बड़ी देर से वह उसके प्रति सहानुभूति दिखाता हुआ, कभी उसके कन्धे और कभी बाल सहला

रहा था। पाशा, उसकी तरफ़ देखती हुई सदा की भाँति निर्लज्जता-पूर्वक अपनी अर्थहीन और विषय-लिप्त मुस्कान अधखुली आँखों और काँपते हुए पलकों से मुस-करा रही थी। 'क्या कहा? उस ऐक्टर को यहाँ बुलाने के बारे में पूछते हो? हाँ हाँ, बुलालो ठीक तो है। मुझे उसके आने मे क्या उज्र हो सकता है? ज़रूर बुलाओ...'

आखिरकार यारचेन्को ने सिमियन के द्वारा ऐक्टर को बुला भेजा। ऐक्टर जैसे ही कमरे में घुसा वैसे ही उसने अपना नाटक शुरू कर दिया। वह एक लम्बा और भड़कीला रेशमी कोट पहिने हुए था। हाथ में उसके एक चमकीला हैट था। कमरे के द्वार पर रुककर उसने टोपवाले हाथ को सीने से लगाकर इस अदा से झुककर सलाम किया मानो वह कोई बड़ा नवाब या किसी बैंक का डायरेक्टर हो। शायद वह इस समय ऐसे ही अमीर आदमियों के चित्र अपने मन मे बना रहा था।

'क्या आप लोगों की सोहबत में शरीक होने की मैं बदतमीज़ी कर सकता हूँ?' उसने बड़े ही विनम्र और कोमल स्वर में, एक तरफ़ को ज़रा सा अपना शरीर झुकाते हुए पूछा।

कमरे मे बैठे हुए लोगों ने उससे अन्दर आने की प्रार्थना की और वह अन्दर घुसकर उन्हें अपना परिचय देने लगा। ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाते हुए, आगे की तरफ़ कुहनी निकालकर उसने सबसे हाथ मिलाया। अब उसका व्यवहार नवाबों और अमीरों का-सा नही था बल्कि एक बड़े होशियार और अच्छे खिलाड़ी अथवा ऐय्याश नौजवान का-सा था। मगर उसका चेहरा, जिसके भौंहों के बाल कढ़े हुए और पलक ग़ायब थे, बिलकुल एक नीच क़िस्म के साधारण शराबी, ऐय्याश और जालिम आदमी के चेहरे की तरह भोंड़ा, कठोर और तुच्छ दीखता था और उसके साथ-साथ उसकी दो औरतें भी थीं। एक तो हेनरीटा, जो अन्ना की पेढ़ी की सबसे पुरानी और तजुर्बेकार छोकरी होने से बहुत कुछ देख चुकी थी और कोल्हू के बैल की तरह यहाँ की जिन्दगी की अच्छी तरह आदी हो चुकी थी, उसकी आवाज मोटी पड गई थी। मगर फिर भी वह अभी तक सुन्दर थी। दूसरी स्त्री उसके साथ बड़ी मनका थी जिसको इस घर मे लोग मगरमच्छ भी कहते थे। हेनरीटा पिछली रात से बराबर ऐक्टर के ही साथ थी। वह उसको इस घर से एक होटल में भी ले गया था।

ऐक्टर आकर यारचेन्को के पास बैठ गया और एक ऐसे बूढ़े जमींदार की तरह बातचीत करने लगा जिसके दिल मे किसी ज़माने में ख़ुद विश्वविद्यालय मे रह चुकने के कारण विद्यार्थियों को देखते ही प्रेम का भाव उमड उठा हो।

'मैं आपसे सच कहता हूँ जनाब, दुनिया के तमाम झँझटों से दूर रहकर मेरी आत्मा सिर्फ जवानों के निकट रहना चाहती है,' वह अपने क्रूर और नीच चेहरे पर ऐक्टरों की तरह प्रयत्न करके बनावटी भाव लाकर कहने लगा, 'इससे अच्छा और ऊँचा दूसरा कौन-सा आदर्श हो सकता है!...हमारे देश के विद्यार्थी-समुदाय से ऊँची और पवित्र वस्तु दूसरी कौन-सी हो सकती!...' यह कहकर यकायक वह बड़े ज़ोर से मेज़ पर एक घूँसा मारकर चिल्लाया,...'बॉय! शैम्पेन लाओ!'

लिखोनिन और यारचेन्को उसका कोई अहसान अपने ऊपर नहीं लेना चाहते थे। अस्तु जैसे ही उसकी शराब ख़त्म हुई वैसे ही उन्होंने भी शराब मँगाई और इस तरह शराब के दौर पर दौर चलने लगे। फिर न जाने कैसे गवैया मिशका और उसका साथी जिल्दसाज़ भी इन लोगों में आ मिले और आते ही उन्होंने अपने भोंडे राग अलापने शुरू कर दिये।

रोलीपोली भी जग गया था। वह भी कमरे के दरवाज़े पर आकर, सिर एक तरफ को खुशामद से झुकाये अपनी छोटी-छोटी आँखें जिनमें आँसू भर आये थे, अपने झुर्रियोंदार चेहरे को सिकोड़ता हुआ गिडगिड़ाकर कह रहा था, 'भले विद्यार्थियो...आपको इस फटेहाल बूढ़े को भी थोड़ा-बहुत ज़रूर खिलाना-पिलाना चाहिये। ईश्वर की क़सम खाता हूँ मुझे भी शिक्षा से बड़ा प्रेम है!...मुझे भी अन्दर आने की इजाज़त दीजिये!'

लिखोनिन को किसी का अन्दर आना नापसन्द नहीं था, अस्तु वह सभी के आने पर खुश होता था; मगर यारचेन्को के दिमाग पर जब तक शैम्पेन ने अच्छी तरह अपना असर नहीं कर लिया तब तक वह आश्चर्यपूर्ण लज्जा और भोलेपन से नये लोगों के कमरे में आने पर बराबर अपनी छोटी-छोटी भौंहें ऊपर को चढ़ाकर उनकी तरफ देखता रहा। एकाएक कमरे में बड़ी भीड़ लगने लगी। कमरे में धुँआ और शोरोगुल इतना अधिक हो रहा था कि वह बहुत छोटा लगने लगा था। सिमियन ने खिड़कियों के परदे भी बाहर से चढ़ा दिये थे। स्त्रियाँ अपने प्रेमियों से या नाच से फारिग़ होकर, बीचबीच मे, कमरे में आ जाती थी और नौजवानों की गोदो में बैठकर सिगरेट पीती थीं, गाती थीं, शराब पीती थी, बोसे लेती थीं और फिर नाचने या नये प्रेमियों की माँग पूरी करने चली जाती थीं। दफ्तर के बाबुओं को यह सब बड़ा बुरा लग रहा था क्योंकि स्त्रियों का ध्यान बैठकख़ाने से जहाँ वे लोग बैठे थे, हटकर उस कमरे की तरफ़ अधिक हो गया था। अस्तु वे बिगड़े और विद्यार्थियों से झगड़ा करने की तैयारी करने लगे। मगर सिमियन ने

जैसे ही गम्भीर होकर दो शब्द उनमें कहे, वैसे ही वे सँभल गये और बिलकुल ख़ामोश हो गये।

नियूरा भी अब कमरे से वापिस आ गई थी। उसके पीछे कुछ देर में पेट्रोवर्स्की भी आ गया था। उसने लौटकर बड़ी गम्भीरता से कहा, मैं तब से बराबर सड़क पर टहलता हुआ आज की घटनाओं पर सोचता रहा। अन्त मे मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि सचमुच बोरिस ही ग़लती पर था, मगर वह नशे मे था; अस्तु उसकी ग़लती का हम लोगों को ख्याल नहीं करना चाहिये।' जैनी भी कुछ देर बाद लौट आई। मगर वह अकेली ही लौटी क्योंकि बोरिस उसके कमरे में पड़कर सो गया था।

ऐक्टर के हुनरों की तो कोई इन्तहा ही नहीं लगती थी। कभी वह एक मक्खी के भिनभिनाने की, जिसे कोई शराबी खिड़की के शीशे पर पकड़ने की कोशिश करता है और कभी लकड़ी पर आरा चलाने की मजेदार नक़लें कर रहा था। उसने कमरे के एक कोने मे खड़े होकर, मुँह फेरकर टेलीफोन पर एक परेशान स्त्री की बातचीत और उसके बाद ग्रामोफोन पर एक रिकार्ड बजाने की भी अच्छी नक्लें कीं। अन्त में उसने एक फारसी छोकरे की और उसके बन्दर की नकल की। झूठमूठ को हवा मे, हाथ से किसी की छोटी-सी ठोड़ी पकड कर उसने अपने दाँत दिखाते हुए बन्दर की तरह खीसें काढ़ी और फिर ज़मीन पर बन्दर की तरह बैठकर, आँखें मिचका-मिचकाकर और अपना शरीर और सिर खुजला-खुजलाकर उसने नाक के स्वर से बन्दरवालों का एक गीत गाया।

अन्त मे उसने नन्ही मनका को अपने सीने से चिपटाकर उसे अपने लम्बे कोट के पल्लों के अन्दर ढाँक लिया और अपने हाथ आगे को फैलाकर और आँखों में आँसू भरकर अपना मुँह एक तरफ़ इस प्रकार लटका लिया जैसे रूस में फिरनेवाले अच्छे डील-डौल के सैकड़ों गन्दे फारसी छोकरे सिपाहियों के पुराने ओवरकोट पहिने हुए, अपना गन्दुमी रङ्ग का सीना खोले हुए और अपनी गोद में एक खाँसता और खुजलाता हुआ बन्दर—जिसके बाल जुओं से भरे होते हैं—लटकाये हुए चारों तरफ़ घूमते दीखते हैं।

'तुम कौन हो?' मोटी किटी ने जिसको ऐक्टर की यह नकल खास तौर पर पसन्द थी, बहुत गम्भीर बनकर ऐक्टर से पूछा।

'मैं...मैं...मैं फारस देश का एक गरीब बन्दरवाला हूँ, श्रीमतीजी,' गिड़-गिड़ा-कर नाक के स्वर से ऐक्टर ने उत्तर में कहा, 'मेहरबानी करके मुझे कुछ दीजिये, श्रीमतीजी।'

'तुम्हारे इस बन्दर का क्या नाम है ?'

'मट्रेश्का...बड़ा भूखा है, श्रीमतीजी...कुछ खाना चाहता है...'

'तुम्हारे पास पासपोर्ट है ?'

'मैं फारसी हूँ...फारसी...श्रीमतीजी, मुझे कुछ दीजिये..'

ऐक्टर के आने से सचमुच लुत्फ़ बढ़ गया था। उसने काफ़ी शोरगुल मचाकर तमाम साथियों का उत्साह, जो कि धीरे-धीरे कम हो चला था, फिर से बढ़ा दिया था। ज़रा-ज़रा देर के बाद वह नक़्क़ालों की तरह चिल्लाकर कहता था, 'बॉय, शैम्पेन लाओ!' परन्तु सिमियन उसके तरीक़ों से अच्छी तरह परिचित था। अस्तु वह उसके इस प्रकार चिल्लाने की कोई खास परवाह नहीं करता था।

ऐक्टर की नकलों के ख़त्म होते ही रूसी हुड़दङ्ग प्रारम्भ हो गया जिसमें उठकर शोरोगुल होने लगा। किसी ने उठकर पियानो बजाना शुरू कर दिया; रोलीपोली उसकी तानो पर थिरकने लगा, अपने पतले-पतले कन्धे ऊपर को उचकाकर और एक तरफ़ को ऐंठकर वह अपने दोनों तरफ लटकते हुए हाथों की उङ्गलियाँ फैलाकर एक ही जगह पर, खड़ा-खड़ा कभी इस टाँग पर और कभी उस टाँग पर विचित्र ढङ्ग से कूद-कूदकर नाचने लगा। बीच-बीच में वह यकायक चिल्लाकर ज़ोर से उछलता था और आगे की तरफ़ कूदकर, नाचता हुआ कुछ गाने लगता था और फिर अपने-आप ही अपना सिर हिलाता हुआ कहता था, 'वाह! वाह! वाह! ऐसे अच्छे नाच के लिए तो कम से कम एक अद्धा ब्रान्डी का इनाम ज़रूर मिलना चाहिये।'

मिशका और उसका साथी दोनों ही जिनकी आँखे इतनी भारी हो गई थी कि उनके पलक भी अब बड़ी मुश्किल से खुलते थे, अभी तक अपने रागों की धुन में ही मस्त थे।

ऐक्टर महोदय ने गन्दे क़िस्से और चुटकुले सुनाना शुरू कर दिया था। जादूगर की तरह वह उन्हें निकाल-निकालकर अपने पिटारे में से फ़ेंक रहा था। स्त्रियाँ उन्हें सुनकर हँसी से लोट-पोट हुई जा रही थी और हँसते-हँसते थककर कुर्सियों की पीठ पर सहारा लेकर सुसताने लगती थीं। वेल्टमैन, जो बड़ी देर से धीरे-धीरे पाशा से कुछ फुसफुसकर रहा था, इस शोरोगुल में चुपचाप उठा और कमरे से बाहर निकल गया, उसके कुछ मिनट बाद ही पाशा भी उठी और अपनी वही पागलों की-सी मुस्कान मुस्कराती हुई उसके पीछे-पीछे चली गई।

दूसरे सब विद्यार्थी भी एक-एक करके, केवल एक लिखोनिन को छोड़कर, को

बाहर जाकर जरा शान्ति से बैठने और कोई किसी दूसरे बहाने से उठकर, कमरे में चले गये और काफ़ी देर तक वापिस नहीं लौटे। वोलोद्या पावलोव ने बैठक में होनेवाला नाच कुछ देर तक देखने की इच्छा प्रगट की। टोल्पीजिन के सिर में ऐसा दर्द उठा कि बेचारे ने टमारा से कहीं ऐसी जगह ले चलने को कहा जहाँ वह अपना सिर धो सके। पैट्रोवस्की लिखोनिन से चुपचाप तीन रुपये उधार लेकर बाहर चला गया और मकान के रास्ते में खड़े होकर उसने ख़ालाजान से नन्ही मनका को अपने पास भेज देने की प्रार्थना की। रामसेस की तकल्लुफ़ी तबियत भी आज जेनी के विचित्र, स्पष्ट और उत्तेजक सौन्दर्य को देखकर पिघल उठी थी, अस्तु उसे याद आ गया कि दूसरे दिन सवेरे ही उसे एक बड़ा ज़रूरी काम करना है जिसके लिए उसे घर जाकर जल्द सो जाना ज़रूरी है। मगर अपने तमाम साथियों को बन्दगी करके जब वह कमरे से जाने लगा तो उसने उनकी नज़रें बचाते हुए जल्दी से जेनी को द्वार के बाहर आने का आँख से इशारा किया! जेनी ने अपनी आँखें नीचे करते हुए उसका बुलावा स्वीकार कर लिया। मगर फिर जेनी ने जब अपनी आँखें ऊपर को उठाई तो उनमें प्लेटोनॉव को, जिसने वह मूक वार्तालाप चुपचाप देखा जिससे उसका माथा ठनका, घृणा और प्रतिकार की एक झलक दिखाई पड़ी। पाँच मिनट के बाद जेनी उठती हुई बोली, 'कुछ देर के लिए मुझे माफ़ कीजिये। मैं अभी लौटकर आती हूँ।' यह कहकर वह अपनी नारङ्गी रङ्ग का लँहगा झुलाती हुई चली गई।

'अच्छा, तो बस अबकी आपकी बारी भी होगी?' प्लेटोनॉव ने लिखोनिन की तरफ़ देखते हुए पूछा।

'नहीं भाई, आपका ख्याल ग़लत है!' लिखोनिन ने अपनी जबान चटखाते हुए कहा, 'मैं किसी उसूल की वजह से ऐसा करने से बाज़ नहीं आ रहा हूँ...नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है! मैं अराजकतावादी हूँ और मानता हूँ कि ख़राब से ख़राब मानी जानेवाली चीज़ें भी अच्छी हो सकती हैं...मगर सौभाग्य से मैं जुआरी हूँ। अस्तु जुए में ही मेरा सारा मन लगा रहता है। विषय-भोग की तरफ़ मेरा मन नहीं जाता है। परन्तु कैसे आश्चर्य की बात है कि मेरे मन में भी अभी-अभी आपसे यही प्रश्न जो आपने मुझसे पूछा, पूछने की इच्छा हो रही थी।'

'मुझे? जी नहीं, मुझे यह शौक़ नहीं है। किसी रोज़ बहुत थक जाता हूँ तो मैं यहीं रात को सो जाता हूँ। इसाय से उसकी कोठरी की चाबी ले लेता हूँ और उसमें

घुसकर उसकी खाट पर पड़कर सो जाता हूँ। यहाँ की सारी छोकरियाँ मुझे आदमी और औरतों की बीच की जात का जीव समझती है।'

'सच ?...आज तक कभी भी...?'

'जी नहीं, आज तक कभी भी नहीं।'

'हाँ, हाँ, बिल्कुल सच कहते है यह।' नियूरा ने कहा, 'सरजी, इस मामले मे बिल्कुल एक सन्यासी की तरह विरक्त रहते हैं।'

'पहिले, क़रीब पाँच साल के पहिले, मैंने भी इसका थोड़ा सा अनुभव किया था,' प्लेटोनॉव कहता रहा, 'मगर मुझे यह काम बड़ा रसहीन और घृणित लगा। कुछ-कुछ उन मक्खियों का-सा काम जिनकी नक़ल अभी इस ऐक्टर ने की थी। जिस तरह मक्खियाँ खिड़की के शीशों पर एक दूसरे से चिपटती है और फिर अपनी पीठें पिछले पैरों से खुरेचती हुई अलग होकर उड़ जाती है उसी तरह का मुझे यह नृत्य भी लगता है! यहाँ की प्रेम-क्रीड़ाओं में मै अपने लिए स्थान नहीं पाता। मेरी शक्ल भी अच्छी नहीं है। स्त्रियों के पास जाते हुए मै झिझकता और घबराता भी हूँ। उनसे नम्रता का व्यहार करने का मैं आदी हूँ। यहाँ ऐसे आदमियों की माँग होती है जो खुलकर प्यार करते हैं; ईर्षा करते हैं, आँखों मे आँसू भरकर जहर खाने की धमकियाँ देते है; मारते है; जानोमाल कुर्बान करते है...यानी जो पूरी तरह पर लैला मजनू का-सा नाटक कर सकते है। इसका कारण भी समझना मुश्किल नहीं है। स्त्रियों का हृदय प्रेम का भूखा होता है। उनसे रोज तरह-तरह के शब्दों मे मनुष्य प्रेम की बाते करते है, परन्तु प्रेम मे थोड़े बहुत नमक-मिर्च की भी ज़रूरत रहती ही है। केवल प्रेम के शब्दों से ही काम नहीं चलता, ऐसे कामों की जरूरत होती है जिनसे स्त्रियों का प्रेम उत्तेजित हो। अस्तु चोर, क़ातिल, डाकू और आवारों को स्त्रियाँ अधिक पसन्द करती हैं और सबसे बड़ी बात यह भी है कि मैं भी इस काम में पड़ जाऊँ तो मैंने यहाँ सबसे जो एक अच्छा स्नेह का नाता जोड़ लिया है वह ख़त्म हो जायगा।'

'बहुत मज़ाक हो चुका!' लिखोनिन ने अविश्वास से कहा, 'ऐसी ही बात है तो आप फिर यहाँ दिन-रात पड़े क्यों रहते? अगर आप इस विषय पर कुछ लिख रहे होते तो भी मैं समझ सकता था कि आप लिखने के लिए यहाँ से मसाला ले रहे है, जैसे कि उस प्रोफेसर ने तीन बरस बन्दरों में रहकर उनकी ज़बान और... मगर आप तो कहते हैं कि इस विषय पर आप कुछ लिख भी नही रहे है?'

'नहीं, यह बात नहीं है कि मै इस विषय पर लिखना नहीं चाहता। मगर समझ

मे नही आता कि क्या लिखूँ और कैसे लिखूँ। मुझे तो इस विषय पर लिखना असम्भव-सा लगता है।'

'ऐसा नहीं है तो फिर दूसरी बात यह हो सकती है कि यहाँ पर आप इन गिरी हुई आत्माओं का उद्धार करने, उन्हें इस कुमार्ग से हटाकर अच्छे जीवन की तरफ़ ले जाने के लिए आते हैं जिस तरह कि पुराने ज़माने में कुछ पादरी तीस बरस तक खोहों में तपस्या करने के बजाय बाजारों और चकलों में पतित आत्माओं को बचाने के लिए घूमा करते थे। मगर ऐसा भी आपका रुझान मुझे नहीं दीखता !'

'जी नहीं।'

'तब फिर आप इस स्थान के इतने चक्कर क्यों लगाते हैं? स्पष्ट है कि आपको यहाँ की बहुत-सी बातें खटकती भी हैं; मसलन आज की बोरिस से आपकी तू-तू मैं-मैं, और सिमियन का उस रोज़ एक स्त्री को पीटना, यहाँ की हर तरह की साधारण गन्दगी, पशुता, व्यभिचार, शराबखोरी इत्यादि सभी चीज़ें आपको बिलकुल नापसन्द हैं। खैर आप कहते हैं तो मैं माने लेता हूँ कि आप यहाँ के विषयभोग की गन्दगी में नहीं पड़ते हैं, परन्तु ऐसी हालत में आपका यहाँ आना-जाना मेरी समझ में बिलकुल नहीं आता।'

प्लेटोनॉव कुछ देर चुप रहा।

'देखिये', फिर उसने धीरे-धीरे, झिझकते हुए, मानो वह अपने विचारों को स्वयं सुनने का प्रयत्न कर रहा हो, कहना शुरू किया, यहाँ का जीवन मुझे...कैसे समझाऊँ...उपयुक्त शब्द नहीं मिलता। मुझे एक तरह से आप कह सकते हैं बड़ा आकर्षक लगता है...क्योंकि यहाँ जीवन के भयङ्कर और नग्न चित्र मुझे देखने को मिलते हैं। यहाँ जीवन पर किसी क़िस्म का परदा नहीं रहता। लोगों, मा-बाप, या अपनी आत्मा से डरने की यहाँ किसी को ज़रूरत नहीं रहती। न तो यहाँ कोई धोखा ही है और न कोई भय ही है। जो कुछ यहाँ है सब साफ़ है और ऊपर मौजूद है! यहाँ औरतें हैं जो सबके लिए एक-सी हाज़िर रहती हैं जिस प्रकार कि शहर की गन्दगी बहा ले जाने के लिए गन्दी नालियाँ हाज़िर रहती हैं। अपनी अति विषय-वासना की तृप्ति के लिए, जो जब चाहे, उनका बिना किसी हीले या हुज्जत के इस्तेमाल कर सकता है। वे हैं ही इसीलिए। केवल एक शर्त रहती है कि क्षण भर के लिए भी जो यहाँ अपनी विषय-वासना तृप्ति करने आयगा उसे अपनी गाँठ का रुपया देना होगा और एवज़ में आत्मग्लानि, बीमारी और बेहयाई मोल लेनी होगी। बस, एक इस शर्त के सिवाय और यहाँ कोई शर्त नहीं रहती है।

मनुष्य जीवन में, दुनिया मे और कहीं भी सत्य का ऐसा नग्न और भयङ्कर चित्र जो किसी फरेब और झूठ से ढका न हो, देखने को नहीं मिलता।'

'ख़ैर, यह तो मैं नही जानता! यहाँ की स्त्रियाँ इतना झूठ बोलती हैं कि ईश्वर ही जानता है! उनमे से किसी से भी जाकर जरा पूछो कि उसने पहिले-पहिल यह कुकर्म कैसे शुरू किया था। फिर देखो, कैसी कहानी सुनाती है!... कैसी हाँकती है!'

'ऐसा प्रश्न आपको उनसे पूछने की ज़रूरत ही क्या है? मत पूछिये। मगर वे आपसे झूठ भी बोलती है तो बच्चों की तरह। इनका झूठ बिल्कुल बच्चों का-सा होता है। आप जानते ही होंगे कि बच्चे भी बड़ी दून की हाँका करते हैं। मगर उनकी गप्पें बड़ी प्यारी होती हैं। बच्चों से अधिक सच्चा और ईमानदार इस दुनियाँ मे दूसरा कोई नहीं होता, परन्तु कैसे आश्चर्य की बात है कि वेश्यायें और बच्चे दोनो ही हमसे—हम काफी उम्रवाले मर्दो से—झूठ बोला करते हैं। आपस में वे झूठ नहीं बोलते किसी के कहने से भले ही कभी कुछ झूठ कह दें। मगर हमसे वे झूठ बोलते है। हम उन्हें झूठ बोलने के लिए मजबूर करते हैं। हम उनकी आत्मा को अच्छी तरह नही पहिचानते और उसमे अपने भोंड़े तरीको से घुसने के प्रयत्न करते है। उनसे हम तरह-तरह के बेवकूफी के प्रश्न पूछते हैं। जिसमे वे हमको अपने मन मे मूर्ख और झूठा समझने लगते है। अगर आप चाहे तो मैं आपको अभी वह तमाम मौक़े अपनी उङ्गलियो पर गिनकर बता सकता हूँ जिन पर वेश्यायें अवश्य झूठ बोलती है। उन्हे जानकर आप ख़ुद मान जायँगे कि मर्द ही उन्हे ऐसे मौकों पर झूठ बोलने के लिए मजबूर करते हैं।'

'अच्छा, अच्छा, बताइये।'

'देखिये, एक तो वेश्यायें अपने चेहरे पर पाउडर इत्यादि पोतकर अपने चेहरे की सचाई को छिपाने का प्रयत्न करती है। वे ऐसा क्यों करती है? इसीलिए कि हर फौज़ी आदमी, जो अपना मुहासों से लदा चेहरा लिए वसन्त मे अपनी विषयवासना से मुर्गे की तरह परेशान, अथवा इसी तरह का कोई और सरकारी नौकर या मठ का महन्त, अथवा कोई नौ बच्चों का बाप, या किसी ज़च्चा स्त्री का पति, जो भी यहाँ आता है केवल अपनी विषय-वासना की तृप्ति के लिए ही तो आता है। यह निकम्मे लोग यहाँ मज़ा लूटने के इरादे से आते हैं। अस्तु वे खूबसूरती भी चाहते हैं और यहाँ की सभी छोकरियों को, हमारी महान और सीधी-सादी रूसी जाति की इन बेचारी पुत्रियों को केवल इतना ही ज्ञान होता है कि,

मीठा चखने मे अच्छा होता है और लाल देखने मे सुन्दर होता है। अस्तु वे पत्नी लगा-लगाकर और सफेद और लाल रंग लगा-लगाकर अपने चेहरे सुन्दर बनाने का प्रयत्न करती है। क्यों है न ठीक?'

'दूसरे, सुन्दरता ही सिर्फ इन प्रेम के दीवानों के लिए काफ़ी नहीं होती। उनकी यह भी इच्छा रहती है कि उनके आलिङ्गन और प्रेम से यहाँ की स्त्रियां उसी प्रकार फड़क उठें जैसे कि प्रेम की कविताओं में उनके फडकने के वर्णन होते है। यह यहाँ पर आनेवाले मर्दों की माँग होती है। अस्तु यहाँ पर स्त्रियाँ उनमे चिपट-चिपटकर आहे भरती हैं, और शरीर मरोडकर कराहती और सी-सी सू-सू करती है। मर्द यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि यह सारी आहे और कराहना दिखावटी और पेशे का सिर्फ एक हुनर होता है, परन्तु फिर भी वे अपने आपको धोका देना पसन्द करते हैं और समझते हैं, 'ओहो! हम कैसे खूबसूरत हैं। हम कैसे जवान है! कैसी स्त्रियाँ हमसे खुश होती है!' अक्सर ऐसा देखने मे आता है कि खुशामद बिल्कुल स्पष्ट होने पर भी लोग अपनी खुशामद से बड़े खुश होते है। उनकी आत्मा की मशीन के पुर्ज़े मानों खुशामद का तेल पड़ते ही आसानी से चलने लगते हैं। ऐसी हालत मे आप ही बताइये कौन इन स्त्रियों को झूठा, असत्य और कृत्रिम व्यवहार करने के लिए मजबूर करता है?'

'तीसरे, जैसा आपने अभी बताया जब कभी उनसे यह प्रश्न पूछा जाता है कि वे इस ज़ीवन मे कैसे आई तब वे अवश्य ही झूठ बोलती हैं। हमे उनसे ऐसे प्रश्न पूछने का अधिकार ही क्या है? वे तो हमारे निजी जीवन मे कभी अपनी नाक घुसेड़ने का प्रयत्न नहीं करतीं! वे कभी हमसे हमारे प्रथम प्रेम अथवा हमारी पत्नी या बहिन के सतीत्व की कहानियाँ पूछने का प्रयत्न नहीं करतीं! आप कहेंगे कि आप उनके लिए रुपया खर्चते है! परन्तु आपके रुपये के एवज़ में दलाल, पुलिस, दवा, डाक्टर और शहर की चुङ्गी आपके हितों की पूरी तौर पर रक्षा भी तो करते है। वेश्याओ को भी, जिन्हे आप किराये पर लेते हैं आपके साथ नम्र और अच्छा व्यवहार करना होता है। वे आपके मुँह पर आपके अनुचित और भद्दे प्रश्नों के उत्तर में कोई भी थप्पड़ नही मार सकतीं यद्यपि अधिकारी हो जाती हैं; फिर भी आप सन्तुष्ट नहीं होते। आप चाहते हैं कि आप जो रुपया खर्च करते है उसके एवज़ में आपको सत्य भी मिले। अस्तु आपको एक ऐसी बेहूदा कहानी सुना दी जाती है जिसके सुनने के आपके दकयानूसी कान आदी होते हैं। किसी फौजी आदमी या सरकारी नौकर से फँसकर

हमल रह जाने, और उसके कारण माता-पिता के डर से घर छोड़कर भाग जाने और घर पर बूढ़े मा-बाप के दुखी होने और बार बार भटकी हुई पुत्री को फिर वापस आने के लिए आग्रह करने की कहानी आपको सुना दी जाती है। परन्तु जो कुछ भी मैं कह रहा हूँ वह लिखोनिन, आप पर बिलकुल लागू नहीं होता। मैं सच कहता हूँ आपकी आत्मा को मैं बड़ी ऊँची पा रहा हूँ...लीजिये थोड़ी शराब और पीजिये !'

दोनों ने और शराब पी।

'आप मेरी बातों से थक गये होंगे?' प्लेटोनॉव ने अनिश्चित भाव से पूछा, 'क्यों?'

'जी नहीं, बिल्कुल नहीं। कृपया कहे जाइये। मुझे आपकी बातों मे बड़ा मज़ा आ रहा है।'

'वैश्यायें उन लोगों से भी खूब झूठ बोला करती हैं जो उनसे आकर अपनी राजनीति की चर्चा किया करते है। वे उनकी हर बात मे खूब हॉ में हॉ मिलाती हैं। मैं किसी वेश्या से जाकर अभी कहूँ कि सरमायेदारों, ज़िमींदारों और नौकरशाही को नष्टकर डालना चाहिये, बम फेंककर उन्हें फौरन उड़ा देना चाहिये तो वह बड़े उत्साह से मेरा फौरन समर्थन करेगी। मगर कल ही फिर जब कोई सकारी ख़ैरख्वाह जाकर उससे कहेगा कि सारे समाजवादियों और विद्यार्थियों को मारकर भुरकुस कर डालना चाहिये, फॉसी पर चढ़ा देना चाहिये तो वह फिर उसकी भी उसी तरह फौरन ही हाँ में हाँ मिलाने लगेगी। और अगर कहीं आप किसी वेश्या को अपने प्रेम में फँसालें, किसी तरह आप उसके मन पर चढ़ जायें तब तो फिर क्या कहने हैं! फ़िर तो वह आपके साथ कही भी जाने को तैयार हो जायगी! आपके साथ क़त्लेआम में भाग लेने के लिए, डकैती डालने के लिए अथवा किसी का ख़ून करने के लिए भी वह जाने को तैयार हो जायगीं। बच्चे भी इसी तरह हमारी हर बात में हॉ में हॉ मिलाते और हमारे साथ हर जगह जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। ईश्वर की क़सम, लिखोनिन, इन वेश्याओं में बिल्कुल बच्चों की तरह बुद्धि होती है...'

'चौदह वर्ष की छोटी उम्र में जिन छोकरियों से वेश्य.वृत्ति का कुकर्म शुरू कराया गया हो, जो सोलह वर्ष की उम्र में पूरी तरह वेश्या बनकर बुरी बीमारियों का शिकार भी हो चुकी हों, जो हमारी दुनिया से अलग एक विचित्र तङ्ग दुनिया में बन्द रक्खी जाती हों, उनकी देहों का विकास कैसे हो सकता है? उनकी रोज़मर्रह की बातें आप ध्यान से सुनें तो आपको पता लगेगा कि उनकी तमाम भाषा में सिर्फ

तीस-चालीस शब्द ही होते हैं जिस प्रकार कि बच्चों या वहशियों की भाषा मे गिने-चुने शब्द होते हैं। खाना, पीना, सोना, आदमी, पलँग, श्रीमती, रुपया, प्यारे, डाक्टर, अस्पताल, कपड़े, पुलिस इत्यादि जैसे थोड़े से शब्द ही वे जानती हैं। अस्तु उनका मानसिक विकास, उनका अनुभव और उनका शोक मरते दम तक बच्चों का-सा ही रहता है। यही हाल उन दूसरी स्त्रियों का भी होता है जिनका अपने घर की ड्योढ़ी के बाहर की दुनिया से अधिक सम्बन्ध नहीं रहता। सूक्ष्म में यह वेश्यायें उन पौदों की भाँति होती हैं जिनको काफ़ी ऊँचे जाने की शक्ति होती है, परन्तु जिनकी बाढ़ शीशे और गमलो में रखकर मार दी जाती है। वेश्याओं में उनके इस अविकसित बचपन के कारण ही इस क़दर झूठा व्यवहार करने और झूठ बोलने की आदत होती है। उनका झूठ बिल्कुल भोला, बेमतलब का और स्वाभाविक होता है। परन्तु एक शाम की क़ीमत तय करने में, एक-एक रात में दस-दस आदमियों के साथ हम-बिस्तर होने में, शहर की म्यूनिसिपैलिटी द्वारा वेश्याओं के लिए बनाये हुए क़ायदों में जिनके अनुसार उन्हें कुछ ख़ास दवाइयों का प्रयोग करके अपना शरीर स्वच्छ रखना चाहिये, साप्ताहिक डाक्टरी मुआयनों मे उन तमाम भयङ्कर बीमारियों की जिनकी यहाँ सिर्फ़ उतनी ही फ़िक्र की जाती है जितनी कि हम लोग ज़ुकाम की करते है और यहाँ की औरतों की मर्दों के लिए हार्दिक घृणा मे, जिसको छिपाने का वे प्रयत्न तक नहीं करती, कितना भयङ्कर, नंगा और सीधा सत्य भरा है। यहाँ के बेढब जीवन के क्षुद्र अन्यायो और अविश्वासों को मै अपनी आँखो से रोज़ देखता हूँ और समझता हूँ; फिर भी मै यहाँ के जीवन मे वह झूठ और फरेब दूसरों के प्रति फरेब और अपने प्रति फरेब—नहीं पाता जो दुनिया में मनुष्य-जीवन मे ऊपर से नीचे तक हमे पग-पग पर मिलता है। क्यों लिखोनिन, क्या यह सच नहीं है कि दुनिया के निन्यानवे-फीसदी दम्पतियो के विषय-भोग मे भी खींचातानी, रहती है, धोखा रहता है और घृणा रहती है? कितनी अन्धी, और बेरहम पर समझी-बुझी और जोड़-तोड़ की क्रूरता उस पवित्र मातृ-स्नेह तक में भी मिली रहती है जिसका हम लोग इतना गुण गाते है। फिर इन बेवकूफी के व्यवसायों का तो कहना ही क्या है जिन्हे शिष्ट आदमियों ने अपने घोसलों, अपने माँस के टुकड़ों—अपनी पत्नियो, अपने बच्चों, अपने सरकारी नौकरों—इन्सपेक्टरों, जजों, सरकारी वकीलों, जेलरों, जनरलों, सिपाहियों और हजारों ऐसे दूसरों को सुरक्षित बनाये रखने के लिए रचा है! यह पेशे मनुष्य की लोलुपता, कायरता, नीचता, गुलामी, क़ानूनन जायज़ की हुई विषयवासना, आलस्य और कमीनापन के द्योतक

और पोषक हैं ! कमीनापन नहीं तो और यह क्या है ! मगर फिर भी हम इस पेशे को कायम रखने के लिए कैसे बड़े से बड़े शब्दों का प्रयोग करते है ! देश की रक्षा के लिए ! समाज को कायम रखने के लिए ! धर्म को बचाने के लिए ! बाप रे बाप ! मुझे तो इन शब्दों को सुनकर अब डर लगता है । मेरा विश्वास ऐसे अच्छे-अच्छे पवित्र शब्दों पर अब नहीं रहा है। इन तुच्छ झूठ बोलनेवाली, कायर, खाऊ और अधम स्त्रियों से भी मेरा मन उब गया है । मनुष्य जीवन आनन्द-प्राप्ति के लिए होता है, अनन्त सृष्टि क्रिया के लिए, जिसको करता हुआ मनुष्य ईश्वर पद तक को प्राप्त हो जाता है । मनुष्य जीवन प्रेम के लिए होता है...अनन्त प्रेम के लिए जिसमें पेड़ आकाश, मनुष्य, कुत्ता, हिरन इत्यादि सबको प्रेम कर सकते है । उस अन्नपूर्णा और सौन्दर्यमय पृथ्वी का भी इस अनन्त प्रेम मे समावेश होता है, जिस पर होनेवाले नित्यप्रति के कौतुक, जैसे उषा और रात्रि, हमे आश्चर्यचकित करते हैं। ऐसा जीवन पाकर भी मनुष्य झूठ और फरेब का जाल बनाकर उसमे स्वयं बुरी तरह फँस गया है। अपने ही कर्मों से ऐसा नीच हो रहा है !... लिखोनिन...मैं तो इस जीवन से सचमुच बिलकुल थक गया हूँ !'

'मै भी अराजकता के सिद्धान्तों का पुजारी हूँ जिससे कुछ-कुछ तुम्हारी बातें मेरी समझ में आती हैं।' लिखोनिन ने विचार-पूर्वक कहा। मगर वह इस तरह से बोला मानों उसने प्लेटोनॉव की बातें सुनकर भी अच्छी तरह से नहीं सुनी थीं। उसके मन मे कोई नवीन विचार उत्पन्न हो रहा था। 'लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती। अगर मनुष्य जीवन सचमुच ही तुम्हें इतना गन्दा लगता है तो तुम इसको सहते कैसे हो...इतने दिनों तक इस सब को...' लिखोनिन ने मेज़ के चारों ओर अपना हाथ घुमाते हुए कहा, इस अधम से अधम और निकृष्ट मानव-रचना को तुम कैसे सहन करते रहे हो ?'

'यह मैं स्वयम् नही जानता', प्लेटोनॉव ने भोलेपन से कहा—'देखिये, मैं एक बड़ा आवारागर्द आदमी हूँ। मुझे जीवन से बहुत प्रेम है । मैंने कारखानों में काम किया है, छापेखाने में कम्पोजिटर का काम भी मैं कर चुका हूँ, मैंने किसान बनकर तम्बाकू भी बोयी और बेची है, जहाजों पर कोयला झोंका है, मच्छी मारने का काम भी किया है, तरबूज़ और ईंटें ढोने का काम किया है, सरकसों और थियटरों में ऐक्टर का काम भी किया है—इतने अधिक और तरह-तरह के काम मैंने किये हैं कि उन सबकी याद करना भी मेरे लिए अब मुश्किल है। और यह

तरह-तरह के काम मैंने इसलिए नहीं किये कि मुझे रुपयों की ज़रूरत थी या तङ्ग-दस्ती थी। नहीं, मुझे तरह-तरह का जीवन देखने की एक उमंग-सी रहती है। मैं आपसे सच कहता हूँ मेरा मन कुछ दिन घोड़ा बनने को, कुछ दिन पेड बनने को, कुछ दिन मछली बनने को, और कभी-कभी औरत बनकर ज़च्चा जीवन का अनुभव लेने को भी चाहता है। आन्तरिक जीवन का भी मैं अनुभव लेना चाहता हूँ। दुनिया को हर मनुष्य की दृष्टि से देखने की मेरी इच्छा है। अस्तु मैं स्वतन्त्र होकर चारों ओर विचरता फिरता हूँ। जिस शहर या क़स्बे में जी चाहता है चला जाता हूँ। तरह-तरह के काम करने लगता हूँ। जिधर मेरा भाग्य मुझे ले जाता है उधर ही खुशी से बहता हुआ चला जाता हूँ। ऐसी ही मटरगश्ती करते-करते मैं इस चकले में आ निकला था, परन्तु यहाँ का जीवन जब मैंने ध्यान से देखा तो मैं दंग रह गया। उसके बाद जितना ही अधिक मैंने इस जीवन को देखा है उतना ही अधिक मेरे मन मे भय, चिन्ता और क्रोध बढ़ा है! परन्तु इस सबका भी अब शीघ्र ही अन्त होनेवाला है। पतझड़ आने ही मैं यहाँ से चला जाऊँगा और जाकर एक ढलाई के कारखाने में कुछ दिनों काम करूँगा। मेरे एक दोस्त ने उसका मेरे लिए इन्तज़ाम कर लिया है...देखो, देखो, लिखोनिन ऐक्टर क्या कह रहा है...तीसरे ऐक्ट का पार्ट खेल रहा है।'

ऐग्मोन्ट-लवरेत्स्की, जो अभी तक बड़ी अच्छी तरह ठीक-ठीक नकलें कर रहा था—कभी एक सूअर के बच्चे को बोरे में बन्द करने की और कभी कुत्ते और बिल्ली की लड़ाई की नकल—अब धीरे-धीरे मुझपर झुकने लगा था। उसको 'आत्मप्रगटीकरण' का दौरा शुरू हो गया था जिसके दर्द से परेशान होकर उसने कई बार यारचेन्को का हाथ पकड़कर चूमने का प्रयत्न भी किया था। उसके पलक लाल हो गये थे; उसके मुड़े हुए, खुरखुरे होंठों के आस-पास गालों पर ऐसी झुर्रियाँ पड़ने लगी जिससे ऐसा लगता था कि वह रो रहा हो और उसकी आवाज़ भी रुँध चली थी।

'हाय मैं नाटक मे नाचता हूँ!' वह अपनी छाती दोनो हाथों से पीटता हुआ कह रहा था, 'लाल-पीले कपड़े पहिनकर रङ्गमंच पर मुँह बनाकर भीड़ को खुश करने के लिए नाचता हूँ! अब इस तरह मेरी मिट्टी पलीत है! किसी...समय...' उसने रुआसा चेहरा बनाकर कहना शुरू किया, '...मै जिस थिएटर मे शामिल हो जाता था उसका भाग्य उदय हो जाता था...लोग मेरे अभिनय को देखने के लिए उमड़-उमड़कर आते थे...जिस शहर में मै पहुँच जाता था शोर मच जाता था। जहाँ-

जहाँ मैंने अभिनय किया वहाँ के लोग मुझे अभी तक याद करते हैं और कहते हैं, 'ओहो कैसा बहादुर का पार्ट खेला था!' परन्तु हाय अब मेरी यह कद्र रह गई है...'

यह कहकर वह फिर झुका और यारचेन्को का हाथ चूमने का प्रयत्न करता हुआ बोला, 'हाँ, अब मैं कुछ नहीं हूँ! मुझे हिकारत से देखिये, मुझे बुरा कहिये, श्रीमान, मैं निरा मूर्ख हूँ, विदूषक हूँ। मैं शराबी हूँ...धर्म-कर्म से भ्रष्ट हो गया हूँ! आकर चकले में बैठता हूँ! परन्तु मेरी स्त्री...मेरी सती और साध्वी स्त्री...वह सचमुच ही देवी है! हाय कहीं उसको यह पता लग जाय कि मैं यहाँ आता हूँ तो उस बेचारी का क्या हाल होगा! वह बड़ी मेहनती है—एक छोटी-सी दरज़िन की दूकान रखकर बैठी है...उसकी पतली-पतली उङ्गलियाँ सुई से छन गई हैं! कैसी साधु स्त्री है! और मैं महा नीच और बदमाश! मैं उसको छोड़कर इस कटरे में आता हूँ! हाय रे! मैं कैसा अधम हूँ!' इतना कहकर उसने अपने सिर के बाल पकड़कर ज़ोर से खींचे और फिर यारचेन्को का हाथ पकड़कर बोला, 'श्रीमान, इस नीच को अपने पवित्र हाथ चूमने दीजिये क्योंकि आप ही मेरी दशा को समझते हैं। चलिये, मैं आपका भी आज अपनी साधु स्त्री से परिचय कराऊँगा!... वह मेरा इन्तज़ार कर रही होगी...वह बेचारी रोज़ मेरा इन्तज़ार करती है... रात-रात नहीं सोती। मेरे बच्चों के नन्हें-नन्हें हाथ जोड़कर वह उनके साथ मिलकर रोज़ भगवान से प्रार्थना करती है, 'हे भगवान् हमारे पिता की रक्षा करना!'

'तुम झूठ बोलते हो!' शराब के नशे से झूमती हुई नन्ही मनका ने यकायक उसकी तरफ़ घृणा से देखते हुए कहा, 'वह प्रार्थना-व्रार्थना कुछ नहीं कर रही होगी...मज़े से किसी आदमी को लिए पलंग पर पड़ी सो रही होगी।'

'चुप छिनाल!' ऐक्टर क्रोध से चिल्लाया और एक ख़ाली बोतल अपने सिर के ऊपर उठाकर कहने लगा, 'कोई मुझे पकड़ लो नहीं तो इस कुतिया का सिर मैं अभी भुरकुस कर डालूँगा। अपनी गन्दी ज़बान से तू मेरी सती...'

'मेरी ज़बान गन्दी नहीं है। मैं रोज़ प्रार्थना करती हूँ,' स्त्री ने बड़ी गुस्ताख़ी से उत्तर दिया, 'मगर तुम निरे काठ के उल्लू हो...उल्लुओं के सिर मे सींग थोड़े ही होते हैं! तुम तो रोज़ आकर वेश्याओं के साथ मज़ा करते हो और स्त्री से आशा रखते हो कि वह पतिव्रता और साध्वी रहे! कम्बख़्त कहीं का! और बच्चों को भी बीच में घुसेड़ता है! अभागा बाप! मुझ पर आँखें निकालकर यों दाँत मत पीस। मैं तुझसे डरनेवाली नहीं हूँ! जा अपनी छिनालों के पास।'

यारचेन्को ने बड़ी मुश्किल से, बहुत समझा-बुझाकर, ऐक्टर और नन्ही मनका

को शान्त किया। वे दोनो ही शराब का नशा हो जाने पर एक दूसरे से हमेशा झगड़ उठते थे। ऐक्टर आखिर मे बूढ़ों की तरह नाक साफ़ करता हुआ फूट-फूटकर रोने लगा। उसके शरीर से तमाम ताक़त निकल चुकी थी, अस्तु हेनरीटा उसको उठाकर अपने कमरे मे ले गई।

सभी को थकान हो रही थी। विद्यार्थी एक-एक करके अपने-अपने कमरों से लौट आये थे; और उनसे पृथक, लापरवाही से चलती हुई, उनकी क्षणिक प्रेमिकायें भी लौट आई थी। सचमुच यह लोग उन मक्खे और मक्खियों की तरह दीख रहे थे जो खिडकियों के शीशों पर से मानो अभी एक दूसरे से अलग हो-होकर आये हों। सब-के-सब जँभाइयाँ लेते हुए अँगड़ा रहे थे। रात-भर जगने के कारण उनके पीले, चेहरों से थकान और उदासी टपक रही थी। जब वे एक दूसरे को सलाम करके एक दूसरे से जुदा हो-होकर जाने लगे तो उन सबकी आँखों में एक दूसरे के प्रति एक ऐसी घृणा थी जैसी कि किसी गन्दे काम में एक साथ भाग लेनेवालों को आँखो में हुआ करती है।

'यहाँ से अब आप कहाँ जायेंगे?' लिखोनिन ने प्लेटोनॉव से धीरे से पूछा।

'मुझे ख़ुद कुछ पता नहीं है। मैं जाकर इसाय की कोठरी में सोना चाहता था। मगर इतनी सुहावनी ऊषा को नीद मे बिता देने को जी नही होता। मैं जाकर स्नान करूँगा और फिर जहाज़ पर चढ़कर नदी के उस पार चला जाऊँगा। वहा एक विहार में एक साधु से मुझे मिलना है। उससे मुझे कुछ बातें करना है। मगर आपने यह प्रश्न मुझसे क्यों पूछा? कृपया आप कुछ देर और यही ठहरिये। मुझे अभी आपसे एक बडी जरूरी बात कहनी है।'

'बहुत अच्छा।'

सबसे आख़िर में यारचेन्को गया। उसने कहा, 'मैं बहुत थक गया हूँ। मेरा सिर बड़ा ही दुख रहा है।' मगर जैसे ही वह कमरे से निकलकर द्वार के बाहर हुआ वैसे ही प्लेटोनॉव ने लिखोनिन का हाथ पकड़ा और उसे जल्दी-जल्दी घसीटता हुआ खिड़की के पास ले गया।

'देखो!' उसने गली की तरफ उङ्गली से इशारा करते हुए लिखोनिन से कहा।

लिखोनिन ने खिड़की के नारङ्गी रङ्ग के शीशे में से देखा। यारचेन्को ट्रेपेल की पेढ़ी का दर्वाजा खटखटा रहा था। क्षणभर में द्वार खुला और यारचेन्को उसमें गायब हो गया। 'तुमने कैसे ताड़ लिया कि वह वहाँ जायगा?' लिखोनिन ने बड़े आश्चर्य से प्लेटोनॉव से पूछा।

'बड़ी मामूली-सी बात है ! मैं उसका चेहरा देखते ही समझ गया था। अपने हाथों से वह बेरका की पोशाक भी सहला रहा था। दूसरे लोग आपे से बाहर हो गये थे। मगर यह ज़रा शर्मीला है।'

'अच्छा, अब हम लोग भी यहाँ से चलें,' लिखोनिन बोला, 'आपको भी बहुत देर हो रही है।'

तेरहवाँ अध्याय

छोकरियों मे से सिर्फ दो ही कमरे में रह गई थीं ; एक तो जेनी जो अपनी सोने की पोशाक पहन आई थी और दूसरी लियूबा जो बातचीत की आड़ में गठरी बन-कर एक कुर्सी में सो गई थी। लियूबा का जवान व चितकबरा चेहरा बच्चों की तरह कोमल दीख रहा था। उसके पतले-पतले होंठ थोड़े खुले हुए थे और उसके चेहरे पर एक सुन्दर और शान्त मुस्कान झलक रही थी। कमरा सिगरेटों के धुँए से घुट गया था—धुँए के काले-काले छोटे-छोटे बादल कन्दील की बत्तियों को ढाँकते हुए उड़ रहे थे। मेज़ पर कहवा और शराब के प्याले और नारङ्गियों के छिलके बिखरे पड़े थे। दृश्य बुरा लग रहा था। जेनी अपने पाँव दीवान पर रक्खे हुए बैठी थी और अपने घुटने हाथों से पकड़े थी। प्लेटोनॉव को उसकी आँखों में, जो क्रोध से नीचे को झुकी लगती थीं, फिर वही क्रोधाग्नि दिखाई दी जिसे देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

'मैं क़न्दील बुझा दूँ?' लिखोनिन ने पूछा। ऊषा काल का अर्ध प्रकाश ठंढा और ऊँघता हुआ खिड़कियों और दर्वाजों के परदों में से धीरे-धीरे अन्दर आने लगा था। क़न्दील की बुझ जानेवाली मोमबत्तियों में से धुँए की लकीरें निकल रही थीं। धुँए के काले और नीले बादल कमरे में घूम रहे थे। मगर खिड़की में दिल की शक्ल के एक झरोखे में से सूर्य की एक किरण ने अपनी बाँकी, हँसती हुई, धूल के कणों की सुनहरी तलवार कमरे के अन्दर घुसेड़कर दीवार पर लगे हुए काग़ज़ों पर सोना बिखेर दिया था।

'अब ठीक है,' लिखोनिन ने क़न्दील बुझाकर बैठते हुए कहा, 'बात तो थोड़ी ही सी है, मगर...समझ में नहीं आता कि उसे शुरू कैसे करूँ।'

यह कहकर वह जेनी की तरफ़ चुपचाप देखने लगा।

'तो मै जाऊँ ?' जेनी ने लापरवाही से उससे पूछा।

'नहीं, ज़रा बैठो,' प्लेटोनॉव ने लिखोनिन की तरफ से उत्तर देते हुए कहा। 'इनके यहाँ रहने से कोई हर्ज नहीं है, फिर उसने लिखोनिन की तरफ घूमकर मुस्कराते हुए कहा, 'आप वेश्यावृत्ति के बारे में ही तो कुछ कहना चाहते हैं ? क्यों ?'

'हाँ, कुछ उसी के बारे में है...'

'अच्छा, तो कहिये। जेनी की बातें भी ग़ौर से सुनियेगा। यह आम तौर पर बड़े अविश्वास की बातें करती हैं—मगर कभी-कभी बड़े मार्के की बातें कह जाती हैं।'

लिखोनिन ज़ोर से अपना चेहरा मलने और कनपटियाँ सहलाने लगा। फिर उसने अपनी उङ्गलियाँ टेढ़ी करके चटखाईं। स्पष्ट था कि जो कुछ वह कहना चाहता था उसे कहने में वह बडा हिचकता था।

'ख़ैर, कुछ हर्ज नहीं।' उसने यकायक क्रोध में भरते हुए ज़ोर से कहा, 'आपने आज इन स्त्रियों के बारे मे जो कुछ भी कहा मैंने सुना। सच तो यह है कि आपने मुझसे कोई नई या ऐसी बात नही की जो मैं नही जानता था। मगर फिर भी आश्चर्य की बात यह है कि मैंने अपने व्यभिचारी जीवन में इस समस्या को आज पहली ही बार आँखें खोलकर देखने की कोशिश की है...मैं तुमसे अब यह पूछना चाहता हूँ कि आख़िर यह वेश्यावृत्ति होती क्यों है ? यह बड़े-बड़े शहरों का असंयमित सन्निपात है अथवा यह एक पुरातन ऐतिहासिक संस्था है ? क्या यह कभी बन्द होगी ? अथवा इसका अन्त भी प्रलय के साथ ही होगा ? मैं इस प्रश्न का किसी से उत्तर चाहता हूँ।'

प्लेटोनॉव अपनी आदत के अनुसार भौंहें सिकोड़कर लिखोनिन के चेहरे को ग़ौर से देखने लगा। वह यह जानने का प्रयत्न करने लगा कि लिखोनिन के मन में ऐसी सच्ची वेदना किस विचार से उठ रही थी।

'यह तो तुम्हें कोई न बता सकेगा कि वेश्यावृत्ति कब बन्द होगी। शायद जब समाजवादियों और अराजकतावादियों के सुन्दर स्वप्न पूरे हों जब दुनिया सबकी हो और किसी एक की न हो, जब प्रेम सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर सिर्फ अपने ही बन्धनों में रहे, जब सारा संसार मिलकर एक कुटुम्ब की तरह हो जाय, जब मेरा और तेरा का भेदभाव नष्ट हो जाय, जब संसार स्वर्ग हो जाय मानव और फिर

आदम और हव्वा की तरह नग्न, शानदार और बेगुनाह हो जावे तब शायद वेश्या-वृत्ति भी बन्द हो जावे...'

'मगर अब ? इस समय ?' लिखोनिन ने और भी आवेश मे भरते हुए पूछा, 'हम योंही हाथ पर हाथ धरे इसे देखा करें ? हम इसके लिए कुछ नहीं कर सकते ? इसको एक अटल बीमारी समझकर योंही छोड़ दें ? इसको चुपचाप सहन करें, इसका अपराध माथे पर न लें और इसको अपना आशीर्वाद दें ?'

'इस बीमारी से बचा तो जा सकता है पर इसको बन्द कर देना असम्भव है। मगर तुम्हारे लिए तो दोनों ही बातें एक-सी हैं?' प्लेटोनॉव ने शान्तिपूर्ण आश्चर्य से पूछा, 'क्योंकि तुम तो चार्वाकी और अराजकतावादी हो ! क्यों ?'

'ख़ाक अराजकतावादी हूँ मैं ! हाँ, हूँ तो मैं अराजकतावादी अवश्य क्योंकि जब बुद्धि से जीवन को समझने की कोशिश करता हूँ तब मैं इसी नतीजे पर पहुँचता हूँ कि संसार के आदि में अराजकता थी और मैं अपनी बुद्धि से सोचता हूँ : आदमी आदमी को मारते, सताते और लूटते हैं तो उन्हे मारने, सताने और लूटने का एक दिन बदला ज़रूर मिल जायगा ! बच्चों को बर्बाद करते हैं तो करने दो, रचनात्मक विचारों को नष्ट करते हैं तो करने दो, गुलामी होती है तो होने दो, चोरी डकैती और ख़ूँरेज़ी होती है तो होने दो !......! जितना पापों का घड़ा भरता है भरने दो क्योंकि उससे संसार का प्रलय निकट आता है। मैं मानता हूं कि निर्जीव और जीवों के लिए प्रकृति में एक ही अमिट कानून है—प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया भी उतनी ही शक्तिशाली होती है। अस्तु संसार के पापों का घड़ा जितनी ही जल्द भर जाय उतना ही अच्छा है। मनुष्य जीवन में बुराई बढ़ती है तो उसे मवाद की तरह बढ़ने दो और उसको बढ़ते-बढ़ते दुनिया की बराबर का एक फोड़ा हो जाने दो। क्योंकि फिर वह एक दिन फूटेगा... और उसके मवाद में दुनिया बह उठेगी ! मनुष्य समाज या तो उसमें डूबकर मर जायगा या बीमारी से बचकर फिर नया और सुन्दर जीवन प्राप्त करेगा।'

लिखोनिन ने जल्दी-जल्दी एक प्याला ठण्डी काली काफ़ी गट-गट हलक़ से उतारी और फिर आवेश से कहना शुरू किया।

'हाँ, इस तरह मैं और बहुत से दूसरे मेरी तरह अपने कमरों में बैठे-बैठे, चाय पीते हुए और मिठाइयाँ खाते हुए सोचते हैं—व्यक्ति का मूल्य संसार की प्रगति में कुछ नहीं है ! मगर जब मेरे सामने कोई बच्चे को मारता है तो मेरे चेहरे पर फ़ौरन खून उतर आता है और जब मै किसी किसान या मज़दूर को मेहनत करते

देखता हूँ तो अपने हवाई कुलाबों पर मुझे शर्म आने लगती है! हमारे जीवन में भी कोई एक बड़ी विचित्र, बुद्धिहीन वस्तु रहती है जो बुद्धि से भी सौ गुनी शक्तिशाली होती है। आज ही देखो...इस वक्त...मुझे ऐसा लग रहा है मानो मैंने किसी सोये हुए आदमी की गाँठ कतरली है अथवा किसी तीन बरस के बच्चे को ठग लिया है अथवा किसी ऐसे निस्सहाय को मारा है जिसके हाथ पाँव बँधे थे। न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं ही वेश्यावृत्ति के लिए दोषी हूँ—अपनी चुप्पी, अपनी लापरवाही और अपनी एक तरह से रज़ामन्दी के कारण मैं ही उसके लिए दोषी हूँ! क्या करूँ मैं, प्लेटोनॉव!' विद्यार्थी ने बड़े दुःख से कहा।

प्लेटोनॉव चुपचाप उसकी तरफ अपनी आँखें मिचकाता हुआ देखने लगा। मगर जेनी ने अचानक उससे तीक्ष्ण स्वर में कहा :

'तुम भी वही करो जो एक अंग्रेज़ औरत ने यहाँ आकर किया था...एक बार एक लाल-लाल बालों की अंग्रेज़ औरत यहाँ आई थी। वह जरूर कोई बड़ी औरत होगी, क्योंकि उसके साथ बहुत-से सरकारी अफसर और आदमी थे। उसके आने के पहले ही डिप्टी साहब के साथ-साथ थानेदार आकर हम लोगों को समझा गया था कि, 'देखो किसी ने कोई बदतमीज़ी उस स्त्री से की या कोई बुरा शब्द मुँह से निकाला तो तुम्हारे घरों की मैं ईंट-से-ईंट बजवाकर छोड़ूँगा और हर छिनाल को थाने में बुलवा-बुलवाकर इतने कोड़े लगाऊँगा कि शरीर की खाल उतर जायगी और जेल में डाल-डालकर सबको सड़ा डालूँगा। वह स्त्री आकर बड़ी देर तक विदेशी भाषा में, आकाश की तरफ़ उङ्गली उठाती हुई, हमसे कहती रही और अन्त में पाँच-पाँच आनेवाली एक बाईबिल हम सबको देकर चली गई। तुमको भी, मेरे प्यारे, ऐसा ही करना चाहिये।'

प्लेटोनॉव उसकी इस बात पर खिलखिलाकर हँस पड़ा। मगर फिर जब उसने लिखोनिन के भोले और दुखी चेहरे की तरफ देखा जो कि इस मज़ाक को समझा भी नहीं था, तो उसने अपनी हँसी रोककर गम्भीरता से कहा :

'तुम क्या कर सकते हो, लिखोनिन? जब तक जायदाद क़ायम है दुनिया में ग़रीबी रहेगी और जब तक विवाह की संस्था दुनिया मे क़ायम है तब तक वेश्यावृत्ति रहेगी। जानते हो कौन वेश्यावृत्ति के सबसे बड़े हामी हैं? भले मानस और शरीफ़ कहलानेवाले सदगृहस्थ, पूज्य पिता, पति और भ्राता कहलानेवाले महाशयगण! वह कोई न कोई बहाना ढूँढकर इस व्यवसाय को क़ायम रखने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि उन्हें भय लगता है कि वे ऐसा न करेंगे तो यह बीमारी प्लेग की

तरह उनके पवित्र घरों में, उनके सोने के कमरों में घुस आवेगी। वेश्यावृत्ति का व्यवसाय उनके पवित्र घरों की व समाज को व्यभिचारवृत्ति से रक्षा करता है जिसको कि वे समाज का एक ज़रूरी अङ्ग मानते हैं, क्योंकि स्वयं पूज्य पिताजी, पतिदेव और भ्राताजी भी तो मौक़ा मिलने पर छिपे-चोरी प्रेम से नहीं चूकते हैं। सच तो यह है कि उसी स्त्री से बार-बार विषय-भोग करना अच्छा नहीं लगता चाहे वह अपनी पत्नी हो या नौकरानी या पड़ोसिन। वास्तव में मनुष्य बहु-स्त्री-गामी जीव है। अस्तु मुर्ग़ों की तरह अन्ना या ट्रेपेल के बग़ीचे अपनी प्रेमक्रीड़ा के लिए उसे हमेशा आकर्षक लगेंगे। हाँ, समझदार गृहस्थ जो आधी दर्जन बड़ी-बड़ी लडकियों के भाग्यवान पिता हैं, अवश्य वेश्यावृत्ति के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलन्द करेंगे। यहाँ तक कि वेश्याओं को इस कुकर्म से हटाने के लिए कोई आश्रम बनेगा तो उसके सहायकों में नाम लिखाकर उसके लिए चंदा भी देंगे, मगर इस व्यवसाय को ही बन्द करने की बात उठेगी तो कन्नी काट जायँगे।'

'वेश्याओं को सुधारने के लिए आश्रम!' जेनी ने घृणा की हँसी हँसते हुए मुँह चिढ़ाकर दुहराया।

'हाँ, मैं जानता हूँ इन तरीक़ों से कुछ नहीं हो सकता', लिखोनिन ने बात काटते हुए कहा, 'मगर मुझपर आप चाहे हँसें ही फिर भी मैं आग लगने पर चुपचाप बैठा-बैठा उस आदमी की तरह यह नहीं कहता रहना चाहता कि, 'अरे आग लग रही...हाय आग लग रही है, शायद उसमें आदमी भी जल रहे हैं...हे ईश्वर!' मगर ख़ुद उठता और आग बुझाने के लिए हाथ हिलाता नहीं।'

'अच्छा तो क्या आप कान की पिचकारी लेकर आग बुझाने दौड़ेंगे?'

'नहीं!' जोश से लिखोनिन ने कहा, '...क्यों नहीं, शायद मैं उसकी मदद से एक बच्चे को ही बचा लूँ? यही बात तो मैं तुमसे पूछना भी चाहता था, प्लेटोनॉव कृपया मेरी हँसी न उड़ाकर मुझे ठीक-ठीक बताओ...'

'तुम यहाँ से किसी एक छोकरी को ले जाकर उसे बचाना चाहते हो? क्यों?' प्लेटोनॉव ने उसके चेहरे की तरफ़ ध्यान से घूरते हुए पूछा। उसकी समझ में लिखोनिन की सारी बातों का मतलब आ गया।

'हाँ...शायद...मैं कोशिश करूँगा...' लिखोनिन ने अनिश्चित स्वर में कहा।

'वह फिर यहीं लौट आवेगी', प्लेटोनॉव ने कहा।

'जरूर लौट आवेगी,' जेनी ने दृढ़ विश्वास से कहा। लिखोनिन उठकर जेनी के पास गया और उसके दोनों हाथ पकड़कर काँपते हुए स्वर में धीमे से बोला,

'जेनेच्का...शायद...तुम...मेरे साथ आ जाओ ? मैं तुमसे अपनी स्त्री की तरह नहीं कहता, मित्र की तरह कहता हूँ। सहल-सी बात है...छः महीने आराम के बाद फिर हम लोग किसी अच्छे व्यवसाय मे लग जायँगे...हम दोनों पढ़ा करेंगे...'

जेनी ने नाराज़ी से उसके हाथों में से अपने हाथ खींच लिये।

'मैं तुम्हारी दलदल में फँसू !' वह चिल्लाकर बोली, 'मै तुम्हे अच्छी तरह पहचानती हूँ ! मैं तुम्हारे लिए मोजे बुनूँगी ? मै तुम्हारे लिए चूल्हे पर बैठकर रसोई तैयार करूँगी ? मैं तुम्हारी रातभर बैठी बाट देखूँगी और तुम अपने दोस्तों के साथ बैठे-बैठे गप्प लड़ाओगे ? और जब तुम डाक्टर या वकील हो जाओगे तब तो लात मारकर मुझे घर में से निकाल दोगे और कहोगे, 'जा निकल छिनाल यहाँ से ! तूने मेरी जवानी गारत कर डाली ! मैं किसी भले घर की शरीफ लड़की से शादी करना चाहता हूँ !'

'मैं तुमसे भाई की तरह अपने साथ चलने को कहता हूँ...मेरा यह मतलब नहीं था कि...' लिखोनिन ने परेशानी से बडबड़ाते हुए कहा।

'मैं ऐसे भाइयों को खूब पहिचानती हूँ। पहिली रात तक के ही भाई... छोड़ो, ऐसी मूर्खता की बातें मुझसे मत करो ! ऐसी बातें सुनते-सुनते मैं थक गई हूँ !'

'देखो, लिखोनिन !' प्लेटोनॉव ने गम्भीरता से कहा, 'ऐसा करके तुम अपने सिर व्यर्थ का बोझ मोल लोगे। मै ऐसे आदर्शवादी अच्छे घरों के नौजवानों को जानता हूँ जिन्होंने जोश में आकर अपने सिद्धान्तों के कारण गॉव की किसान छोकरियों से विवाह किये, क्योंकि वे उनको काली मिट्टी की तरह प्राकृतिक शक्ति से भरपूर मानते थे। मगर यह प्राकृतिक शक्ति से भरपूर काली मिट्टियॉ बाद में ऐसी बेकार स्त्रियॉ निकलीं जो दिनभर पलँग पर पड़ी-पड़ी बिस्कुट खाती थी और उङ्गलियों में सस्ती अँगूठियॉ पहिन-पहिनकर दिनभर उङ्गलियाँ फैला-फैलाकर देखती थीं, अथवा रसोई में बैठकर नौकरों से गप्पें लड़ाती थीं, शराब पीती थीं और साइसों से प्रेम करती थीं !'

तीनो चुप हो गये। लिखोनिन रूमाल से अपने माथे का पसीना पोछने लगा।

'नहीं, नहीं !' वह फिर यकायक ज़िद् से चिल्लाकर बोला, 'मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं होता ! मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करने को तैयार नही हूँ ! लियूबा !' उसने सोती हुई छोकरी को बुलाया, 'लियूबोच्का !'

लड़की ने जगकर अपने होंठ हथेली से पोंछते हुए जँभाई ली और बच्चो की

तरह मुस्कराती बोली, 'मैं सो नहीं रही थी। मैं सब सुन रही थी। ज़रा-सी अभी आँख लग गई थी।'

'लियूबा, तुम यहाँ से चलकर मेरे साथ रहोगी?' लिखोनिन ने लियूबा के हाथ पकड़ते हुए पूछा, 'हमेशा के लिए यहाँ से निकल चलो और फिर मेरे पास से कभी लौटकर न आना!'

लियूबा ने परेशानी से जेनी की तरफ़ देखा मानो वह उससे इस मज़ाक का मतलब पूछ रही हो।

'यह अच्छी रही,' फिर उसने चालाकी से कहा, 'आप ख़ुद तो अभी विद्यार्थी हैं...मुझे ले जाकर कहाँ बसायेंगे?'

'मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ लियूबा! यहाँ रहना तुम्हें अच्छा नहीं लगता होगा!'

'हाँ, यहाँ रहना तो मुझे अच्छा नहीं लगता क्योंकि न तो मैं जेनी की तरह आत्माभिमानी ही हूँ और न पाशा की तरह खूबसूरत...और न मैं कभी यहाँ की ज़िन्दगी की आदी ही हो पाऊँगी...'

'अच्छा तो फिर चलो यहाँ से चल दें...!' लिखोनिन ने उससे प्रार्थना करते हुए कहा, 'तुम्हें कोई न कोई काम करना तो आता ही होगा...कुछ नहीं तो सिलाई और क़सीदा तो कर ही लोगी?'

'मुझे कुछ नहीं आता!' लियूबा ने शर्माकर कहा और फिर हँसने लगी। फिर लज्जा से उसका मुँह लाल हो गया और वह अपने मुँह पर हाथ रखती हुई कहने लगी, 'गाँव में जो कुछ हमें सिखाया जाता है उतना ही मैं जानती हूँ...उससे ज़्यादा कुछ नहीं आता। थोड़ा-बहुत पका सकती हूँ...मैं एक पादरी के यहाँ खाना पकाया करती थी।'

'ठीक है तब! यह बड़ा अच्छा है!' लिखोनिन ने खुश होते हुए कहा, 'मैं तुम्हारी मदद करूँगा। तुम एक ढाबा खोल लेना...समझी। मैं बहुत से खानेवाले तुम्हारे यहाँ ले आया करूँगा। बहुत-से विद्यार्थी मेरे साथ वहाँ आजाया करेंगे! यह बड़ा अच्छा होगा!'

'ख़ैर, अब ज़्यादा आप मेरा मज़ाक न बनाइये!' लियूबा ने कुछ चिढ़कर कहा और फिर आश्चर्यपूर्वक प्रश्न-सूचक दृष्टि से जेनी की तरफ़ देखा।

'नहीं, वह तुम्हारी मज़ाक नहीं उड़ा रहे हैं', जेनी ने एक विचित्र प्रकार की काँपती हुई आवाज़ में कहा, 'वह सचमुच तुम्हें यहाँ से ले जाना चाहते हैं।'

'मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं बिल्कुल गम्भीरता से कह रहा हूँ। ईश्वर की क़सम सच कहता हूँ।' विद्यार्थी ने स्नेह से उसे पकड़कर कहा और न जाने क्यों फिर खाली कोने की तरफ़ हवा में क्रॉस का चिन्ह बनाया।

'सचमुच' जेनी बोली, 'तुम लियूबा को ले जाओ क्योंकि वह ऐसा नही है जैसा मेरा ले जाना। मैं यहाँ रहती-रहती पुरानी होकर यहाँ की आदी हो गई हूँ। मुझे तुम अब नहीं बदल सकोगे। मगर लियूबा सीधी स्वभाव की छोकरी है। वह यहाँ के जीवन की अभी तक आदी भी नहीं हुई है। मेरी तरफ इस तरह आँखें निकाल-निकाल कर क्यों देखती है? तुझसे जो पूछा जाता है उसका उत्तर दे! जाना चाहती है? बोल?'

'क्यों नहीं, अगर यह मजाक नहीं करते हैं और मुझे सचमुच लेजाना चाहते हैं—क्यों सच कहते हो? और जेनेच्का तुम्हारी क्या राय है, मैं जाऊँ?...'

'कैसी मूर्ख है!' जेनी ने नाराजी दिखाते हुए कहा, 'क्या अच्छा है—यहाँ इस नर्क में रहकर अपनी नाक सड़वाना और कुत्तों की मौत मरना? या ईमानदारी से घर-गृहस्थी का जीवन बिताना? मूर्ख कहीं की। इनके हाथ चूम और जा...'

भोली लियूबा ने सचमुच लिखोनिन के हाथ चूमने को अपने होंठ बढ़ाये जिस पर सब हँसने लगे। मगर साथ ही सबके हृदय पर चोट भी लगी।

'बड़ा अच्छा है! यह तो जादू-सा हो गया,' खुशी से लिखोनिन ने कहा, 'जाओ, अभी मालकिन से कहो कि तुम चकला छोड़कर मेरे साथ जा रही हो। जो चीजें बहुत ही जरूरी हों सिर्फ वही अपने साथ ले चलना। अब वह पुरानी बात नहीं रही है और जब कोई छोकरी चाहे फौरन चकला छोड़कर जा सकती है। उसे कोई रोक नहीं सकता!'

'नहीं, ऐसे ठीक न होगा,' जेनी ने उसे रोककर कहा, 'वह इस तरह जा सकती है, मगर इस तरह बड़ा शोर और बखेड़ा होगा। जैसा मैं कहती हूँ वैसा तुम करो। दस रुपया खर्च करना तुम्हें बुरा तो न लगेगा?'

'नहीं, नहीं, बोलो क्या करना है?'

'लियूबा को मालकिन के पास जाकर कहना चाहिये कि तुम उसे रात भर के लिए अपने यहाँ ले जाना चाहते हो। उसके लिए तुम्हें मालकिन को दस रुपये देने होंगे, वह तुम भेज दो। उसके बाद कल आकर फिर अपना टिकट और चीज़ें भी ले जाना। तब तक हम सब मामला ठीक कर रक्खेंगे और किसी शोरो-गुल की नौबत न आयगी। कल यहाँ से लियूबा को लेकर तुम सीधे

थाने में जाना और वहाँ जाकर इससे यह ऐलान करा देना कि इसने यह पेशा छोड़कर तुम्हारे यहाँ खिदमतगारी कर ली है और इसका वेश्यावृत्ति का टिकट पुलिस को लौटाकर इसका पासपोर्ट वापिस ले लेना। लियूबा, लो फौरन दस रुपये इनसे और दौड़ो मालकिन के पास और जितनी जल्दी हो ख़ालाजान के पास से भाग आना, वरना वह कुतिया तुम्हारे चेहरे से सब समझ जायगी और देखो अपने मुँह से रँग भी छुड़ाती आना वरना रास्ते भर गाड़ीवान तुम दोनों की तरफ़ उङ्ग-लियाँ उठायेंगे।'

आध घण्टे के बाद लिखोनिन और लियूबा अन्ना के द्वार पर एक गाड़ी में बैठ रहे थे और प्लेटोनॉव और जेनी गाड़ी के पास खड़े उन्हें बिदा कर रहे थे।

'बड़ी भारी मूर्खता कर रहे हो, लिखोनिन,' प्लेटोनॉव ने उदासीनता से कहा, 'लेकिन तुम्हारे हृदय के अच्छे भावों के लिए मैं तुम्हारी इज़्ज़त करता हूँ। तुम्हारे मन मे अच्छा भाव आया और तुमने उसपर फौरन ही अमल भी शुरू कर दिया! तुम बड़े बहादुर और अच्छे आदमी हो!'

'बधाई है आपकी शुरूआत पर!' जेनी ने हँसते हुए कहा, 'देखो, मुझे भूल न जाना! दशठौन पर मिठाई मुझे ज़रूर भेजना।'

'उसके लिए तुम्हे सदा इन्तज़ार ही करते रहना होगा!' लिखोनिन हँसकर अपनी टोपी उसकी तरफ़ हिलाते हुए बोला।

दोनों गाड़ी में बैठकर चले गये। प्लेटोनॉव ने जेनी की तरफ़ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। जेनी की आँखों में आँसू भर रहे थे।

'ईश्वर करे सुखी हो!' वह धीरे-धीरे बड़बड़ा रही थी।

'आज तुमको हुआ क्या है जेनी?' उसने कोमल स्वर मे पूछा, 'क्या बात है? क्यो इतनी दुःखी हो? क्या मैं कुछ तुम्हारे लिए कर सकता हूँ?'

जेनी ने उसकी तरफ़ से पीठ मोड़ ली और दीवार पर झुककर रुँधी हुई आवाज़ मे पूछा, 'ज़रूरत हो तो मैं तुम्हे किस पते पर लिख सकती हूँ?'

'अख़बार के पते पर! मेरा नाम और मेरे अख़बार का पता! बस यह काफ़ी होगा। जहाँ भी मैं हूँगा तुम्हारा ख़त फौरन मेरे पास भेज दिया जायगा।'

'मैं...मैं...मैं...' जेनी कुछ कहना चाहती थी मगर वह सिसकियों में फूट पड़ी और उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढक लिया। 'मैं...तुम्हें लिखूँगी...'

यह कहकर वह उसी तरह अपना मुँह ढाके हुए जीने पर चढ़कर अपने कमरे मे घुस गई।